12 MSS HINDI

Sangreh: MSS

1401-MS1

1. Ram Rahsia Satyupkhana
by Atma Nand.

2. Prem Pachisee. Ram Dass Patialvi.

3. Darupdi chiter. Ram Dass Patialvi

3. Bhagat-malla " " "

12. Sangrah MSS: 1. Ram Rihasya Satyopakhana by Atma Nand. 2. Prem Pachisi by Ram Dass Patialvi. 3. Daropati Charitar by Ram Dass Patialvi. 4. Bhagat Mala by Ram Dass Patialvi.

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

1401 MSS

294.592
R 165

Rām Hṛdya

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मां का॥ पापे जे डुना द सम लं कोई घुम्मे जे डुन मकांजु
गुदा जे डुन ल बनें ही कोई मिलिआ जे डुन म [illegible]
बोलन जे डु उ या इन कोई चुप्पा जे डुन के जो [illegible] न
सुख रहि ऐसो अजब बिहारी नर का बिस र मां म जे [illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Ms. 1401

Series I

1

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ रामहृदयं ॥ श्रीमहादेवो
वाच ॥ ॐ अथ ते कथयिष्यामि रहस्यमपि दुर्लभं ॥ सीता
राममरुत्सूनुसंवादं मोक्षसाधनं ॥१॥ पुरा रामायणे रामो
रावणं देवकंटकं ॥ हत्वा रणे रणश्लाघी सपुत्रबलवाहनं ॥
सीतया सह सुग्रीवलक्ष्मणाभ्यां समन्वितः ॥ अयोध्या
मगमद्रामो हनुमत्प्रमुखैर्वृतः ॥२॥ अभिषिक्तः परिवृतो
वसिष्ठाद्यैर्महात्मभिः ॥ सिंहासने समासीनः कोटिसूर्य
समप्रभः ॥३॥ दृष्ट्वा तदा हनूमंतं प्रांजलिं पुरतः स्थितं ॥
कृतकार्यं निराकांक्षं ज्ञानापेक्षं महामतिं ॥४॥ रामः सी
तामुवाचेदं ब्रूहि तत्वं हनूमते ॥ निष्कल्मषोयं ज्ञान
स्यपात्रं नो नित्यभक्तिमान् ॥५॥ तथेति जानकी प्राह त

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१

तेरामस्य निरीक्षितं॥ हनूमंतं पुरोदृष्ट्वा सीतालोकविमोह
७ नी॥ सीतोवाच॥ रामं विद्धि परं ब्रह्म सच्चिदानंदमद्वयं॥
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं सत्तामात्रमगोचरं॥ आनंदं
निर्मलं शांतं निर्विकारं निरंजनं॥ सर्वव्यापिनमात्मा
नं स्वप्रकाशमकल्मषं॥ मां विद्धि मूलप्रकृतिं सर्ग
ल्पं स्थित्यंतकारिणीं॥ तस्य सान्निधिमात्रेण सृजामीदमतं
द्रिता॥१॥ तत्सान्निध्यान्मया सृष्टं तस्मिन्नारोप्य
तेबुधैः॥ अयोध्यानगरे जन्म रघुवंशेतिनिर्मले॥१२
विश्वामित्रसहायत्वं मखसंरक्षणं ततः॥ अहल्याशा
पशमनं चापभंगो महेशितुः॥ मत्पाणिग्रहणं पश्चा
द्भार्गवस्य मदक्षयः॥ अयोध्यानगरे वासो मया द्वा

द्यावर्षिकाः ॥१३॥ दंडकारण्यगमनं विराधवध एव
च ॥ मायामारीचहननं मायासीताहृतिस्तथा ॥१४॥
जटायुषो मोक्षलाभः कबंधस्य तथैव च ॥ शबर्या
पूजनं पश्चात्सुग्रीवेण समागमः ॥१५॥ वालिन
श्च वधः पश्चात्सीतान्वेषणमेव च ॥ सेतुबंधश्च ज
लधौ लंकायाश्च निरोधनं ॥१६॥ रावणस्य वधो यु
द्धे सपुत्रस्य दुरात्मनः ॥ विभीषणे राज्यदानं पुष्पके
न मया सह ॥१७॥ अयोध्यागमनं पश्चाद्राज्ये रामाभि
षेचनं ॥ एवमादीनि कर्माणि मयैवाचरितान्यपि ॥१८
आरोपयंति रामेस्मिन्निर्विकारेखिलात्मनि ॥ परब्रह्म

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लि एवमेवं च को नेरजीवलोकस्य मो ॥१९॥ रामो न गच्छति न ति-
ष्ठति नानुशोचत्याकांक्षते त्यजति नो न करोति किं-
चित् आनंदमूर्तिरचलः परेणामहीनो मायागुणाननु-
गतो हि तथा विभाति ॥२०॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ ततो रा-
मः स्वयं प्राह हनुमंतमुपस्थितं ॥ शृणु तत्त्वं प्रवक्ष्यामि ह्या-
त्मानात्मपरात्मनां ॥२१॥ आकाशस्य यथा भेदस्त्रिविधो
दृश्यते महान् ॥ जलाशये महाकाशस्तदवच्छिन्न एव
हि ॥२२॥ प्रतिबिंबाख्यमपरं दृश्यते त्रिविधं नभः ॥ बुद्ध्य-
वच्छिन्नचैतन्यमेकं पूर्णं तथापरं ॥२३॥ आभासस्तु परं बिं-
बभूतमेवं त्रिधा चितिः ॥ साभासबुद्धेः कर्तृत्वमविच्छिन्ने
विकारिणि ॥२४॥ साक्षिण्यारोप्यते भ्रांत्या जीवत्वं च तथाबु-

धीं।।आभासस्तु मृषाबुद्धिरविद्याकार्यमुच्यते।।२५।।अ
विच्छिन्नं तु तद्ब्रह्म विच्छेदस्तु विकल्पिता।।अविच्छिन्नेन पूर्णेन स्प
एकत्वं प्रतिपद्यते।।२६।।तत्त्वमस्यादिवाक्यैश्च साभासस्याहम ६
स्तथा।।ऐक्यज्ञानं यदोत्पन्नं महावाक्येन चात्मनो।।२७।।त
दाविद्या स्वकार्यैश्च नश्यत्येव न संशयः।।एतद्विज्ञाय
मद्भक्तो मद्भावायोपपद्यते।।२८।।मद्भक्तिविमुखानां हि
शास्त्रगर्तेषु मुह्यतां।।न ज्ञानं न च मोक्षं स्यात्तेषां जन्म
शतैरपि।।२९।।इदं रहस्यं हृदयं ममात्मनो मयैव साक्षा
त्कथितं तवानघा।।मद्भक्तिहीनाय शठाय न त्वया दातव्यमैं
न्द्रादपि राज्यतोधिकं।।३०।।श्रीमहादेवोवाच।।एतत्तेभिहितं देवि
श्रीरामहृदयं मया।।अतिगुह्यतमं हृद्यं पवित्रं पापनाशनं।।३१
साक्षाद्रामेण कथितं सर्ववेदांतसंग्रहं।।यः पठेत्सततं भक्त्या

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

समुक्तो नात्र संशयः ॥४३॥ ब्रह्महत्यादिपापानि बहुजन्मार्जि-
तान्यपि ॥ नश्यंत्येव न संदेहो रामस्य वचनं यथा ॥ जाति-
भ्रष्टोऽतिपापी परधनपरदारेषु नितोद्यतो वा ॥ स्तेयी ब्रह्म-
घ्नमातापितृवधनिरतो योगिवृंदापकारी ॥४४॥ यः संपू-
ज्याभिरामं पठति च हृदयं रामचंद्रस्य भक्त्या ॥ योगींद्रैरप्यल-
भ्यं पदमभिलभते सर्वदेवैः सपूज्यः ॥४५॥ इति श्रीब्रह्मां-
डपुराणे उत्तरकांडे श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर-
संवादे श्रीरामहृदयस्तोत्रं पंचमोऽध्यायः समाप्तः ॥ राम

सवैया॥ इह सभ जानो साधके लछना॥ कोइक निंद
तिकोइक बंदत कोइक ध्यान के देत हैं भछना॥ कोइक
तिलक चढावत चंदन कोइक डारत हार ननछना॥ कोइ
कहैं इह है [illegible]रष कोइक कहैं इह आह बिचछना॥ सुंद
रकाहू सों रागुन है द्वेष सो इह सभ जानहु साधु के लछना॥
जास हृदे महि ब्रह्म प्रकासन तासरूप रहे नहीं छानो
नैन न वैन न नैसन नैन मैं अरु उठत बैठत है अलसानो॥
जो कछु भछ करे सो तिकारन की सही [illegible] घस के जो अघानो॥
सुंदर ब्रह्म प्रसिद्ध प्रकासत धान न कोरवि तु पालति जानो॥ २
अथ असगंध लोया सजीन लकुंदर गंद इकोजैन नै अछा हि पो
सांठे लावणे लालु फिंम सरीर कौ विकार की दूर होइ॥ १॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Commentary	
Scriber	
Script	
Script I	

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ सारस्वती मयादृष्टा वीणापुस्तकधारिणी हंस
वाहनसमायुक्ता विद्यादानकरोमम ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं
वाग्वादिन्यै नमः वद वद वाग्वादनी सरस्वती ममजिह्वा
ग्रे स्थिर तर तर विद्याप्रसादं कुरु कुरु स्वाहा इति मंत्रजपेन्नि
त्यश्रद्धाभक्तिसमन्वितः मूढोवैभवते विद्वान् सारस्वत्या
प्रसादतः ॥२॥ प्रथमे भारती नाम द्वितीये च सरस्वती ॥ तृ
तीये सारदा देवी चतुर्थे हंसवाहनी ॥३॥ पंचमे जगतिख्या
ता षष्ठे वागीश्वरी तथा ॥ सप्तमे कौमारी प्रोक्ता अष्टमे वरदा
यनी ॥४॥ नवमे बुद्धिदात्री च दशमे ब्रह्मचारिणी ॥ एकादशे
चंडघंटा द्वादशे भुवनेश्वरी ॥५॥ एतानि द्वादश नामानि प्रातरु
त्थाय यः पठेन्नामरूपी वै जायते विद्वान् सरस्वत्याप्रसादतः ॥६॥ सरस्वती
स्तोत्रं समाप्तम्

सुनोयोरेखजमाजसोवरे स्रागरवगरमोराअंबराऊरकी

प्रभुजीमोरीलाजनेकी॥रु रिजीलाजनेकी॥रेक॥जबकैसोने
बाजीलाई॥चीरलाइनिकी आषसुलाई॥दरीधरनपैला
टो॥प्रभुजी॥१॥जबकैरवानेंबाजीलाई॥बांदीकरफेआनतलाई
क्षकसुनावोतोकों॥२॥क्ककमुनीजबसांवरआए॥कईकोटवरके
कौंठ्र लाये॥सूरदासप्रभुतोरेभरोसो॥तुमबिनकौडोवेमाकों॥३॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Series II

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामचंद्राय नमः
॥ अथ रामस्तोपाख्यान उत्तरार्थ लिख्यते ॥ दोहरा
सुमन मयंक रघुवर सुजस सुहर नित नपति वेताव
कीरति नित हरि सुरसरि तनय जीव करी ज्यों गाव
॥१॥ अवर जे नीक्र पति मर मिवर विभ्रम स्मिस
मनामा ॥ जा मुख उद्धा चल उदन होगति मव
द्विरणना ॥२॥ गोतुरु गेग गाय शीसीता गो
विंद बर ॥ ए कगकार नवुमजि ससख रकोस
रूपवा ॥३॥ रस नालोच न करण उर तन सुपले
सो पांचा सुनै सुनावे हरि सुजस ज्यों ड्रवेर मो
चाधा हरि से वेधीस वस रुपे लत यारीचारी वेरि

भाषाकार
वाकी ॥
२

१

कैविकहिहरिसेवेधहृतनकबकुंघरोजिनवेषेरि॥
पा॥रामसरोमकहुनामकहुनामनरामकहुनामा॥राम
कहेकहुकौनकौनंहीभइकलानाहि॥तन्मक
रिमनकरिवननकसिकरमशुभाशुभहोइ॥
हरिविचारपेइहशंकरपरयहानगानलागेकोइ॥७
पुनसुनहैताकेनपकाभ्रातानामसिनीताता॥मातु
श्रादिसबहविचारपूछाउमाननेलोगाना॥८॥
श्रयवाहरिहीकोलखोमातपिताशुनभ्राता॥
दा॥पपारामगनिमेतसजनसुहृदविनगाता॥
ष्या॥केरुसिलिबचष्यवनिकरिसनविसिबै
छपासा॥होइश्यानसाक्षातनकरहिनिसिजब

श्रुपासदा॰ ।। अत्र बउताँ ईबर नियेसुनियसं
तुरैकाना ।। सकल तिमिर जो सुनि नसे जिमि रज
नी उदभाना ।।१।। योन कउ वाचा ।। सोपई ।। स
नसत न ऊरषि हुदि अगा कहा ।। श्री रामचरित न व द
सा करु ।। जां केश्र व एमा इते जन की ।। सुनि सेज
न दि से शय जन की ।।२।। सीता किह हि हृश्रम
उतर न्हा ।। सा तान ल दसी हि तजन्हा ।। हि हुन
मे वद कमल सोई ।। सा मे लें उ द वाह त जोई ।। सु
रा ।। श्री सर तउ वाचा ।। सु रमा सीन एकदा सा
मी ।। श्री पति श्री सहसंत न स्वामी ।। परम सुखे

कुंठे बासी ।। परम बद पवरि सेब तन सब छिनासी ।।६।।
जहां बसति प्रभु नित मुकता ।। हरेः पद दव रि
प्रियसे मुक्ता ।। जहि नैमे य सनातन बागमवर
स कुल नरनि कहुं कामद धाम सदा ।।७।। देख
जो विकुंठ परक्रमा करिहै ।। पयु वृतीगाए सह
स बैठ पिरे ।। चतुर भेद के पि कैति है गायन ।।
हरि गुर सरन त्तानि ले पायन आप हरेता ।। प्र
वि लजे नहि भ्रम कारिणी ना ।। प्रभु भुता
नाहि ।। जहि भुता वहि डुंद ना सब रजो तम
का हि ।।८।। बोवडी ।। जहां लक्ष्मी है महारानी

जगतपालनैसमरथमानी॥जहांमसीम
यलसतिमहालया॥तुक्ताप्रामसहिनसोह ।
लया॥७॥पार्वसोभनविनहीनहां॥वि
कसेनादिकहैजहां॥नतातिवपसरजहांम
पारे॥उरवसिंजादिसहस्रमुंगारे॥८॥नि
तसितुराजविराजतजहिं॥नहिंसंतगोध
रबसुरहिं॥केन्यातासमहाप्रभकृपा॥बा
सेनिकानामठविमया॥९॥दीरव॥हरिसो
सोनतत्वलषमीसेगम्हडॅ॥गायननज
पवीणश्रतिनयननभावतिसभा॥१०॥गोप ई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अंकुस

३ करादिहेतुभावसोकहिये॥आदिबीजसिंगारेत्त
हिये॥मानविषेपुण्यसोप्रेम॥रसमाहिकहियस्वेद्रस
ने वेमं॥१२॥पुन्यअनुरागएवविधसहरई॥कुंदनपत्रवक
लिकारहई॥कुसमानीनिमलभोगसहह॥त्रिविधक
टाक्षवरभावियतिह॥१२॥घपामवेतअरूरूपणामवे
नगुन॥नैनकटाक्षभावत्रिविधंगुन॥हासोपीसोवि
विधिप्रकार॥मिथःहासरसनारिभनामा॥१३॥याकी
प्रभातिहनामबरवानियाँ॥अंगिकवाचिकृतिमआ
हारिया॥हासनामइहतीनउचारहि॥सात्विकनामभा
उरसुधारहि॥१४॥दोहरा॥स्तंभस्वेदरोमंचस्वरभंग
वेपथुः जान॥अश्रुपातवैवर्ण्यप[illegible]लापअष्टविधमान

हासमहरसनिउचारिये॥

भ्राघकपोल
उलासपक्षनिय
गोष्टिभिवन्नमहा
नेहहास॥मध्य
मकंराघरवुले
उजास॥आद्यम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रभिनय

न ॥ छपा ॥ चोपई ॥ अग्रे विक्षकनारक किरिया ॥ करत
भई [illegible] चतिरिया ॥ लोचन हाथन गान पद संग ॥ ३ रकी
प्रगट नक्र अभिनय ये चंग ॥ १६ ॥ सो है चारि भांति करतव्यं ॥
[illegible] करतव ताहि विधा कथन व्यं ॥ चित्र वृत्ति अर्प कअंतर
की ॥ वाह्य वस्तु करि कर बाहर की ॥ १७ ॥ इह विध दोइ मे
द कहि दीने ॥ लौकिक धर्म सनातन लीने ॥ नाट्य ध
र्म अपि इहि विधा लहियो ॥ भेद पुरातन जी कहियो ॥
१८ ॥ गवन स्थिर वेषाभरण भ्रमरी ॥ मिधा प्रीति वृष्टि अ
भ्रमरी ॥ चवैग रूपीतिः दशधा कहहीं ॥ प्राण पात्र संख्या
सो बुध जन लहहीं ॥ १९ ॥ दोहरा ॥ अंगो कन्न अभिनय
करत निभाव प्रगट करि दोइ ॥ नृत्य सो ई लक्षित [illegible] अभि

४स॰पा॰

बालमीकि कहि सोइ॥२०॥चौपई॥गात्रविक्षेप मात्र
जो कहई॥ सकल लक्षण जय वर्जित रहई॥ नृत्य सम १
रजस्यु गम बखानी॥ कोमि मिकतांडव नाम पखानी॥२
१॥ आश्रय अंग नृत्य आश्रित लय ताला॥ सुरेखा नाम
नृत्य सुखशीला॥ शिरोनेत्र कर विभ्रमादि कको ग॥ मि
लति कीये सोन अभंगा॥२२॥ स्थिति काय नेत्र म
न हारी॥ रेखा नाम नृत्य दुह सारी॥ हृदय रंजनी
मुद्रा नामा॥ संप्रदाय अनुसार लिकामा॥२३॥ यो
म हेन संच नैरंतर॥ प्रमाण्ये रवयाप्त क्रम देतर॥
नाम नृत्य कहिये जानि वेतरा॥ गुरु शिरवा करि पा
व श्रनंतरा॥२४॥ दोहरा॥ जहां हाय न हिं दृष्टि होइ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उरबषरबसंएरलएता नीनतीनविधएककहेता

जेहोरहषिमनलाइ॥जहामंन्नहोभावेहोइजहांभाव
रसगाइ॥२५॥चौपई॥सारेगामापाधानीया॥स
प्तस्वरानिमानिकउनीया॥तीनग्रामसुरनारस
मेता॥बहुरागनीयतीसगनेता॥२६॥अ्राठअरु
सुतसंगहीगाये॥दासीदासअनेकसुहाये॥एक
विमासहिसनसंगलाये॥उएंचारलेतालमिला
ये॥२७॥लक्षणगीनकहेगीतायका एकडिवठाम्र
रदेऊ॥२८यातीनचारितालोऊ॥पदलफाकताये
रुधमास्या॥क्राडाकसवारीलछुआराघटागीनबु
लइहतालगुधाना॥एकएककेलेकुननानाप्रका
न हिकेगेनसबवधाविया॥अवरयहिहस्तेनपुराटरिय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रस्या॥दोहरा॥ग्रंथकरा हरिभावकहि निरभय पद सें
ना ला॥पुगरकरन हैं नाम मति हकोजनदेन संभाला
३०॥चौपई॥दूक भानवी मानवी दृश्या॥गजल्लीला
तरंगनी चश्या॥हंसी मंजरी खंजरी रीपुना॥सत्रविध
गनइहलीजेगुन॥३१॥लावा हं समय रतु रंगा॥
कुंजन कुरकैर तीनरंग्रं॥ मीनगती जिमन खव
रमानहि॥मूरभांतिकी बुधजनजानहि॥३२॥ड
त्यादिकभेदोकमिनतें॥नोषकरतभईडमरहरिबु
तं॥हावभावकरिजतहिमनोहरा॥वासंनिकुसकी
यननोवरा॥३३॥लाव भाव माकरिजबदेरे॥ बैकुंठे
वासीप्रभुटेरे॥प्रबीलेवरमोमरुमजमोलोनिह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चेमोहूतेअबतोलो॥सर्बलोकधरनाहरिजोइ॥१॥तिह
प्रेरणतेबालासोई॥लजुतभईनतबकछुबोली॥
लषमीमुषकीओरपिबोली॥३५॥दोहरा॥तावाल
उरकीलषीलषमीवाकठचार॥आदरसोंकरिहे
इमतजेबकुसमाअबतारा॥३६॥चौपई॥द्वापरयुगे
मेंलषमणरानी॥आठोमेंहइहैंपररानी॥इहसु
निलषमीपादपुरणसर॥कहिवरवलितबानबरवा
नू॥३७॥वासंतकोवाचा॥हरिप्रियत्रेतायुगमा
ही॥कवनिहोवैमेंकहिकिमनाही॥३८॥एवोभूमि
तामा॥अबताराकामरूपममहोइपुनाहोराराममो
वाचा॥त्रेतायुग॥श्रीरामपतीसमा॥होइहैंएकनारि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

६ स० पा०

गुलाप्राश्री
करसोतोक
डु॥सम
करापरुत
हैसोकहु॥

६

बूतघरमना॥२४॥दो०ह्वा॥इहबूतनामव्वपरहरहि
भतेमैंबुगदावासीनासेंमपाहोइसमतेश्रूभणामुक्ति
भावा॥५॥चौपई॥श्रियासखीनबहोइहैंसोरीमसे
कथावयोकरहिनथोरी॥सकिभायकब्वनाभएहैंता
सवएलदिखलबंधुसमेता॥४॥नासहितनिपजोहिम
माही॥मैंपतिकेसंगनहंसिघाहीं॥इहममपतिसबश्र १
यसंगाया॥सकलपारबदसहतपुमाया॥५२॥को
योध्यापुरीसदनदसरथकें॥सकलघनिरिपुहन
हिभरतसों॥चतुरसहसुविहोइहैंनाम॥सबसुदरस न
धंमसभवाम॥५३॥तनुजातनकमिथुलपुरमाही
महितललनेमैंजगपुगटाही॥पोथीमाकिंउरमिल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

५४

सेगपा॥ जनककौ रसीसुताप्रसंगपा॥ पुन निमोउवी
पंच जन्मकी॥ प्रथम निकीनीच कृष्ट आपनकी॥ कुश
ध्वज नाम जनककरि आना॥ तिह नेउपजि हृद्धव
नितागना॥ ४९॥ दोहरा॥ उत्तम तियेगम सकल जनकि
किय लगन हीजो आना॥ नहि उपजहि सम सकल ही
गुण मादिक अनुरागा॥ ५०॥ चौपई॥ होइहै सम १
मोर घर देहा॥ तिपर विसर तीस हृत मनेहा॥ इह व
चसुन तनइ दशाके रे॥ उरव संतका हरष घनेरो॥ सु २
सुनि इह सब वैकुंठ निवासी॥ मनहार्षी सहकरि हँ
वासी॥ देवलोक परिताये सब ही॥ जन्म लेन मे
ं समान तब ही॥ ५१॥ लक्ष्मी आदि कल घमी की सखी ।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

७स.पा

भई पुगार मिथुला पुरलखीयां ॥ जनन मजानकी कहे
तगाई सुनाई ॥ तेहि उत्र्यप रलखवा वैरहाई ॥ ५८ ॥ इति श्री स
त्यो पाख्याने सतशौनक संवादे पंचाशत्तमो ध्याय
५० ॥ कवि वाक ॥ दोहरा ॥ सूत कहे हि शौनक प्रतीहु से
ध्याय के माहि ॥ जनक करहि त्र्यां भनु तुसी ता उदम
ग्रा वेता हि ॥ १ ॥ सूतो वाच ॥ चौपई ॥ एक समे मिथिलु रराजा न
पुरि ना ॥ मिथुलों भाव सनन महाना ॥ प्रथ मे रथ्या कृतन भा
मन भाऊ ॥ बाल लपंडु ललीये बुलाऊ ॥ २ ॥ न
गनभ्र पति लीये हकारी ॥ ते से जनक ओ विचारी
भ्रसिमग्री रिषी सकल तसी लीन बुलाई ॥ यो फिर फिर
धरीबनाई रनि उठाई ॥ ३ ॥ लोगुलम वा सर्वमय यशो भ ॥

सतानंद दुआगे करि लीनो ॥ उत्तम कृतु का कीनआ
रंभ ॥ सो पेकन कृकदं तिके संभर ॥४॥ दोहरा ॥ माध
व प्रिय वैसाष सुभ महा पुन्य मय मास ॥ सुकुल पक्ष
कुजवार पुष्य नवमी तिथि सुष रास ॥५॥ चौपई ॥ जन
क नरेस्वर पूजन भूमि वरा ॥ काढ़ि गए प्रमना सुमाह क
राह लक्ष्मा करषण करत भये तब ॥ निरषत सब
निगुरु आयसु जब ॥६॥ लांगुल मुर कसत गत जिह
काले ॥ उपजी रमा कन्य का बाले ॥ छिति तल भेदु १
ग्र प्रगटाई ॥ सीता नाम अवनि जो माई ॥७॥ ता पर्दे
सुर दुंदुभि कीनी ॥ हरषे पुष्प वृष्टि करि दीनी ॥ गाय ने
न करत भये गंधर्व ॥ अपसर गण निरतत भयी स

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

८ सभ्पा०

रबुना॥७॥ से बोधनि करि जनक हि बखानी॥ इह बिध
सबै सुर उकत बखानी॥८॥ जनन निज कंन्या कहुं जैसे
पालिय इह बाला कहुं तैसे॥ [illegible]
[illegible] ॥९॥ दोहरा॥
इह कंन्या तै नृपति तुव सब बिध होइ कल्यानी॥ यों
सुरबाणी सु बुध्य करि मुदत भये राजा न॥१०॥ चौ
पई॥ बहुरै मुनि नारद जी आये॥ सिवा बहु करि
नृपति जगाये॥ तब भूपति सो जनक सिआनी॥
कंन्या लई सो कन्निज जानी॥११॥ पुन स्थापनि रानी
कहुं दीनी॥ नामसु नेत्रा हित सों लीनी॥ तासम ली
बिध पालनि कीनी॥ दिन दिन बढ़त भई तन जोनी

॥१२॥ पितु केगुरहि जिम बेद कौमुदी ॥ अनुरूप हि मनहुं नि
त्य प्रौमुदी ॥ उरमिला नाम ताहि ते पाडै ॥ उनपति की
सुने बामाठे ॥१३॥ कुशध्वज की नापतनी सहही ॥ केन्या
ते उभ मताहि मयसी ॥ श्रुतिकीती मांडवी सुनामा ॥ न ।
थाहि सरबेपापति जिह घ्यान ॥ १४ ॥ दोहा ॥ सरबक
ही बसें तिका जनकन्या मानसु गेह ॥ जुनमली यो मु
भगा कहहि सीता सखी सनेह ॥ १५ ॥ चौपई ॥ सरब सि
ङ्कि कही यहि न बनि हु ॥ जनक सदन सो भई प्रसिद्धू ॥
सखी भाव सीता सो राखहि ॥ सकल समे दिन रती की भा
षहि ॥ १६ ॥ ब्रान्हि ते लैकर सिरीपजाई ॥ जनक भवन त न
ते सुनभाई ॥ लोकपाल सम प्रभा सब निकी ॥ भई प्र ।

1

पु.सख्या.

मधनसहतजननकी ॥१७॥ अदिन दिनबढत जानकी
केन्या ॥ अत्रापनि सखी गए निसहस्त्र नया ॥ क्रीडा कर
त परम सुंदर गत ॥ जमादा ने द दायनी रूचि मन ॥१८॥
जानकी वरष वरषनि की भई वैदेही ॥ अतिशय रूप पैं शोभ भ्रा न
लक्ष्मी प न की ॥ जननी और [illegible] पावत ॥ षोडश से
वालन की म तिंजनु लागत ॥१९॥ दोहरा ॥ हाव भाव श्रृंगार सें
नैसे बाढी देह ॥ परिवारी निज सखी सों विचरन गृ
हि वैदेह ॥२०॥ चौपई ॥ जा प्रभु ते अस्त्र विलोकत सी
मी ता ॥ सहज सुभाउ पुरुष तिय बीता ॥ ताके कलिम
ख हूं विविध विहारै ॥ अधिक भगति न बखानि सुधारै ॥२
१॥ कि सम काल मऊ न के हेत ॥ जानसरो वर सखी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

समेता॥ नवहि निहारत सकले लोका॥ निज कं नाहि
म घर मन विलोका॥ ४२॥ कबहूं जात बारि का माही॥ ले
सा मरगी हरज निज माही॥ मात न गला निस हरज न गोरी॥
फिरत संदगति चालन दौरी॥ ४३॥ करत कदाचित
भोजन निज करा॥ पुख्य मनि कावत द्विज अमृ विधरा
बेद तलकना ना जो बाल न ला॥ रमाजा नवहि जग कीया म
ला॥ ४४॥ दोहरा॥ इसी करता हरि मातै तेजगत संपदाए
राजन क सब न पुरारी भव निरचे भव न तिह भरिता॥ ४५
चौपई॥ कबहुं इ कोत सखी गल सा था॥ आवत सीता
मो दत गाना॥ कबहुं बीन मृदंग॥ सुर आदि ककसिबा बजावत
द पुसंग॥ ४६॥ नृत्य करावत ताल निते कवा॥ नत पुरि
होहु पेम पे पतन बा॥ कबहुं माल लेपु सप निकीर चही॥

१५सं०१०

देतदेवतन्हिपावनमसचुही॥२७॥जननिमुनेत्रासीत
हितेउरी॥अस्रमचातुरतानिरषिनयोरी॥पुनअस्त्रदमुत
सीयरूपविलोकी॥बहुरिस्त्रायुधिवधुनामतोकी॥
रघानाविवाहहितकरनभावनी॥किलपतियोभ्राम
सीयभ्रावनी॥सुतोवाचा॥सीरघुउहिनृपविवड
सिभमन केअवसरा॥एकोनेहरिंतनपरिधरह्या॥दोहा॥कहत
भईरानीपतिहिइहकेनामहिपाला॥सीतानामम
हाप्रभावरदीजेबुधसाला॥३०॥चौपई॥इहस्त्रविका
विदेनिजगो रपतीजोजोवहु॥अरपहुतान्हिं[illegible]वहु॥याति
वाहतेसकलअनंदू॥जानीजनपरिवारङकंदू॥३१॥
जनकउवाच॥भोभद्रेमोमननमहुंचाहू॥सीतापरिना
वनिरुभआहा॥भाजापरमरुरूपङरहेहै॥इहजन १

निज मंदर लै गै ती॥ कुसासन दयो बिछाइ तन पालहि
शिव संभार सो पूतन तेकालहि॥ निसि सब पूजे महादेव सो
ताना॥ आइ कही राजा को बाता॥३॥ श्री रुद्र उवाच॥ रा
जे न मन मूर्ख च सुनियै सोई॥ कन्या परि नाव नि को तोई
धनुष मोर जो तुम गह मारौ॥ तव पर्व जे करि ए जतन्य
हौ॥३४॥ दोहरा॥ तुम सब जतन्न करियइह तौल बमें
ज वजोइ॥ अम नै धनु तो लउठाइ कै मंज मनु ताप तिसोइ॥
३५॥ चौपई॥ ऐसा परतज्ञा करि नृप पाला॥ ताकै कं
न्या दै तिन को लाला॥ असकहि हर भये अंतर ध्याना॥ तब
राजा निज पुरहि बषाना॥३६॥ सब नृप सुता इ कहयो प्र
गटायो॥ सुर नर भूपति भरि बुलायो॥ सो सुन सब

१९ उ.पा.

भभुजगवसायो॥ मिथुलापुरीसमीपसिधायो॥ ३७
धनुतोलनहि नमुरम्रभानकौ॥ अरुविवाहउछाससम
वनिको॥ मिथुलानिकरअवनिसहसैना॥ कीनवास
सबहनिचितमैना॥ ३८॥ धनुषभंगभसमीवेदहा॥ र
चीरनेनिबहुअधिकसनेहा॥ सोपिनाकथलेरम्य
केथेसो॥ सबनृराजकरमानितहैसो॥ ३९॥ दोहा॥
ब्राह्मणक्षत्रीवैशलघु॥ तिमनीचप्राकृतलोक
॥ नगरदेसवासीसकलरिषयुतमुनिनिरशोक
४०॥ चौपई॥ स्थितिअरवलजेनकपुरिमाही॥ नान ।
वेशविदेहभारजा॥ वसतितहांलघुविरधआरजा
नागधसततिनमहिवेतालका॥ आनजनगरवासी

हरषसमेत
किसादिनमाही

१

महिपालक॥ भये सकल थिति जे जिम लायक॥ यया
योग कौतूहल पायक॥ ७२॥ नाम प्रहस्त सुचिव रावण
कर॥ पठयो स्वासिक विसभा माहि थिर॥ बलिसुत नाम
प्राक्रमवान॥ नाम बाण मतिमान प्रधान॥ ७३॥ स
हस्र बाहु जिन बाजन बजाये॥ महादेव तोषे सजु पाये॥
तिन स्त्र विसभा मध्य किय वास॥ कंन्या हित महा हुला
तास॥ ७४॥ दोहरा॥ सुधन्वा नाम महाबली सैंका स्वपा
भूपाल॥ शिवभूम गनीर तिनि तरह तैसिन नाम अनगान ना
ला॥ ७५॥ चौपई॥ सौ दरमति कंन्या केहि ता॥ सदसि माहि
थिति बैठ सुचेता॥ इह विध भयो समाज उथाई॥ बाजे ब
जे अपार सुहाई॥ ७६॥ इक अवसर सीतानहि आई॥ स
खी गण निकरि साथ सिधाई॥ तनहि संगार चौपसा सब कक

तिलकरत
५६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१स्रा०पा१०

डुं।।उपजततमईकरतहुहमगमडुं।।४७।।कोऊकरसोंजी
हसवीरै।।कोऊनाघमहिपदभूमारे।।कमलपत्रजनुरव
सगविदारे।।कोकौतुकसमयउविवसोदिस्वारे।।४८।।कोऊ
वारताकरनपरस्पारे।।धनुषभंगजिमिमेंमहामनावैं।।
मुकतमालकोऊपालिनिगिनई।।केचितकाचएपा
कोहसइ।।४९।।दोहरा।।रवुडुगाकोप्रातेषेंचकरकोदिष
रावनत्रानअतावलहिकोरवावईमहाभतीसुरगपा
ना।।५०।।चौपई।।सुनतउठाइवेगकपिरूपा।।मुद्रास्त
निदिषावतभपरा।।कोऊभाषसभाकेमाही।।भरबलपा
लिहिसोदिषाही।।५१।।कोऊपालदसनतेनिजरैना।।
दिषरावनसीयजोरपिधेना।।कोनरपालसमस्नुमाजं
ना।।निरभयनिजकेरसाथनलाजना।।५२।।इहाँविधम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

योधं गारुरसाई ॥ रंगवासि सब जन केताई ॥ आवत
भई निकुरित बसीना ॥ सिव धनु रजै नुद युत बीना ॥ ५३
रजा करि पिनाकु तन काला ॥ मातु समीप गई सुरवजा
ला ॥ ४ ॥ सुनि सुनि सब भये आनंद ॥ मरत रिषी ते मन
खिग संदा ॥ ५ ॥ ४ ॥ इति श्री मत्तोपाख्याने मरत सौनक
संबादे ऐक पंचाशत मो ध्यायः ॥ ५१ ॥ कविवाको दोह
इस ग्रध्याये नृपति सब ढोक भ ज्ञा ब ल साथ ॥ जो
इ समीप कुदंड के भय लषि मन पछुतात ॥ १ ॥ सुनौ वा
चा ॥ चौपई ॥ मागध सकल भूपति देताई ॥ जिन्हके पु
नत पाव गाट सुनाई ॥ सुत उठाइ सभो मह सोई ॥ म
ये सुनावत कहु वन गोई ॥ २ ॥ सो सुनि सब बेम भज

मस॰पा॰

उद्युत॥भयेकरतनआयानहिमुद्युत॥पा॥छेतेपरिकर
दिढकंवाघो॥धनुषसमीपजातभयदाढे॥ ॥सुरवपाका
रदेषधनुञ्जा॥गो॥कंपमानहोवलाकिरभाने॥छेठतनि
जस्थासनिपरजा॥ई॥भ्रानन्नृपतिग्रतिकहतसुमाई॥
७॥दोहरा॥धनुषयाजइहनागद्धमनिरषाषानृप
एहा॥नहिसंशयपुनभ्रानन्नपगयकुंवेउपरितेर॥
प॥चोपई॥संधमयेतहिजाइमर्यालो॥चापूहारि
नहिभ्रावतमालो॥हायपंसावतनरकतभ्रानहि॥कं
हां॥धनुषभोजनावरवोनहि॥हारसतवदततिहेको
तेलोक॥श्राकितगारउभमालोक॥धनुतोरशिन
श्रावतनुमकहुं॥किमतोलनभंजनकहसुउकहूं॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

झुत

थाइहु बिधहसतसबनिकेसोनु ॥ लजानि है

वैसतसुखासुने हिंपाग्रतनकोइम पनिउठिगवनत

निजआसनिनतजिजावतगर जता ॥ ८ ॥ केहरिगनचल

हैंगरवाही ॥ हाथसनकर हिफेरतजाही ॥ तिनदिब

गैवतनिजतनेचापर ॥ सिंहरूपप्रगटाइप्रताप ॥ ९ ॥

दोहरा ॥ मृगपतिरूपहिदेषिकेजाइपरेमुरझाहि ॥ त

भयनेफिरभाजतलजतनिजआसनपरजाहि ॥ १० ॥

चौपई ॥ सकलनलोगनिनहिकामइछो ॥ जानतहिमी

तवानुफिरआइछो ॥ केकहिचापरूपधरताया ॥ रूप

बिदेहहिहरिइमभाया ॥ ११ ॥ महाथनैइहजबकनु

पालु ॥ थोतहेहनुवुलइवमपालु ॥ बहुविक्रमपरमध

१४स०पा० जउठि ठाढे ॥ निकर पिनाक नायो शिर गाढो ॥ कर सुस
परसु कीय चाहत भयऊ ॥६॥ दाहत तेज अंग धनु तेज ग्यो य
बहुरि कृपान मे अरत उठ चालो ॥ धनु धरसु नीप गये
तिरह कालो ॥१४॥ दोहा ॥ चाप गह्यो म धनै तिनहि
करसो बहु बल धार्यो सम माच कं पेन दीय धनु तनहि
सभा मंझारा ॥१५॥ चौपई ॥ उदत भयो फिर दोऊ समर वि
पतो ॥ निकर कुंड गये भये प्रापति ॥ आगे ते धनु पे
परसारत खिसे नृपति पतो ॥ शिव सर रूप धर तुछ दिखावत ॥ १६ ॥
नम्र होइ परनाम कनाही ॥ पुन बैठत निज आसन को
ही ॥ एक काल सं मति करे अरपा ॥ महाबली रावन जिम
रघुरूपा ॥१७॥ उठि आतुर धनु पकर हलायो ॥ म

हाथ्य ग्रन हिहलत उठायो ॥ यक तन भये फिर इमहि
उचारा ॥ केइ हमे कहु चाप बहु धारा ॥ ४८ ॥ तिह पाछे
ते बल कर ताना ॥ बाण नाम स्वास निते जाता ॥ धनुते
ल निकेश्वर यहि गडउ ॥ महाबली पुन भंभ निचहु
उा ॥ ४९ ॥ दोहरा ॥ महादेव को कहु पुपिषि पुन पुन की
न प्रणामा ॥ स्वदसि मांगि कस कहत न भाइ हथनु सिव
मथ भाना ॥ ५० ॥ चौपई ॥ हम तो रामनत ग्रस कौस बैठि
इह तो वनियो ग [illegible] न कबही ॥ तिहि अवसर बृहस्पति
बबीलो ॥ मब हनि सुन तन हुव चपो लो ॥ ५१ ॥ बृहस्प
उवाच ॥ अरे मरकट सुनिये मम बानी ॥ तुम रेहि तमको
रवव वखानी ॥ रावण नाम नरा इस निसरा जो ॥ महाबली

प्र.स.पा.
अ

वौलक्षविराजा॥ लोकाधिपतिहै श्रीमानसबै
श्रुवेलगनुंपुमरपठान्न॥ ताकहुंदेहिं केसकाअ्रा
पनि॥ तेश्रीक्राधिककेहोइ अस्यापनि॥२३॥ राभ्रुल
महाबीरविख्याता॥ दानवदेवदर्पहरणाता॥ देहे
तोहिजीतसबत्रवनी॥ सागरसपतञ्जेतनेपवनी
रघा॥ दोहरा॥ जनककोउबाचा॥ जबकेमेरावलबली
धनुतोलनिकरिआडा॥ देहोंतबताकहुंसुताअने
यादेउंनसुहाइ॥२४॥ वृहतउवाचा॥ चौपई॥ चढ्ढ
मेोलकरिचापडहरूह्मडहघ॥ तोनेरावणतोलनेचढ्ढ
जेकसआनदेवकोहोई॥ ततविलचरणकरवतसो
ही॥ सहा॥ इहकहिसदसाउठकरठाढा॥ गावनिकर

निरित नवसुच वदगा का।। निर चे इह कैमा के नाई।। स
वए जैो तोह रिले जाई।।२४।। जनक उवाच।। जब मा
वएक तोह रिलेह।। पुजा समेत पुले हुजेहे।। दसग्री
वी के नास निमिच्र।। सीता देहे लविये चितु।।२५।। वासु
ते उवाच।। इह विधि कहत जनक माव नि पर को।। फिर
कत चलाइ मैना व यको।। ता पाछे ले कागद नीके
टी।। गयो पाप ही फेरत भ्रकुटी।।२६।। दोहरा।। राव
स लेका गयो जब अपवसु धन्वा नाम।। कहत वा जन
पजनक पुत्रि सुनि ममव चहे कानाउ।।३०।। सुधन्वो
वाच।। बैो कइ।। इन पास मुहि दीजे सीता।। चाप सहि
तकरि के उर प्रीता।। जौ नदेहि जव मो कहु राजा।।

९६ सि.पा

रीनुमारखलुराऊंसमाजनि॥३१॥ममदासोंकुविताउत
हूहैं॥पारसमुहिसोपीड़ापैहे॥उरमरैतलतोहिभवा
लू॥येगमअकिजयसमैसुभाल॥३२॥जैहोतनवकंन्या
लैसाया॥इहविधभयोकुलाहलनाया॥जनकु
भेपकेजेकुसहायका॥खडगचरमगहिमयघुदिल
यका॥३३॥जनककेसमीपभयेसबठाढे॥भूपविवे
उर्कुवनि कीभयमधगाढे॥इतउनसवैविनिवारतभयए
सुधन्वारेगमअमिनजिगयए॥३४॥येहगा॥क्रोधत
पुरतेनिकसकैघेरोमिथुलाग्रामा॥सेनासहभूत
दरपतेभपतिकरनसंग्रामा॥३५॥चौपईक्रोगेते
नि नृपजनकमहाना॥पाचुसाथमरायुधठाना॥हत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भयेउभैओरतेसूरे॥नादप्रचंडमानवबजेनतूरे॥ ३६
कागनतुमरतकैदेखिरणभूमी॥लगतभयानकजा
इनजमी॥एहिजथाबिधिजुद्धकरततिनता॥भयोप
कसेवत्सरअवगतना॥१७॥तिननगरीसगरीकलकली
नी॥तुल्यस्त्रगमघवान्राबिनाकरदीनी॥तबुद्धितद्रव
तभयोनृपअन्तका॥सुन्निरतभयोसदाशिवमेंत्र
का॥१८॥शिवपुरीसेनादेवनिकी॥बलतेबलीस
इषेवनिकी॥सुरसेनाकोप्राप्तभयेजब॥जनका
भप्रकृतयुधउतान्योतब॥१९॥दोहरा॥तबरिसु
धन्वाकोहरत्योयुद्धभूमिकेमाहि॥प्रानपलायेस
बहीजननकसूरेकरघाहि॥२०॥चौपई॥प्रथमकाम्प

२८स.पा.

नेरादीतिसम्रितकै॥निजभ्रातहिकुशाधजनहिप
तिकै॥बहुविद्धंमपतिसमतिकीना॥यज्ञावंभुजेन
कनृपभीना॥४७॥महामतीसबनृपतिन्हकाथाना
नादेशापतीलहुभावे॥म्रावनमयेबहुरितेमशुध
तोलनिचापमंजेनेन॥पा॥४८॥महासमाजमयो
तिन्हबसा॥सकुलनरनिकेनिरषनपुरसा॥हु
नेकुलाहलहितनिसिजाई॥म्रनउनसवमंगलसु
वदाई॥४९॥इतिश्रीसतोपाख्यानेसूतशौनक
संवादेद्विपंचाशनमोध्यायः॥५२॥कविवाका॥दोह
ा॥ऐवंचाशेध्यायमहंकिश्वामित्रमुनीस॥मिलेपुर
नितेलपाइकै दशरथैतजगदीस॥॥सोवरा॥कवितु

महेस्वर कौ आग्या मुनि विस्वामित्र महा मुनि निज सि
ष्य मते आस्तुति धाये हैं ॥ राम के विवाह ले न
कौ साक लजित पाछे नगर सा के तु देषि हृदे हरषाये
हैं ॥ राजद्वारे आये जब महत श्री युत बीन द्वारपाल
आय कर पाद सिर नाये हैं ॥ मुनि के पठाये फिर द्वा
रपाल आये कहि राजा कौ लखाये मुनि कौ आगम जो
आये हैं ॥८॥ चौपई ॥ मुनि दसरथ राजा विश्राम
यो ॥ वसिष्ठ आदि रिषि सिर ल्याये ॥ मह सभा तै उ
ठि कीय गवन्न ॥ राजा कर हि न बहु लीय पुकन्न ॥ अ
इ गहे पद जुगल मुनीस्वर ॥ सिर धारे कर न्रपति त

सि
।

१८ स॰ पा॰

पीश्वर।।मुनिवृषिष्ट संगकीय ज्ञा लिवा लिया।।पुन
न्यपकुहे लायो निजसंग लिया।।६।।पुन नृप बेस्यासुतः
पुरकीनिंद्रा।।पापस्वर घर्म पतिकिरदीनिंद्रं।।बिम
कुपालकर पुत्रपापसपरा।।करतभये बहुभांतिह
रषघरा।।प।।श्रीदसरथ उवाचा।।दोहरा।।हेभदेव
अनय कहु आपा।।कतियेमो हि मैं अनताग

सोकर

से प्राप्त्रय संघसुनतसो हिया हि।।श्रीसत उवाचा।।वि
पड्डा मुनिनरेस केवाकसुधासमा।।मुनिपुंगव
हरषत भेउरतमा।।आगेते महाराज हिवचनु।।क
हतभये मुनि कादभुनरवचन।।७।।विस्वामित्रोवाच

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

राजसिरोमनि दीजिय मोकहुं ॥ राम अंबु जाच नमे
तेतो कहूं ॥ अरु वा ना हिं रुक र नि न हि चाहिय ॥ हु मका
र ज्ञाहि त नहृ देउ मना हिं य ॥ ८ ॥ अब हीं क हनु मनहिं
वा को ॥ हिं बना वा च हिं तिह पर पाकु ॥ प्रभु ते अरु न पर प
प्राल क्ष्म कार ज्ञा ॥ न बसा बोइ हब्ब चुक हिं श्या र जा ॥
॥ अवधि र वार यु उ वा चा ॥ चतुर तु मारे ना त मुनी सा
जोऊ चहि हियग हो कहिं इसा ॥ आपनि कारज हि हु
भनि ता इ ॥ रघु कुल ज्ञा च न बुधा नु जा इ ॥ १५ ॥ दो
हा ॥ मन कर तेनु त लो हैं भौ मु नितो कहूं देवा ॥
वे सिख रिषी मे त्रीस हि ते को घा ला हिं क हि भेवा ॥
चौपई ॥ राम बुलाये बिप्र वत स्रा स्ते ॥ लषम ५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१९स॰पा॰ संयुत अरपे ताम्र।।जब दैआ सि बदई असी सा।।
हृदय बहुत ह्वोइद साय यका वनी स्या।।१३।।पुबपव कि
नभेतेअ तपरी या।।वौ थि बुसकल अ यो धा गुरी
या।।पितु आज्ञा लै उभयो वीया।।पाद प्रणाम कर
१२ त भे धीरा।।करधारे म हिं निज बालक।।अ सु पा
ने लोचन नर पालका।।ता पाछे मुनि सबमग वेनि।।ल
षमण अनुचर रामहि यबु ने।।१४।।दोह रा।।अ यशु
दीनी भ पवर सेन हिरतो हे ता।।का हि ओ सी समर
थ तव वचन कोन किर दे ता।।१५।।चौपई।।पितु अ के बुक
कैकौ नेओ बु।।वे षत गवैन मन न कियं थ भा।।धनु ष
त एक स सिधर करि को धे।।मुनि पीछे विधमान तपिआ

दो॥१८॥मारगमग्नजैजननिरखही॥होतचकित
चितसंतमारी॥सुत्लकीभांतिचलेकेनतेहो॥१॥ऐसस
नुलक्षिमकोलनकैसा॥१७॥समलषनजुगगाक्स
गेहो॥गाथनकयमारगमेंजुसी॥पुनवूणसजव भा
नीकगकको॥चलेबीरवरनरमगपरकेो॥१८॥कि
महिभास्करशुभविकसोह॥ताप्रघुमाधवतिमु
निसंगजैहेह॥जुगलगमनतहिँतेअसभावता
गतिमनेगमूतसदनसुहावन॥१९॥दो॥कि
किसुरयोध्यातेचलेजवनवविद्यादेन॥सेयूमहत
निपुसपुतसविकसनायवलेनता॥२०॥चौपई॥वल
मतिबलकीनेतेजोहो॥यकनपचेविद्याबलकी ।

रा०मा०पा०

ही॥ जैसे सेमानु कोउ मकुं द्वै सोमारे स्क्रनं दत अमल बिधु
तैसो॥२१॥ रघुवंसमनि एवं जड़ तिहास्य॥ प्रभु निकोरि
मानु जेसु निम हु नाए॥ मा साचु लेन विद्या नरहिता
ई॥ जनु बाहनन पर चढि रघुराई॥२२॥ मग पंकज
सुगंध लीये चालत ना॥ वायु त्रिविध बहि गमरि लाल
ता॥ कीर बिरवग निज नाद सुनहीं॥ जलद राम पु
र छाय कराहीं॥२३॥ प्रभु निलखमन एसह राम गुसाई
मारग ग्राम निरखते जाहीं॥ पचयकी बूझ राम कृपा बि
लोकहिं॥ इकर कोरहीने नपट सोकहिं॥२४॥ दोहा
सरसानि केसत हारते लहत बहुत आनंदु॥ नाराय
व परसति गोपजन ने गोर्व्ह मद हिंपिवेना॥२५॥ चौपई॥

बलसोंपुनपुनदारउठाहीं॥मोहतपानततिनहिस
मझाहीं॥रमानाथकरिकृपुनिहारहु॥नैनपसारक
श्रापुउहारहु॥२६॥हावभावककुजाननताहीं॥
ग्रामनिसोभापानकरोहीं॥श्रोखिविधारतामरल 13
वहीं॥करणलगिलोचननविधरावहीं॥२७॥गोप
जानुजुगलैकरिदोहनि॥दुहितगावबत्सहिलिह
नोवनि॥ताहिनिरषितबपुभुविगसायो॥श्रुसवि
चारमनमाहिदिढायो॥२८॥मसरपिकैरवेंहोपुर हि
ष्मसही॥कुमजननमनदहरषतरसही॥कुषीकार
कीपतीको॥श्रुकनिउडावनिगवनीसोकु॥२९
दोहनी॥नवलगिपाकेंसगचरहिपुनदौरीतिहओ २

२५ स०पा०

हृदय परे रघुनाथ जब भई मगन निचितचोर ॥२७॥
चौपई ॥ वाम्हिमो पिकाललारे धारे ॥ पुबपवधक
सुहावन नारे ॥ मृग हटका वनि जात पराई ॥ अतिवे
गहंते भुजा उठाई ॥ २ ॥ कुचपीन हि ठाप नरंवल
करि ॥ सुसुका वन गाव नम नम रुचि धरि ॥ ता सुगी तमुनि
मगनि कुरंगा ॥ कुरंगी षान परहरि मनु रंगा ॥ ३ ॥ अतिरस
कृविलोकत नागर मेखर ॥ मुनि पीछे सुरद चवातिरसक
सम वसर ॥ कहा कुतिं केदर्प निहारी ॥ मगन नि भई नव लीवर
नारी ॥ ४ ॥ जब सी पुषप नुल्य वरव रनगा ॥ उर विल
रव डभुज रुम चरनगा ॥ धनुषबाण धारे रघुवीरे ॥
अषल अभि चित मगन मन सीरा ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ हृदय रतनतेम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

न्रस कैकेकहु मनन म यपीर तनताहि॥ सातिकभावहि
गन भई हृदयो चित्त न बताहि॥१॥ पातक मगु हृषद्व ब चौपई
नारि निरदारे॥ त्यिा नि हुव तिन रिदीय रज धारे॥७॥ठ
नि पर धरि तरज निदना॥ रकु नमु नेरि भई हुदय
३६ सो॥ सुत कहिय मुनि मोबु लिए ही॥ इह कुमारि काके
प्रिय जेही॥ तात तनु मा पि किपिया महा मुनि॥ कहि
नेस्मा ये पाये इहगुना॥३७॥ ज्ञाने प तुद ये गुम कडे
इह॥ मह ता कठ निकका तीरु हहै तिह॥ नि हचे कारि इह
ज्ञानी मैं मना॥ क्रम सुनन प सहि क्ररपद ये जिना॥३
८॥ विस्वामित्र वाचा॥ दस्मार थे न्नप के इह तनये
वरा॥ राम लषन बिब नाम भये हरि॥ करी याचन

२२म०का०

मैंनपूतनाई॥यगसिद्धिहितदैरघुराई॥भूपसोकरा
दयेप्रमसोतनुजनदपाकिरुष्णमलेजाउं॥सुनग
भूविप्रनकेतपोवनश्रयेगु।ध्यानिकिरपरुचाउं॥१६
चोपई॥सरतउवाच॥इतनैकेरतरगोपश्रनेकाव
नतेश्रायुसिमरभयवेकु॥निरविसवालकोशिक
हिमुनिको॥मुदतमयेपिथरूपगुननिको॥४१॥
बेसुधापरनदेउवनकोनो॥करहतपरसपरहृत्याति
दीनो॥मुनिरिसुनाइवदतिमरदुवचनु॥पुनश्रुन
श्राजुसफलभमजनम॥अंरा॥तिपभयोसुफलश्रा
जुहमसातेरी॥योतेहमगुहितुमचलिश्रायो॥वडे
मुनिसेगनपतानलायो॥केरौ॥उमतिकोवेकुतम
वनदुमधंनवकुभिसवनगरो

ज्ञा कहि या मुनि की राजकुमार को जू वर ॥ पवन चुउ नार
घरे तिन आये ॥ जुगल भ्रात कौशिक बड भाग ॥ भा
दोहमा ॥ रजनी तहां बिताइ कै सिद्धाश्रम पुन चाल्यु
महाभयानक पेखि तो मग बन राजकुमार ॥ पांवे
पडा ॥ तिन करि भाव दसुन न उठि धाई ॥ सम हंभ या
न ताडिका आई ॥ आवत तब हा पुन क्रूर सरूपा ॥ भाड
व भासकु पा कु बिरूपा ॥ १६ ॥ कुंडल का न कपाल
क शैसो ॥ खकु पे कति घन माही जैसो ॥ महादु मनि
के पावत धाई ॥ प्रेत हि संवर धारत आई ॥ महा ना १७
द पुनता नेकीनो ॥ धूलि हि वरषत महा अचीनो
धूलि पवन मिलि उठी कैघेरी ॥ आवत तका भावकर

२३स.पा नामसहिदेसी ॥२६॥ भुजाउठाइकहियाहिसमभाने ॥ ह्रुआव
तनिरषीपरुषवचनताने ॥ जोउमालायुक्तताङ्किका
लषिवकरिवधनकीनमारका ॥ छेदिहताकोनि
करिसुनिबैरगणसमरधनुघरसुनायाश्राह्रूगणस
२ हननवबानइकुहहसोमछंदुगोतनाआपवीचावडेमा
रिदाविदीरणभयोतासकों ॥ पतीधरनिनलपाइ
नासकों ॥ पडनकीनमरानादभयानर ॥ दहताको
स्वरगतहिंपयानउपा ॥ कोसिकमुनिनवराम
बुलावा ॥ राजिवलोचनअमडुंभावा ॥ मंत्रकीन
प समरंलहितेसो ॥ ताघ्रयानुकमिततोषितबेहसों ॥ ५२
सरकांतिमलिजैसेरविते ॥ तिमहिमेत्रकसिहोतन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निभवतो॥ बसंत रूप करा श्रम करा धिकाई॥ कामरूप
मिलि सुख रा ही॥५३॥ कोकिल कला जसि है कोहि तरे
कि हु श्रम कहे रा मा गति है॥ बड उत के दुमय सबुरी
इहि॥ मुनि को जहि वा मनि जो पुरा करि॥५४॥
दोहरा॥ दीहित भये कोशि कमुनी धूजुष बाण ध
रतमा॥ सा वुधा नर तके भयो रिब कजु के जयधाम
पपा॥ चौपई॥ स्मर चेद जिम भन लमा हि॥ तीन लोक
तम हरि ति मन्मा हि॥ यग गा रे भमये षट दिन जव॥
आवत भेरा हस सकर बिबत ब॥५५॥ वरषा की नस
ब नि स धिरा दिका॥ ३५ डी ठि कला राम श्र चानि का॥
पुनि विधे जने बाल निकारे॥ भुभ कर बिनु सर श्री च
पकारे॥५७॥ सफल चला यो ओर सुबा हहि॥ पल कि स

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२४ सं॰पा॰

साधु

मारि निरंजन पनव हिया॥ लघु गुन सब लखिन हि हत
ज्ञाने॥ मिलाप जीव लै सबै पेसाने॥ ५५॥ जे मेले नारद
म सा कुहि तनजई॥ जनतग वैन नहि नाग हि मनई॥ ति
नके हित रिपु क्रम भाखी॥ जुगल बालक कहुँ बोलि उ
चारी॥ पूरा दोहरा॥ ऋषि पजनत मये तन मकहु यद्य
कुंवत न भये सिद्ध॥ गुनि हि गुन सन तजी रदो गुद ति
कुमार पुनि सिद्ध॥ ५६॥ मोरठा॥ गुनि ज्ञान सिद्ध बद ई
ज्ञान पालि न लै वर सिमधे॥ गुनि जगु लाज न तहां वे
नेन मोर माया न तयो॥ ५७॥ इति श्री सिंगन पाम्बा
ने सन मीन कसे बाद त्रिपचा संत मोक्षा याराधक
कुविचाका॥ दोहरा॥ इस धाय मनुष्य जोगा मुनि
को सिकप हि हन॥ निपुनाज न के मेसे जे हैं दस

CC-0.Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देपुष्परुमा ॥१॥ चौपई ॥ तिहअवसरनृदेषा तिरहुतके
पुत्रीसहित तनुछिउररतिके ॥ आयेकीनप्रणाममु
नीसहि ॥ सबनियगुरुहितबिनैकरीसहि ॥२॥ देता
वाचु ॥ जैनकनृपतिकेसदनेवुररतती ॥ धनुषयज्ञ
नुमदेषियमआदमुना ॥ नृपकूहि जोकरएलघुभुमोपर
मवानपिछाइयसीपुहिमोपरा ॥ आसरनउवाचा ॥ ति
नबचमुनवतसकलमुनीसा ॥ सहितकुमारनिगव
नेगुनीसा ॥ विस्वामित्रआदिकनुनिगपानी ॥ मिथुलापु
रकौसबगवनानी ॥४॥ दोहरा ॥ रामचंद्ररकुतमये
मुनिपहिकथाप्रसंगा ॥ देसानुदीउपमाकहतमुनि
तुनिरघुकुलचंदा ॥५॥ चौपई ॥ परमहरषकेकुंभ

२५स० पा०

पनकमलतहां॥मुनिनेरामलषननिजगपतिहिआगि
नकृविपुरेकीनपुवेस॥गौतमरिषकआश्रमदि
षानेषा॥६॥दोहा॥घनपतहिधारतपोस्थ्रआति
थिलालिकउस्मरहलाकीस्प्र॥जहिनेलपतनी
भईसुरेसक॥ताकहिसिलापरापतेपंषकी
गासकलकुयागौतमकरिवरनी॥मुनिरा
महिल्लीकरनीरिषधरनी॥सोमुनिपरसा
तमरपुचेद॥किष्लाइसिलरूपविरिहेट
रामपादतलोतेरजजेऊ॥उठीसिलापरिप्रभुप्र
तेऊ॥नामसमपरसमात्रतेताकिनाभईस्राप
तेमुक्तिसुलोकिना॥रामचेहुकीकरुणानेसो

भई सिख तुं दरीआवे सो ॥७ जति कीन रामकी
पतिसुना ॥ गाई रूपं चुकि कैसो सिकन परसुना ॥ पूर्वा
दो हता ॥ किय लागु सिकर्दं वे गते हानु सयज्ञानि
रपावा ॥ जनकु सीउ पवन विवेक हि सि तिबुद्ध
राजा नाम ॥ १ ॥ चौपई ॥ सब वसुरव दक्षोन निवा
स ॥ कीन सुनी स्वररह तस्य वास ॥ राज रहत मि
लि मुनि रहि नीत सों ॥ राजन धार मन न प्रेंह प्रीति
सों ॥ २ ॥ राजा इस तुम्म कीन नरपाल लिया सु
नि ज्ञाये करी बात निकृपाल हि ॥ नर उवाचम
सुनत जनक राजा तिहि कसर वाम मैं तिहि द्विज
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ई.स्क.पा.

१३

सहृचलमुनिपुरसयोंआननगर नागर नारसंग्या॥
मेगालहुवलैसा श्रउमेगा॥ कौशिकजुमिकेदरस
नकाजा॥ आयेमहामुदतमनराजा॥ ६॥ दोहा॥
करनमयेपुरनमनृपनागरमेत्रिनिसाया॥ कौ
शिकज्रपियागीमहाउठिआसनिहरषाता॥ पि
वैठिभुजाप्रसारनृपहिआलिंगा॥ सतानंद
ऋषिआइमुनिदाकरनप्रणाममयेहरषाइ
यथान्यायकौशिकनिरताई॥ ७॥ मिलिबैठा
येसमनमुखअपनो॥ सहरबतमेलद्यिनसप
नो॥ शतानंदराजाआदी॥ मंत्रीआनुसिमसिवि
ठलादी॥ ८॥ विश्वामित्रवचामसवदिग्गनरप।

लोकमारे ॥ अबतो वरनित कुशल तुमारे ॥ जिनके
बरनत कुशल न रेषा ॥ सदा सुरबी विचर हि सब देश
१९ ॥ राजो वाचा ॥ दोहा ॥ नाथ कुशल तिन सकल
विधि तुम से जिन रषवारा ॥ २ ॥ चौ ॥ हन कृपा करि
तिनके कुशल अपार ॥ २० ॥ चौपाई ॥ तप दुष्कर
अति हि तुम साधे ॥ ते ते सुरनि कुशल आराधे ॥
अब मै भूप सो सनाथ सुसाई ॥ जिन से सकल रिषि
न सम हाई ॥ २१ ॥ कहत उतारा ॥ इतने में तरसा जानि
रषे ॥ श्यामल बपु छबि आता पिष हरषे ॥ ते से सुर ब
लो कहे वत भे ॥ दोउ कुमार महा अद्भुत सार
रा छत्र तरसी पुष पतु लषु श्री रामे ॥ राजिव लोचन

२७ स० पा०

षुरण कामं॥ दूसर बालक कें चन्द्रमा अंगा फूलन
मृदु जुइ हल लोभं॥२३॥ मन नेम यको टिधरे लोव
षा॥ कि जं विगृह भा वत्तमावूं मे॥ धनुष बाणधा
दि रे श्री भिरामं॥ कि नकनते सरहो खडग कर सगंहाय
षा॥ दोहरा॥ मोष्पूर दिव्य पटका सुभ कान्हे नमई
धाम॥ मलि मुकुट शिरगुंथ श्रुभ्र तिलक विधु छवि प
विमाल॥२४॥ पान चोपई॥ कानें कुंडल दिव्य सुर
वन्ना नाना दिव्य रतन जडित पावनें॥ कलि कैकर
सावू नमुख सोहतू॥ मी चमकुं कमतिलक अंदे
वृता स्थ॥ तैसे वर्ण हरि द्राके सा॥ धासोका दभुज
विदम धे रा॥ बदन मनोहर रम्यकुहाकु॥ दस

नदादि मनि बीजल जाऊ ॥२१॥ नानक सा सुकतु
चहि कसि मेदा ॥ बार बार पि पहो तम नेदा ॥ कि
ठेकं ठाम मथ बिरा जनता ॥ नानाक रतन निरंजर मछु बि
कोजन ॥२८॥ महादि बकेयर रदि वाहो ॥ तिनक
दि सोभ नतम मध निकमाहो ॥ तयादि खवलये कमीरा
जै ॥ नानाक रतनि बिनि भितमजे ॥२९॥ दोहरा ॥
रत निरमब ब्रिकसि मेगुल निसुहा राजन नायु ॥
पीतु कुं तु की सोहती को रिसारी पीताना ॥ श्रु ॥ सोप
द्राति से पीत दु कुल सकंधे ॥ सब अनुज काकी उर माले
दे ॥ महादि बधारे नली रे ॥ नानाक ॥३०॥ रतनेसातीं रा ध
उपान धरे वद मधन लोकु ना ॥ ते अनिजे सब दिस

२८ स॰ पा॰
सुक्रादक

हि प्रकाशत॥२ विज्ञौं श्राधि इव क्रौंति सोभ्रातम
ज्ञौंतन समसर्प रमातम॥३॥ बुद्धि बृहस्पति
तुल्य सुधारत॥ द्विजाधर बिसमनि बिंब विस्तारत॥
मुसकावनि ते मोहत सब जन॥ निज उँत्रपरउदा
सरत्रुमन॥४॥ आत सकुमार बिबरूप निहारत॥
एकहु निमु निपति जनक उदारत॥ जनक उवाच॥
ए भगवन योगिक मधर्म्मोथा॥ ए कुमार कौ के
उ मद्रोथा॥ निज कोनीक वरूप प्रसारत॥ सबजन
मोहि मुरक्कक्कर डारत॥५॥ विस्वामित्र उवाच॥
दोहरा॥ सुनहु यथा तथ बात नृप न व सनेह करि
देऊं॥ [illegible] मुनवा॥ ए कुमार युग समताप तिलक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लेउ ॥ ४३ ॥ चौपई ॥ रघुपति जनक सदसारथ जिहकाम
नासत तनय युइक्ष नक्षत्र मिरामू ॥ रत्नायगए है तोषे
लनयो ॥ तिउनत्र सुमसो मिकुकरायो ॥ दिबकि ३१
कहुं बारकसे लागता ॥ वलवततरबलापिबरिपु
भागता ॥ मारीचहि सर मारि उडायो ॥ एक बाण
ल गिक नहंन पायो ॥ ३८ ॥ द्विति य सुबाहु निधा
ने करउ रा ॥ विनाय न निपरलोक सिधारा ॥ ३
न हते सो मि तिनिसाचरा ॥ इह विधरत्नायसुक
र तिकरा ॥ ३९ ॥ दिन अ ॥ छत्र नमीपुषपसंकाजे
नामराम रघुनाथ ॥ कहुक वरए सोदस रोल
बनसुमिगता ॥ ४० ॥ चौपई ॥ रामचंद्र न रजप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्र्दस०पा० रसनतनरनी॥६२॥रबरूपमइगोतमघरनी॥मिराम॥
परोइएतनपतीसहा॥गाईस्वरगम्रपववरगमईवरिा
४ ध॥म्रवतुमरेधनुयज्ञपैंहिता॥६२॥हरघूतमस्रा ये
हमपुत॥बा॥णीकरकुकुकहोनजाइ॥बलइह
भवधिनहोनलखाइ॥६३॥महाराजमुनियेमम
बाता॥भमूतुमनगनमादिसख्याता॥धनुषह
मरगरतामैंहे॥हृदेभगवानसकलभ्रमभैंहे॥६४
इतिश्रीसतोपाख्यानेसूतशौनकसंवादेचतुः
पंचाशत्तमोध्यायः॥५४॥ककविवाकादोहरा॥
[illegible]
धनुनयेमलेलेजनकसुतापहिराइ॥म्रतावाने

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दै. मिल

दुरि घा[?]मिलेउ परसर नृपति सुनत सुभ बानी ॥ हरष नहँनेपती कुहिनसक नकोसानं

इह करि सद सिमाहि कौसिक मुनि ॥ बहुरि भये वि
रराम तपोधन ॥ जनक महा नृप सुनि नहु एही ॥ तब
पर मुदत भये मन तेही ॥ ३ ॥ मनु निपेरएते राघव देहऊ
राम लषन मन हरषत होऊ ॥ कीन प्रणाम सीस स
भ धमके ॥ निरषि दुलास भयो नरवर को ॥ ४ ॥ पुत्रा प
नि कुल संभव लषि बालक ॥ नमत भये आगे नर
पालक ॥ जनतन पालक जानि दसरथ येजो ॥ जो राजा जी[?] क
राज तिह तनु जौ ॥ ५ ॥ मुदतु उठाइ लीये उर लाइ ॥
गेघालेत नूमर रघ निहर षाइ ॥ राम लषन सह प्रेम
नवायो ॥ जो जलज बवजै नन उपजायो ॥ ६ ॥ दहिए जे
धाराम बिठायो ॥ वाम जेघ पर लषन निरि कायो ॥ ७ ॥ दु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

३ स० पा
दोहरा

सुनि कै सुरव मार्जन कीनें ॥ जनक हाथ निज प्रेम हि
भीनें ॥४॥ जनक उवाच ॥ आज जनम भयो सफल
मम ॥ आज सफल नपु मोर ॥ आज सफल इह राज
सब मिथुला पुरी बहोर ॥५॥ चौपई ॥ आज सफल
भयेय जत मो रे ॥ आज सफल दिन निसा उजारे ॥ य
वे इह युग बाल निहोरे ॥ राजन राजे के दोऊ कुमारे ॥
धार्‍ह मनुष्य वेंजनि कि संपन्न नृप ॥ सो पुनि तनय इ
दोऊ कमयो द्विपा ॥ इन्ता के वे राज इह यो न ॥ सन
दोऊ कुमुके इस नीते ॥७॥ ताहीं कुल निमि जनमा
लीनि ॥ पर जनीय निहिं से राय चीरे ॥ धनु नृप
ह कहि सक ले लोंका ॥ करी पूसं सापुत्र विलोका ॥ ८

३

रामस्वरूप कोकरस्त्र विलोकनि॥ भयो विमोह तनपसहसो
सो जनतं होत नचकत सबजो गुनि हारत॥ कहा चित्र बुलो
दिकन्धारत॥ ५॥ दोहरा॥ रिदं विचारत पुनह पुनन पस
तेमबुधि साया॥ के नारायण देवइहं लक्षमी नाया॥ ५॥
चौपई॥ सीता तोल हमीउ नपन्ना॥ यज्ञ समर मिह लकत ब
हजन्ना॥ इह नारायण देव रामजी॥ सीतावर भव स्वरका
मजी॥ ९॥ नवलौ सर्बै नैन सुख पावहि॥ नगर नारि न
र मोद बढावहि॥ मंदर मोर कम्र खिलन नर नारी॥ रामलष
नि पिखि होहि सुखारी॥ १२॥ इह विध राजा कीन विचारा॥
विदे माहि पुन कीनउ चारा॥ स्वामि निकम्र दगृहि चलि कस्पग
करि॥ सेगतपोधन कम्र रकुमारि वरा॥ १३॥ इसमाह करि सिरग्र

दिसवामी॥ हम तिनके किंकर अनुगामी॥ चलि रमयेत
हि मुजिय भोजन॥ कबि करहु मो पर लखि निज जना॥४
दोहरा॥ सत उवाच॥ मेघु लगाजाई श्रानेर नाँखि नै सुनि
काना॥ पुनबाणी जन कहि कहत मुनि कौशिक धीमाना॥
१५॥ कौशिक उवाच॥ चौपई॥ हे राजरषि सतमनव बुद्धि॥
श्रा सम्यक निश्चय नमक[illegible]बुद्धि॥ जैसे तुम महाराज बखा
ना॥ सो कहुं सो है असहि जाना॥ १६॥ परंतु बालइह करिम
मषो च्चा॥ पुन मुनि उर रमते मन लोचा॥ अत्र बचि ति करण्व
है जोग॥ महानंद संयुत रहि हैं ते॥ आवहि तोते रे ग्रहिमाही
भोजन अर्थन रेषा बुलाही॥ १७॥ मुनि अन्न नि बार कसपास
धावहि॥ प्रातकाल तव आयसु पावहि॥ महीपाल अबगव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

किहूं योग॥ वर्णित संध्या काल छ योग॥ १८॥ समस्त्रापि
स्रवैयों परस्थानेकरा॥ नहिं संध्यायें संध्या पासन उरा॥ इस स्त्री
नाम मगन तद्रूप बराबर नू॥ लीय स्त्र वृतार पातन कीनारन॥ १९
स्तनउवाचा॥ दोहरा॥ कौशिक सुनि स्त्राय सुसुन तजनक
चले निज धाम॥ हृदे ध्यावत जात हरि मन लालाग मघराम॥
२०॥ चौपई॥ तिमहीपुनपुनलषनध्यावत॥ उसस्त्रानंद
भयो न समावत॥ रूपाल यह सरामहि कार पें॥ किजके ना
जानकी समरपें॥ २१॥ पुन उर्मिला लषनके नाई॥ स विरा
नन कें न्यादि ढलाई॥ ध्यानु मंजुन निस चेर घुराई॥ करि
हैं तौ हैं हैं मन भाई॥ २२॥ मोर मनोरथ एह रएकु संहीं॥ सिघु
लाजे नसक ब्रह्मानंद भरंही॥ बार बार चित वन मन लायो॥
ब्रह्मपर पुरुषसब ब्रह्ह रघबछ्यो॥ २३॥ जेमें जाकें न्याद्रे राम हो॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रा० पुनउरमिल्लालषनकुंविधामहिं॥जनककमहात्मतनुजा
दैरऊ॥हरषततवहिंसबेहनिकोहैरऊ॥२४॥येकदाबात
र कौतकीतीसकलरजनिनामिनरजोड॥कहतपरसामहरष
सबनिद्रापाइनकोड॥२५॥चौपई॥प्रातउवाचा॥उठकर
प्रातकालभरपाल॥कृतपाचकनिकहोउताल॥आय
सुकीनसुरानुनतिनको॥बहुतभांतिवंजनकरवनिको॥
रहा॥भोजनकरनिहेतमुनिकनिको॥पुनसोराजपुत्रदुहुंव
निको॥सुनेत्रानामजनकपटरानी॥नृपत सुदतेति
स्वा मिवेनी॥२७॥राजतनयमिलितउक्ततिजिनको॥कमित्रवि
न लोकेसविसहतिनको॥कविसनमानपिकरनवयोगा॥मा
ननीयसबकहुंवेलोगा॥२८॥सुनिनृपतेमहात्माबालकको
१के सारानीनपवदनेउतालको॥मिथुला॥पिकोराजानवडी॥२९
तेरवहिमित्रबडी॥

दोहरा॥ कपि सर्वा नष्टादिक करम हुतीहू ता सब धार॥ पु
न कहूं हनु पठाइयो कोंपि कसे निधि उदार॥ ४०॥ चौपई॥
गयो मुनी सस समीप सोहू ता॥ कह्यो बनाइ बचन अत
एता॥ करिके जल लिखिर धर पुनयाचत॥ भयो पक सि
द्धि नृपति बुलावत॥ ४१॥ गमयम्रा पस्रब दी मुनि राया
जन कयो हक हूं क विनि दाया॥ भीज नने हेत कुमार ह
मुनि तन॥ महामते लषिन प कहूं निज जन॥ ४२॥ इति
श्री सततो पाख्याने सरतरो नकसें बादे पंच पंचाशत्
मो ध्यायः॥ ५५॥ कवित्त॥ दोहरा॥ कवि दर सन मधुबी
र मुनि राति नृपति मन मोद॥ [illegible]
[illegible] पुर नर नारि विनोद॥ ४४॥ [illegible]न उवाच॥ चौपई॥ हूं न वा

राम ध्यान वर जिन हुरि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पा॰ कप्ष्यलुचननिहकालं॥७॥निपुंगवसेहस्सेखनतनकाले
ज्ञानमयेराजाकरिमवनै॥नरनारीकरिअ्राबुतमव
नै॥भ्रामकुआम्रमनमुनिनरनारी॥भयेसकलमुद
तायुतभारी॥रामनिरखिपावाञ्चानेद॥भयतमुनिके
खिखिखिरघुकुलचंद्र॥२॥दं॥नगरजेमैशुलमसकह
हि॥हखबरसारपुनिजेरहहि॥मुनिपुंगवबाहस्मुनि
अ्रायो॥हारजाइन्पसीसनिवायो॥३॥मुनिसहितबहुपि
नपबननताभ्रानो॥कीनपूजामहस्खमनमानो॥कक
लषनमृपिमपविदेहं॥मिषुलाजधिपहिसहितसस
येहा॥ नेहं॥रहसेएकदिइठाड़ेसिरलाबाकीनपूजामृकरि
हि सोकेरितहिबालमुदयुतगोनिजधाममापा॥सोपइ॥कु
२१

लिए बेद पार गामी जे ॥ अंतः पुर निवेस गामी ने ॥ पुत्र
म वेग बहि औ बहु मांतीं ॥ ए जाकरी पुगट द्विज जातीं ॥ म ६
हा दिव्य सिंहासन जो ऊ ॥ ना ना रतननि विचित्र तसोऊ ॥ ता
परि बैठारे तुग बालका ॥ दृहं म धाय्या पन किय गाधुजा ॥ १
अपर मुरव्य मुनि स्रनि दै पीठा ॥ स्व भ पाल भ थिति कैडी नि॰रा॰
ठा ॥ पाद अर्घ पुन पाकै दीना ॥ विध सों तिन मनी राजन की
ना ॥ पा ॥ माला पुष प दई ऽकऽक पुना ॥ गुभ सायचंदन
सुभ लेपना ॥ नाम मुने वारानी जोई ॥ सीता क्र क सरवीय
निमसह सोई ॥ ४ ॥ दोहा ॥ काइकीन परणाम तिन मुनि
पर युग बुद्धिमान ॥ विनय सा यसता धिप तिसुत कोम
लव बलवान ॥ १७ ॥ चौपई ॥ कोरि सर रसमतनप रकीमता ॥

मा॰

निरषि स्याम सलषमन हि हरु लीना ममपुन पुनहर षनिहा
रनिहारी॥ सुद माञ्जा पूत समतीश्र पाही॥१७॥ रानि सुनैत्र
सुभनेत्रौं कही॥ राम हि पेषन तउ रमु द निरभर॥६॥ इन्ही
लेम स्मिस मनन ययपामे॥ कोमल स्त्राकु ति सब्बयया मा
मै॥ विमौ स्वचिं तरता मकु सिंदेषा॥ कृपा वारि सिंश्र तिमति
मवरेस्वा॥ करि मजुं पीन घरत कैको सेयुं॥ घनइ व विग्र
हसोभन तेया॥२॥ कोंच्या वहु सुरत निसु हावनया॥ वि
धुत ललता सुलसदि व्यपा वन॥ श्री रामे स्त्रा जानु सुबाहुं॥
पकज ईदल सुमु रवसु हाहं॥४॥ दोहा॥ हरल षासि
समसा नजे रामे सोच नदीहा॥ करएं तैसुभ घर तम
लि सौमा राजन की रहरी हा॥ चपाली पइ॥ तासु कौतिव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कुंदि सिरस्री वापत आपर मम मनोहर पु भा मयूषापत ॥
मुर्वा जुगल जजनु चाप मनो भव ॥ भ्रा भामय दिवावि
भ्रत सो भवा ॥१६॥ भ्रर घ ड्डु समस विर ललाटे ॥ ल
गत मनोहर रुद्र दमुन ठाटे ॥ उर्द्ध पुंड समस्त नख भ्रकुटी
का ॥ भाल दिसारा जत बहु नीका ॥१७॥ नासा भ्रसमु
कनासा ॥ जस नासा करषत ताहु छवि छवि मयरस ना ॥ म
हा नील कर शोभत अलिकें ॥ मुख मंजु जपर सुंदर अ
लिकें ॥१८॥ कुंडल दीपत मकराकारे ॥ कानन्हु मुख सो
भत चू मकारे ॥ कपोलों की राजत मुख सुंदर ॥ हरि नम्भी
इ भाके सुंदर ॥१९॥ दोहरा ॥ मुख मझ मझो दन करषहं सी
सोभाइ नउतन छंदा ॥ अधर बिंबफल अरुन कत छवि दसन भ्रमना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पा विहुंदेह॥१८॥ चौपई॥ सोभमान त्रै रेखा कंठे॥ अम्रत हीन
नो हर कंबु सुहंठे॥ कंधर पीन सुहावन गोला॥ ग्रीवे
कौस्तभ मणि अमोला॥१९॥ [illegible] बैजंती माला
उर श्रीवृत्स विद्रुम मणीका॥ वाम पार्श्व लक्षमी नीका
सोभमान है भुजअंग अंगद राजहि॥ वलय बैर मणि अनन्त सुंदर भ्रा
जहि॥२०॥ शाम हस्त राजै बैजंती माला॥ सोभ महा सरस पा
र विशाला॥ उन्नत युग मव स्थल सोहता॥ मेग ल
रूप कुहिमन मोहता॥२१॥ नाभी गंभीर सुहावत
बरल पाश विहु गुह मन भावत॥ विहुतक चूटा मननहूं दू
के ला॥ सांऊ मेघ इव तन के विमल ला॥२२॥ आदो हता॥ कुटि
रस धम रमणी कमत शोभ निजु जलनिते बोक कलाय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भानेकविरधमामोरू वरतेभा॥२५॥ चौपई॥ ला लन
हू मयाकरखुभ पावना॥ जिघासहू जाहू जनभावना॥
दैनहार निजदासहि मुकती॥ पादपद्मकरिसो भक्त
नुकती॥२६॥ मुनि निर्मित कोदंड करि माही॥ धारे बा
मदाहू एक काही॥ स्वर्णपर वलागेसो लीने॥ तिमहि बा
ए मनोहर रजीने॥२७॥ पीठ भाग सोहत मनोहर॥ त्ता
पिके धयुग यौं मधारे वर॥ कस्तूरी कुंकम लौ गंध॥ च गा
दन सायविलेपित कंध॥२८॥ ध्यानन मथ कोटि जा सुंद
वपु॥ रघुनंदन सुंदर नहि अस ऐसा॥ गोरवरण खसें
भूषित॥ लषमन नख सिष सेवत निरदूषित॥२९॥ दोहा॥
शेषरूप सेवक सदा बंधु करत तरति सेवा॥ जो जवलषपरते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पा॰ परे सब देह हिरा सलेवा। प्रणा बौ पर्द। जो जन नस रएग
गति प्रभु आवैं। तिन पाल निहि तेस दउ देता वैं। जे सुखी
लला दिक जुग घर हीं। तिन बत सल सा म बहुं भरहीं। जा
दि लावण्य ताको रिकि कंदर्प मुस का वनि सह वा कहिं जल
ष पहि। इह बिधि कोमल पुरप्रभु नायक। पेषत हरं जन क
पुर नायक। श्रा रामहिं लषनि हिहे रिहेरी करा। बो छाति
सुख जा मात भाव धरा। पुन पुन निर षत रामस रूपा। स
बे भान नाहं सत अनूपा। हाव भाव कर वत बहु भांती
राम मोहं हित सत रमा तीया। का वित रामहिं निरषत नारी।
गुरुष्यं भुज धाव तउर प्यारी। श्रृधा दोहत्या। वार बार उत्वा
सले भरत हृदे उत कंठा। कोउ क्षा वत राम को देषि मनोहर
गे। वपा निवपड़ी। मद नआ कंती एकु कुमार हाहम सुदरी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुभानन लवान्ह॥ एको तें सुख सहुँ का करिके॥ वहल स्यलमें
इनि को धरिके॥३६॥ ड्रोपान करि यह महइन के॥ पाएं
सोंगहि मध्य सुनन के॥ कोइ कराम हि पसपति इह विद्या
निज करि के गुल करकरएं मधा॥३७॥ पीन पयोधर नि
जेदर सावता॥ रामहि पुनपुन मनउ पधावता॥३८॥ रामह
पकरि मोहत कोउ॥ निज अंचलि कांगहि निरषत सोई॥ बे
सरमा कमुकत इकु जोवत॥ पुनपुन रामहि दस दुःख बो
वत॥३९॥ दोहरा॥ दिषरावत निज कंचुकहि सुख ऐसर वह
बसा था॥ मुकत माल पुनके कठ दिपुस न सुख मुजाउठात
४०॥ चौपई॥ लषमन फिर करि मुख कोऊ निहारत॥ सब
तुनि करि दिष्ट पसारत॥ नीवी मुकत बंध पुनकरही॥
लषमन निजरा गे निज करि धरहीं॥४१॥ कोइ कुन पर गो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

या

ठरेत घर॥ निज चरन कहुं जे रत न जट न वर॥ कोक रि गा स्त्रिआ
दर या निहारत॥ दसन पांति रंजित तसु निकारत॥ ४९॥ कोहू
कमल पुहप करि जोऊ॥ राम दृष्टि बावत फारत सोऊ॥ कि
कुत्सक रि निज मेल निहारत॥ ऋा लिंगत बाल हि नहि वा
रत॥ ५०॥ ये ऐरति सौं सब पेषित नारी॥ राम किशोर ल
षनि पर वारी॥ सीया सुलोचनि बार हिं बारा॥ कि मय बत सु
दतन जाइ संभारा॥ ५१॥ सोरठा॥ कोशिक ऋायसु पाइ म
दर माहि प्रवेश करि॥ राजतनय सुनि राइ भोजन कहुं लेअ
निक विध॥ ५५॥ दोहरा॥ पुन गावने प्रभ राजमहूर स्याक
तप्रकास॥ नर नारी बालक जुवा बिरध अनेक किरा स्या
५६॥ इति श्री सतोपाख्याने सूत श्रौनक संवादे षडपंचाश
तमोध्यायः॥ ५६॥ अथ पद्य॥ कवित्त॥ दोहरा॥ [illegible] है प्रभु को

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करहिं पूजा मन रामजी की सिखा कभाइ सुपाइ तोरहि धनु जयमाल
लै जनक सुता पहिराइ॥११॥
सोधमायक है सोभ रना॥ राम चंदु मुखु अग्रानक दिव्याइ तनमाल
तु सर ना॥१॥ सोन कऊ वाचा॥ सोवइ॥ सूतन महा मति मोप्र
ति कहिये॥ सामवेद बोंह जिमन कहिये॥ धनुर भंग जिमकी ६
नो राम कही॥ मुकि देते सेर सुन नत बिराम कहि॥१॥ सत उवाच
ताने तर बिदेह नृप मोइ॥ लीये बुलाइ बंदिजन कोइ॥
दिन में सकल नायेनृपा सही॥ सब बहनि बहूदरु बचन प
उका कहि॥२॥ सब भूप निके मंद रजा कही॥ कहे बाकम
म मा गसु धारक कही॥ रंग भर मिस बगा बनहु नौ पती॥ जरहो २
धनु ब धरि वै गिरजापती॥३॥ सत उवाच॥ तब बंदीजन नाव
ने तब कही॥ बदति नृपाल कहि बचसु भमब ही॥ सरद्दल नृप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गव सिंहूं नृहिहीं॥धनुष सदा सिव परि उजर हिहीं॥७॥दो
ह॥ताकरि बचस बुझव नकपिनामार भुभुजे नोइ॥ज न
तियबाला बृद्धि:पुनधनुस विधगोसोइ॥७४॥चौपई॥
मुनि निसहित कौशिक रिम रुमु नि॥ते सरायवराम लष
न गुनि॥सिथि लाम्रधिपति जनकू नरेस॥यचायो गाढे
त ठारे तेस्र॥६॥धनु मखाडू सिमट जे लो मू॥व देवा कल्प
तिनके जोगू॥मदन कदनिसु निम्रायमु कानी॥ता तेमैंप
रतगणाठानीमाठ॥तिहृ तेपा छेभयोक लेस॥धनु नतोर न्
पभयेभदेस॥मोपएश्व व एकारुसबलोका॥तोर पिना
कजो देषत लोका॥ट॥दि ऊं नाहि सीता निजकै न्पा [illegible]

बिधसों करहु जग धंनवा ॥ सूत उवाच ॥ इह सुनि करि सब
जेन तब बोले ॥ नृप प्रति सुंदर बचन अमोले ॥ ८ ॥ मोरा
जेन प्राक्रम हम निरषा ॥ स्याम गौर सब भरभुज परषा ॥ अब तो
रा मन चेहु करि बल रषिहु ॥ निरषि सिय दिबरा बहु त्रिमघ धनु गिराड ॥
९ ॥ दोहरा ॥ तिन्ह कही बानी श्रवन करि कौशिक जे मुनिराज
के हरु तब राम सों प्रीति युत मंजहु धनु रघुराजा ॥ १ ॥ चौपई ॥
इह सुनि आयसु तब रघुनाथा ॥ करि प्रणाम मुनि जो देहाया
जाइ चाप के निकट सुपेषा ॥ तिह पाछे प्रभु बचकहि एषा ॥ १
इह धनु महादेव करमानिया ॥ महादेव कहि सुनो बखा
निया ॥ आदि पुरातन बहु काली ना ॥ मघ ते जी रए मैं लब ली
ना ॥ १२ ॥ इह कहि कहि करि विश्वामे सा था ॥ धनु उत्तम गहि लीय

रघुनाथा॥
निजहाथा॥जाकरि दहल हिहलोपुरारी॥क्रहरि खुपते हिमउ
ठाड भुरारी॥५३॥पनच चढायो सदसि मेकारी॥सखके पेष
तन सखरु नारी॥४॥चोतुर तन मध्य तेतो मा॥समर चाप डवपुष
पविद्योरा॥५४॥दोह॥ताना कारि शब्द महत भयो बधिर भये
सबलोका॥किंचित भपरि तिन भेकंपत कोन विलोका॥५
रि चौपई॥दुंदभी बाजे सुरपुर मैं॥सुमनन वृष्टि लगि मिथु
लापुर मैं॥नवहीबाजे बहु विधबाजनता॥पुरीजन कमनुसा
सनिभाजनता॥५५॥अर्ध भयो जय जय रावा॥सकलक
हत भये जहि तहि भावा॥कुशिकतनय सुनि राजा कीनी॥व
रमाला सीता गहि लीनी॥५६॥बहुतिभई राजहंसी इव॥मर
कलनाद करत हंस संग जेवा॥जनकसुता आइ राम समीपा॥गल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जयमाला अरपत दीपे ॥ ध ॥ नागनर नर लोगन बरसुम
न ॥ बालक बृद्धि तिया मुदित बही ॥ जानि विवाह राम
रु सीता ॥ हरष भये अस सकल किन तुपीना ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ जे
जे सिमर ते ते नृपति ग्राइ जनक के द्वार ॥ देषि मलिन भये
राम बल गे निज निज आगार ॥ २१२० ॥ चौपई ॥ धनु भं
जो पिषज नक नृपाल ॥ मुनि अस राम लषि निसुबाबा
ल ॥ गज चढाइ कीये नगर प्रवेश ॥ कीये स फल सबं कु
नरे देस ॥ ३ ॥ दीये दान अमित तिहि जंजा तिरि ॥ अथ
कृपन अम दीन बरात दिष ॥ याचक जनकां गृ एहि अनेका
जैकाये तहि गनन न विवेका ॥ ४ ॥ ग्रह सब कवि राजा पुन
हरषो ॥ परम मनोहर राम हि लिष्यो ॥ जन्म ते अवतार ए

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दो॥ एरएल परमानंद जो ब्रह्म सच्चिदानंद॥ सो जन तन धरि करि चरित्त पवि
त्र दिकसानंद॥२९॥ इति श्री सतोपाख्याने सूत शौनक संवादे सप्र

पंचा
शान्त
मोध्या
य:॥५॥

पा केहि तहूं॥ राम कहि निज करि दीयो नृपति हूं॥२॥ श्री आसदन वि
नी वेश करि इ ब्रिठायो॥ एजा करि सत कार करायो॥ सो दिन राज
मन्जन नंद सों॥ भयो विती नछि ने र कहूं दसो॥३॥ दोहरा
सूत कहैं गे शौनक हि राम जानकी व्याह॥ इस अध्याय श्र
वण कर मन पाव हि उत्साह॥४॥ सूत उवाच॥ विमल
प्रभाते भय पाछेते॥ निरमल रवि उदये आछे ते॥ मिथिला
अधिपति जनक जु नामी॥ राजा प्रात क्रिया कृत ठानी
॥१॥ पुन विश्वामित्र हि उपजायो॥ विनती युत कहूं बचन अ
लायो॥ भो स्वामिन अब दत प पठाइयाव हि दसरथ हि
भ पबुलाइया॥२॥ जु मर्षि श्रादे यातें आवहि॥ एमुनि से
नास हित सु हाव हि॥ विश्वामित्र उवाच॥ कोसे हहि राजन ४

हि

दूतन्हि ॥ पठिये तुरत जो आव समस्तन्हि ॥ ३ ॥ हय ग्रा करु गवा
नेक विधि आवहि ॥ राजा पुत्र समै नेक धावहि ॥ मंगल पत्र आदि
पठावहु ॥ याहि बात नृपन्हि गाहि रतन लावहु ॥ ४ ॥ ... हरना ॥ दूत
पठायो जनक नृप महत पुरुष तत काल ॥ के दिन मग अवधे वा
सक रिपुर साकेत पुत्र ताल ॥ ५ ॥ चौपई ॥ नगर माहि गुरु रा
जा द्वारे ॥ प्रात भये दे मुद द थापे ॥ नाना रतन विचि
त्र तोरण ॥ अति अद्भुत सदन मुरूर रचे गना ॥ ६ ॥ हय
गय शिवका स्यंदन नाना ॥ कोऊ आवत कोऊ गवनत जा
ना ॥ अनेक पदातन जात वखाने ॥ नाना तोरण प्रविशन्त
राने ॥ ७ ॥ द्वारपाल मिलि दीये टराई ॥ आप यथा नयन प
हि सुनाई ॥ अनुसासन ते राजन दूत ॥ सादर भूप मध्य ... ता

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रूपा॰ ॥ शाम दल राजा पहिं जाई। प्रकरी प्रणाम सिर देर धाई
हाथ जोरि बोले चरु बानी॥ ए हुकुमारी सुनि मुनि ददनी
॥ दोहा॥ आदूता ऊनमुनि॥ भदु होइ महाराजनु बसु कियो
बचन समारी जनक सतानंद कुशल युत एकुत कुश
ल नुमार॥ १॥ चौपाई॥ महाराज कौशिक मुनि साथा
लछमन सहित तबे रघुनाथा॥ नृप सम्मत मुनि ये स
देस॥ जनक डोरले महामते सं॥ १२॥ शिव धनु मंज
नकीय रघुनाथ॥ मुनि देन खबर सनन नर नाई॥ जनक
उवाच॥ एरखकी न पुनत ज्ञा विदंतं॥ नाम जानकी कहि
मुहि दंते॥ मम कान्ह मजा पूतनु मोरे॥ ग्रहण करी धनु
मोरत बोधा॥ १३॥ नुरत्न आगमन नुमरो बांकुता॥ बहुसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सेनासंयुतनलोंहुता।। पुत्रौंक विरि रिबीयनिकेसा
था।। गृहएक वियमम जनव्याना या।। १२।। जनक
महातम कवि संदेसा।। प्रियतना कावरक दूतन कहेसा।
सुनत उवाचा।। चरुके वाक सुनत नृपसत मा।। भय
मुमोद बोला वचउतम।। १४।। कंत्रिए पुनि नृपली
ये बुलाई।। मुनि वशिष्ठ गुरु अनसुरवदाई।। राजेभवा
चा।। सिगुरु इहआये हैं दूना।। जनकपुरीते ले सुधि सा।। १५
सीता स्वंयं रामक विवाहा।। कहत ए हृषउर उतसाहू॥
तुम कहे इसचेयो गए जे होई।। सोइ काज हूलग न सुंदर तोई।। १६
सुनत उवाचा।। दोहरा।। इह सुनि वाकनने सगाके सोमनप
रमउदार।। कहत भये केजी सकल वशिष्ठ मुनी वचसार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

५२ सपा॰

१७॥ चौपई कीनच हिय राज अमं वंधा॥ सम
धिजन कसैरा धोभनिवंधा॥ नहिं लेशय यइ हु
नजन न पालन ग्रहै नाथ दनिकट तु तनालु॥ १८७॥
सजहूँ मन तंगालिय छन लिपरातनामै सिन्धु खउ रत
पंता॥ तिमहीं सोवका मनहं शवना वहू॥ पट
हाऊ ब्रोम अनेक बजावहू॥ १८४॥ दोहा॥ भेरी
मरदल काहलानुर ज निसान अनेक॥ सकल
बजे ऋब जाई यैवाहून जन सविवेक॥ १८५॥ चौ
पई॥ पर जाक सहृग ऐश्वाम नायो॥ बहु विध मं
गलकर स्तुत गायो॥ जु ह कहि पार्टत नृप ब कल
निज मंदिर सुभ की निर्हु गवने॥ ऐ किंसरल पा

चरतुमित्रा रानिनिहि ॥ कैकेयी तिम्हिही अपरा मोहिहा
ह्सतभूपती वाकउ चारा ॥ सुनहु सकल तिय ब
चेन ह्मारा ॥ २२ ॥ जनक नृपति के पुरि के माही ॥ रा
म लखन निवसंति अब ताही ॥ मुनि कौशिक अनुसा
सनि पाई ॥ भंजो धनुष न तन्हि नर दुखदाई ॥ २३ ॥ स
व भूपति के मन धनुख सारी ॥ तोस्यो शिव धनु सब नि
निहारी ॥ जनक नरेस निज सुता दीनी ॥ सीता पूरन
सुंदरी चीनी ॥ २४ ॥ दोहरा ॥ ताही मन्हि प्रभु लायो
ह्मकुं हे तबिवाह ॥ भूबगवनहि गे सैनयुतमून
धर पर मउछाहु ॥ २५ ॥ चोपई ॥ ६ ॥ सखिकरनजाते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सं.स.पा.

गनि विप्रा। परमं हरखु पावाकम लानि विप्रु
न पुन र कृत नृ प तै कात हि।। प्रसु रकत मुख
पुलका वले गात हि।। रघ्यं अनु उर शोभवि
ब रोजा।। नरना वीजा हि हर ष वि राजा।। सुभ्रा
गाव तकें कृत मुद ता।। अपर वजाव तने सेउ द
ना।। रुथ।। सुभ नय नान् रान बढु भांती।। कर
नेच नेक करम जिम नोती।। अनुज कुरवन ना
ना रुपका।। सुख मन केगां ताप्रय प्रका।। रघ्यी
सा वकर तकोत्त दल पुनपु।। मन नाजरा
र यमु प्यमु ना।। वक्त गुण निदन बढु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दीनेंा।।दीनकूपलगुनहरषनलीनेंा।।रस्या
दीहरा।।स्तुमनदृउदिनलगा।तिस्तुमकृनम
यकेरपगुरसा।नुमा।गुरनेबाहरपुरुषमत्रियम
नमगुहनफनिमह्या।नैंपडा।।वशिरहरवाम
देवहुनिडेमा।।च्छा।नगुनीतिमगुनीगुनीसा
गवनकरनमेगुरनेबाहरा।।जनवाजेत्रीसर
वहुवाहरा।।छा।।वलेवजावनक्रतिकपवंड
रसो।पंचतरनवंवडा।।कियुनसाजमगुप
यकवला।।ये।।दमगुनवोजीकुवरहलाये।।२२
माठमहमरयमुंदरमाजो।।गुनदमलवपदा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

४५ स.प. नविराजो॥ वामधुरदीनर्त्तकामुहं सदा॥ प्रणाय क
भूननामसाय युसंस्त॥ ७३॥ कोप्याण्प्रदेवले
नभेसंगा॥ परशुकलधनराशी करि वेगा॥ नि
कसेपुरनेम बहुरी जैजा॥ केमा लकुद यपालि मुद
मना॥ ७४॥ दोहा॥ मंगलमयनन घरबस
नहुचकलशा वरसी साता विवाह करि मंगल
किंगावतपुनपुनहथी सा॥ ७५॥ चौपाई॥ सबकै
मधुर वलन अपाल॥ चामर कुव दिसंडे न
माल्ला॥ नरनारी करीकिरसिय रो जा॥ मंगल
चाहत सकल समाजा॥ ७६॥ ऽ इह विधवक्तेम
मुदन

पा ला॥ सेना ग जक रि यो भ न जा ला॥ पं छमा
रि कोइ क करि वा सा॥ कोमा लभ सिप ठ र म ऊ मा
सा॥३॥ भूते जस्वी जन कारि पर वा रे॥ भेय पुत्र मि
त्र ला दारे॥ बिबिध पुसा द जह रंग मलीया॥ छ
ले कामक त न धु जक म नी या॥४॥ दा॥ दो हरा॥ कंच
न क लक्षा द्वि राजे सी ती तो र न ना ना॥ भांत म बे दन
वारि सु हा वहि दी थे भ म सो बहु जा ना॥५॥ इति श्री
म त्सो पाख्याने मत्स्य नयो न कस वा रे ब्रह्म पंच
म त्रमो ध्याय:॥५॥ चौ॥ कवि बा का॥ दोहरा॥६
निजा ना म दमार स्यन्द प तिह र ब तन अनक न वे सा॥

४५ स० प० किलिकसंहिं असुरवइपमुहकयाणोइ ध्यायेसम
३ ॥ स्स तउवाच ॥ सौपइ ॥ स्तुततत जनकयाजणि
गमाई ॥ पुज्जादेवमसहितमसहाई ॥ वलेसा
वनिनपकेहेना ॥ किजपुरभूतिस तस्सनुजस
मेना ॥ ३ ॥ कृष्णचरेकोचरेमनेगा ॥ कोपिव
कोरयनागारेगा ॥ मिपुलापुरनेबाहरयव
नो ॥ लवदेषतमेपार्थवजाव नो ॥ ४ ॥ बहरणर
थरि[illegible] तिपदुतमाज्ञा ॥ निरविरहरषमासहि
तस्समाजा ॥ उततेमजतेउतरेभुयालु ॥ स्मादि
विष्टपुकततनमपाल ॥ ४ ॥ खिनाकरपरवारत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गे बहोरि ।। ठाढे भए प्रेम मिपरन बहोरि ।। जनक
मन्हा सुधन्नृपति हकाला ।। पादपदम केति
कनन तकाल्ला ।। ४ ।। दोहा ।। प्रेम सहि मकरंद
गुली जोभी मा प्रस्त्राय ।। निब द्रसार स्त्रा जा
हर घभु जना रि कंठ लगाय ।। ५ ।। चौपई ।। सकी
कुमार लन्नपति के ताइ ।। तेंा हि सकल समाज
सुन्हाई ।। मुनि वसिष्ट के पद पंकज पुन मास हेण
न सो ए क विम धुना ।। ६ ।। विस मि जनक राजा द पा
र च कहं ।। स्त्र या पत वहि विरि सार च कहुं मा
निज कहि सैंा गहि लीये व कहि ।। हार क नि ल मोर
च हर घर ई ।। ७ ।। बहु विधि बाजे बजे रसाल ।। नि

धरूमा रतनन्नरतकुपंनविसाला॥मामाधरतवेद
न जैनाना॥निजनिजेकानीगुनसुबखाना॥
ट॥इहविधपुरपुवेमानपकीना॥दानयथो
चितसबकहंदीना॥पुरबसेसामग्रीभरिनाना
शोभतवेकुसुसावनजाना॥शीदोहवाधपुरस
मीपजनवासेदियसेनपसैनसमेता॥परवेस
निशोभतसहसराजाजनकसहेता॥पधोवोपडु
ताउवासमदंदमारयभूपा॥कीनवासबहसे
नअनपा॥जनकभूपतिनतेआयसुलैआये
ग्रेहनिजजनकायसुलैआए१॥नानाविधिकिपाकु
सुधारे॥बरसदधिवंजनकसुगतकारे॥सीनाके

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भोजन करि निराजन ।। पठई सकल सिद्धि नरकि जनत सिन्धा
१२।। बहु बिधि सामग्री करि सोई ।। सो वन भई सो नहि
होई ।। ताकहुं निरखत दसरथ राई ।। बहु विमल मिलसिव
विसमय न पाई ।। १३।। यो त्रिपुरुष कहुं दुष्कर नाही ।।
यो गिरिजा इह जनक सदा ही ।। इतने अंतर महुं मुनि
राई ।। विस्वामित्र विप्र सुखदाई ।। १४ ।। दोहरा ।। रामल
षनि युग भ्रात युत आये नृपति समीप ।। सो दल ष्यो
त वैसे नक निश्च द मुत पर सम सही पाप ।। चौपई ।। को
सिक बिकहु आवत निरष्यो ।। संका हीनि किकहु मा कि
कि हरष्यो ।। उठि करि गुरु हरषी ये युग चरना ।। मुनि
कौसिक के सम रघुपति परनाो ।। नहीं ।। राम लषन सिर नाके

४अ०प

पादे॥ गहे म्रा इउ रअत म्र हलादे धुजा साय
हो ऊ तात रुठाये॥ प्रेम अम्रा हितने प्रलेउ रलाये॥१०
लोन्हु अवारि ह रबसा म्रायो॥ परम प्रेम करि सुत नि
नेवायो॥ सुनि सहमतु जे वठाइ न पाला॥ कहत अ
ये वृ ख न रसाला॥ १ च्यो॥ विप्र वि से मे सिष्ट पातु
मारी॥ तिन हीं म्रसमे व धमु धारी॥ मुम से साधस
र व ससम द र सी॥ परस्तु पका रे करु एण करु रसी॥ १०९
विस्रा मि उ उ वा च्य हे हरा॥ भा गय वा न के भा गे सा
मव विश्व ति उ हिं जा हि॥ नि ज सुनली जे ज्व पवि वरद
नै ये सु कि पा हि॥ २० ॥ शिवर्द॥ सुन तस कल भ पो हर
घन लो का॥ राजा पी न नि मा न न म्र ये ना का॥ इत ने मंद

छिजवरमतिमाना॥सतां नेहमु निम्रम निपुभानां॥मा
जनकुमतेकीबानेवलाडं॥कहतमयेशितिसबनि
मुहाडं॥मानाने दउबान॥मानहबैंकुमा जनिकेराजा॥मा
गेकविमुतममरि तमसमाजा॥मरा॥कवियुनाबनिमेंडप
कहेंम बहां॥संगले नुपछिजनामारिसबहीं॥दह
मुनिमहांराजहरषायो॥हुंदभमारि बजेंबजायो॥४२
९ बामदेवीबनिककबेदगा॥सकलजनेदतमयेविमि
दगा॥रततनिनिमततमरबल जेडं॥सबकुमारिमवि
नक्रियनेडं॥मिधा॥देहरा॥नामभक्त हकियेपुरयहमिसु
लाकोनूपचाल॥गीरबाएसमपुभाविहगामनानाविन
रजाला॥मधा॥चौपई॥नूपनाामसुनिहेतबिबाहमुर

८
वि.का. नमयेलरिम्हेोइउअहल्हा।चारिकुमारतिनिरषनिता
२८ डीअमारनारिइनउनमेमुदाई।हरषनननरणमंदिर
ठाढी।देषुनमुदनमहेउरगाढी।काचितपरमंनुरी
१८ नागरि।देष ... निरामहेमुमसाभागि।१७।विष्णु
देहैमानवंरीसंभारा।गिरनपुहपुइनउनविनुबारा॥
श्री गुनिमहलपहिरतिएक्हा।रहोहायडकुगयोवि
वैकुारदासवरचलीजनाबेउाधी।जबलमिाप्रापू
भई नदेरी।काहूमंजनभीमला।का।एकनेनडुरी
गुनिचाका।२४।हेरु।हरु मरकमिसंरुहिनाइलो
चननधावीना।हि।उहिमागीतेननकालहीवानायेमुखचा न
हि।क्रो।चोपई।नहांजाइनिमहसिलमाई।केहिबेष ५
ऊनेवि नीकी

नेक बिसरावा ३॥ पुन सब लंबन नी न रा
यके ॥ ॥ थि किते करि पिथि बिनान वना हरको ॥ १॥ धु
को बाला कुसि व लीव रा ३॥ ७ ॥ नेक रादे व वि र
घु रा ३॥ करि किंकल बांध निरखी लागी ॥ ॥ पद पद
परसि र परम सुभागी ॥ ८ ॥ कोइ कहु वके सम
घ पहिरे ॥ चली भाजनम्रानंद मन न गहिरे ॥ कोइ
केतु की सिर पर धारी ॥ मृजा लक करि रहिवाई सा
री ॥ ९ ॥ तिनके मुख सासि स्प्राभा धारे ॥ एहि रतम
ये गवाकुसमारे ॥ गमानायर घुबर हि पिलोको ॥ स
इस को रकाम छवि तिन को ॥ १० ॥ पुन बाराजन कि की सी
सरति ॥ ३६ ॥ नीलम निपुन भाजुरति ॥ मलिपु

३॰ सं॰ पा॰ कनाकी मस्तक दामा॥ मौलि धारवदे उन्नत
नासा॥ छ॥ दोहा॥ ऊरध पुंडर तिलक कर रेखा
ललाट दीह॥ कुंडल मकराकार शुभ कपोल के
शोभ सुभग सीह॥ छ॥ चौपई॥ मलिन मुकुता की
मबली कंठे॥ कौसल्या मन लिउर मोह ठाढे॥
मेखुल सतनमनि के केयूरं॥ जो गजभुज दंड धरम
नापरं॥ छ॥ रतनि जर्टतन के कंकन सामाही॥ पु
हि रदन रत्नकुंडल कहि जाहि॥ पंकज तीय सामा
लेकनवारस॥ नाना मरतन नतिशोभित नस्यामल॥ छ॥
कंठक मनरादिवरमणीहै॥ मणिमयस विषधारके
मनीषे॥ छ॥ कवपदपे कैसोरह उपाजेश भुजकौ॥ जा
जे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नमनोहरजानै ॥४॥ दोहरा ॥ नैनकरललि
बोः लके सिरबतन भई श्रीरा म ॥ न्यारि सकल हरब
न भई मनका ये विश्राम ॥४०॥ ऊसिखी सतोपा
रथाने सन तथैन कसे बाधे एको नबषर सो था
यः ॥ ५सी कवित्त ॥ दोहरा ॥ बुधिबेल सिषुलापु
षीसैसर सूमा जेर हुना था ॥ नथाय एसाहाबु
भु कुसधाये गुन गो ॥ ४१ ॥ सतनउ वाचा ॥ दोपद्र ॥
त कथपरस्पर बोलावानी ॥ जासुलग मिबुधरामे
लगानी ॥ शिवधनुसुकनीन सिसुलेखादे ॥ भ
यो काज इह सिमरन रे साहि ॥ ४२ ॥ जो इह प्रकोत न
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प॰स॰पा॰

हि कवहूं॥ इतकों नामकामु वकतत वहूं॥ नारायण

सालान हिराम॥ लक्षमीप्रियापतीसीयनाम॥

श्यामनवंदुसूकसीताजीको॥ होतन आह वुद्धि बि

धकी को॥ इह विधकहहतनभारी बेना॥ सुनितें

जातकुमार संग सेना॥ श॥ लव अ्पातनिसरिकस्मि सिपुन

रमा॥ कहा स्यपितासहि तसुनिकाना॥ चले जान

हरषतनपुरमाहीं॥ अंगराल होत जहांजहिं नाहीं॥ ध॥

दोहरा॥ नरस भान सकुलेनरीतिरचतराघवजाइ

सोइ नरीनरशीन कहि सुविसववन नसुरषपाइ॥

पा॥ चौपई॥ भवनननटीरघुवरके आये॥ हासकरत सम

वेअनकअनुसगो।।जानकसमसहि मायापरहीसहे
नपुमनकापभुघटरहीं।।धा।इह विधदमानुष
राजनिराज्ञा।।मपुवेशीतनयसह आज्ञा।।गयो
मसांमनिनपनानारे।।समधीजनकजहेमा।।ग
वे।७।।मुनि विलमेगलोकरिभयेशोभिना।।वेदपा
ठनिमहीशुभमोदता।।आमोन्पजनकसोमानु ने
रा।।बाहरनिकसेजनसहचानुरा।।७।।अधिकप्री
तिसें पगमोनानहि।।तोहीसकलकुवरनिजकन्
हि।।जनककरावकोनालेउआनु।।लदमीनिधकि
हनामपूछानू।।श्यादिहा।।दिकरवलेबनलाए
निजकरोउनारेनामया।ना।।विधसबनिकुमारवनि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पा.स.पा. पुनदसारथअम्रपाना॥१०॥चौपई॥जनककअप
सबनिरषिकुसलाना॥चितुरवधूहरचनाम्रुलकरा
लोककीतिकरूबैदविधाना॥निजगृहकीनप्रबे
समहुमाना॥११॥गुरूदेवताकराइपूजा॥अम्र
षएअषितबालकलामना॥नामनारचननिज्ञरतविध
नाना॥तिनकरीभूषितबालमहाना॥१२॥मुदु
तनूपतिमहुपर्कदीना॥मणिचवगामहरवमाली
ना॥सीताजोउदिविक्ररवाई॥अम्रपदीयेपुकनारि
रघुराई॥१३॥कुसलतरकेऊउपरनाघोनी॥मुषप
दधारेकृपावसोनी॥सतानंदबुधजनकपुरोधा॥
तिनबनिबरनावकाजनबोधा॥१४॥दोहरा॥सर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यसादीनाथिकुरञागनिमाहिंडुनदीन्याआज्ञा
दिकबहुडुखलेसुरगहिनिजठांकीना॥५॥वो
पई॥रामनृपमुकताकोवोकपुराना॥मेडपपसिरभुम
बेठलाना॥सीताकेनेंआनंनताहें॥विदेहराघ
वेबानिकहीा॥६॥वनमोहहडूहलहमीसीता॥
हैतुमरीफरगुहलसदीना॥तुमनानायएदेवगु
साई॥पवनेनोन्नरघगहेसुरराई॥१७॥सीताकर
निजकरसेंरामा॥गहेहरषमनजानकीनामा॥
तिहखबसरयोभिनरहुनाथा॥मेडपजिमतिप
तिरतिसाथा॥१८॥सीताकरिसपरसनेरामहि॥
भयोरमासउदनमनबतामहि॥राघवहायहुहेते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स०पा०
५२

सीतरक्षितउपजीवतमानाहिंसतप्रीतिरिशा॥२५॥आदो
ह्वा॥लज्जाम्मनप्राप्तमई दुर्ह्रविलोक्तक्ष्मणा
हामध्यक्कोयानेक्वरिवोः लक्ष्मीतेनतारि॥२६॥
वैपर्द्दा॥हेतम्भयेवदरवधूनदा॥३०॥जेनम्मक्कनल
धर्मेडुपमाहे॥पाहुतेस्तीनाम्मकरूता॥काशीप
रक्कोनाकृविपुण्यनम॥३१॥लोतम्भयेयतुनिवच
ग्रायतुने॥पुत्रपुत्रमोक्षयोभतासुनि॥स्वता
नेदत्तगुरुशासनिपाइ॥पतिदेवतजाजकीतुह
डु॥३२॥चेहमूर्छीलाज्ञालेहाथ्या॥३३॥रेस्मा
तीसामकस्मात्॥स्त्रीपतनहृदयोधर्मिताई
हविषबाहुतीदुदुवनिपाडुं॥३४॥हृस्मकेदन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सनमुखसीयाके॥ उतपलकेइवकरेलीया
कैमुनिकमलदृगसीहोंअननिरखसो॥ जुगखजा
नकीमुक्ताबनगम्यसो॥२४॥ हवनधपगुनप
रलबरना॥ भयोसेवनतेमुखसीयललना॥
केन्मावरधुमायापतकीने॥ कनकासनविजन
नरिपुबीनो॥२५॥ बेरना॥ द्विजवेदगुदेवासव
लहदीपुरबसलोका॥ केगलछबि बैकैकरनव
रबधूयाकेजोगा॥२६॥ सोपडी॥ ताकेनरबुअ
नकेनरेस॥ ब्रा॥ कुयलछमनप्रीतिसरेस॥ सि
हितविधानउरमिलाकेना॥ लछमनिकोक्षे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पत्र
सपा॰ रषी निज जन्मा ॥२७॥ भ्रमत फिरि बहु विसनेह ब्रुता
वा ॥ सुनाम सोऊ वीताहि दिलावा ॥ श्रुति कीय तीक्ष्ण
निविध मनु सारा ॥ दीनी रिपु सूदन सारा वारा ॥
२८ ॥ कुशध्वज भूसुत निज कैन्या चारुहा ॥ सो भूपत ई
कल नृपवासू ॥ वलि लिषा ली रघुनायक ध्याय दी ॥ [illegible]र
प्रीति जनक तनया दी ॥२९॥ मिथुलापति [illegible]सु
रवाप्रियकीना ॥ तापाछे तेद यज्ञदीना ॥ मिमाते
दशरथ सायसु पाई ॥ वामदेव पुनलीये उठाई ॥३०॥
दोहरा ॥ लछमीनारायण उभय पूजि मानु [illegible]तु
हाड़ ॥ ययाति मायपरमानति न कहि यित भेरघुरा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

३।।३३।। इति श्रीमनोपारख्याने सूतशौन
कसंवादे जीवनकी नाम विवाह वर्णनो नाम
पंचदशमो ध्याय:।।१५।।कवित्त।।दोहा।।
इसमय धारे इह कृपाल बरनी निधि वरनाति
हास कर हिं सीताराम सौं सब मन मुदत्ता धारि।।
१।। श्रीमत उवाचा।। चौपई।। सिंहासन तहां दि
व्य मनोहर धर तहां राजत मे बालम सोभा।।कदा
गाद राजत सब सिंगार।।मूलो मन मा हि कजा हि इक ठी।।
१।। बुला एनी संजा ली जोडी।। इंद्राणी सब सब तीसरी
अन्य लोकपालनि की नारी।। तहां इक अंग्या इम दई

प०१२पा० साखी॥१॥नलहंसापूपसमागंधर्को दिक्षा॥वा२व
ज्ञावतकोन्लसादिका॥करतनको रमभाव
दिषावतप्रकासेकासमनुमेदवस्तवता॥३॥प्र
चायेअज्ञनवकुभंती॥सोकुमारनतिमसु
परकाती॥तिनहूंनघनेउहिमतिपावन्याल
षमीतिथिकीसातिसुहावन॥४॥दोहा॥यामैसि
द्धिनामहैज्ञासकोसरबीसाषतजोंरि॥डनके
राइकीवृधसोलषमीतिथिपुयासारि॥५॥
चौपई॥लोकविषैजिन्हमदमूतनकपा॥सोविन
सवैभयकमलनपा॥ममचेदकेमातिनकाइ॥

सनमुख थिति कर जोर स्तुत नाई ॥८१॥ कहत नम
ई तुम किन स्रीमा मेरा ॥ निरखत म लोचन नैमैं जाहि
ता मेरा ॥ निज कर सौ तैं च न पी ता बरा ॥ लछमीनि
धि तीय कण्यत स्तुधां वरा ॥७०॥ सिखि दं: उवाचा ॥ म
घवैद मनदमा जस्तुनी जे ॥ मम कबचन नि उरमा
कि तुनी जे ॥ मेर रव नंद दप लम की तुम दं ॥ सीता
नाम बनाननाह मदं ॥७१॥ किंच नर जां च रिये
नुम को ॥ सतनु उरी हिय मन बहुम को ॥ हरमुक
किबी डी दि मउठाई ॥ दिन मई स्तुदरि खुराई ॥५२
दो हना ॥ लछमन नि पग हू हन न नपुनम अरनहि दे स्तु

५५म॰ पाइआसुकिकोपरजाेदेहकछुउनइहबिनैसुना
इ॥१०॥बिनउ॥बदुबिसुभावननिकरुंबल
सैसु॥नितवदनहिमाजैतमैजुलसो॥करसप
रसनेनिज्ञजानननको॥निकुमभमनुसकतभाव
नको॥११॥कूललनिसुरवहिनिहायनिरसी॥पा
वामोदवरानननभावी॥मुसकावतपुनवाकि
जआदी॥पजोदेहिमानकीजादी॥१२॥कैन
देकुसैहूंसंगचालुवायनतुमामपुरीग्रतिभा
लवा॥नातरसेवकहेडगुहवंसहु॥वनतवहमा
रसेवकमनसमहु॥१३॥मेरनमेदासकतपही

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ना॥ क्रिआ कि उर मिला सब किछु ही ना॥ ना के बाक
सुनत सब बना नी॥ भई हरख उर पुन कुसकानी॥
२॥ दोहरा॥ श्री राम उवाच॥ नाम चंदु इस पिक
हत भे मब र जा हम देहिं॥ भे बहु कब दूर हो मन जहि
तु त्रिय पुंग वले हिं॥ ३॥ चौपई॥ जनक सकल लो
गी हम न जानो॥ सिष्टि उपा सकु हैं मन मानो॥ सि
हि भो कुन ता हम जग माहीं॥ तें सिष्टि पिर कुर ले मा
हीं॥ ४॥ सिष्टि सबा चु॥ भो ता जनक से सहि हो है॥
हु है तु ब का सी नहि गोई॥ पन जो मदी यां की नी वा
हि या यो तिं न बदा मैन बिस्रा हियां॥ ५॥ श्री राम

प६स्प॰ उवाच॥ बिसरउ न तनि हिय ल्पा दिक मन बल॥ गज
बाजी सिव कारय न बल॥ दिव्य सकल जो बोध
तली जे आश्रपनी इछा हरन की जो पाप॥ इह बिध
राज गुन करउ कता॥ कहत भई सम हि संग गाता
सिद्धि स उवाच॥ महा राज मम भगवान हि दसी॥ तिस
ही मुरता को रस लसी॥ पात व भगवती कि रि सब देउ
उ है किं कर दीजिय सो जा॥ मर नउ वाचा॥ दी
र ना॥ सो मुनि देवी सारदा सरवी मनो रमता॥ सा॥
कहत भई ब्रह्मा सो निज मुख कमल बिना॥ सा॥
रा॥ चौपई॥ नाम निकरयि ति व्रजन सो कुल बता॥ गु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रक्को भुजन पर धारत जुगवना॥ स्याम दोहा चु॥ इकमन
पिगवनकरव सेगसी ना॥ चुरी नुमार किर विस
हपीना॥ चयु॥ सो रठा॥ दरसनकरहों जाइ नमी
मात नुमार जो॥ जनक पत नि छि समाइ एहु कह
तेहैं परसपर॥ चयु॥ चौपई॥ दसमरथ राजा गौर
सवी रा॥ कौसल्या पिमु कियति किवीरा॥ कैसक्या
समवान कदेहा॥ ऽ॥ उपजत सब मनसे देहा॥ इरद
तुम हो देव नाराय ल स्वामी॥ सुंदर विग्रह यग्रामन
नामी॥ लक्षमन निसे बहुप माहातु ता॥ भरत निसेस
भरत विख्याता॥ २७॥ शत्रुहनन है चतु रुपा॥
इह विधमोहि विलोकिय रुपा॥ तातो यो को
ता

प३क्ष॰ तुतचामा॥तवकुसकतअयेसकलकुमायम
स्टाभान्सैनसहताहिनिवामा॥कहिंयनलाइ
ममभाभकायरा॥निरशिवामकईसबहियानी
नवक्षापनितनक्षुद्यहिभुलानी॥विष्णेकोहत
गमक्षुपकरिमोहितीध्यानमिस्यतिड्वभामा॥
इतनैश्रुतरजनकन्पमितुलाधिपडरतास
हूं॥श्रीपड्डा॥रामचंद्रक्षविलोकनपाला॥भ
योविदस्तनतनखुधिरपालो॥बुक्षिवद्धाये
चलेश्रु भपलिनहिनोँबेदेनधुणिमिस्कीलेखगये॥म
सिवलाम्रा हावाजरमापत्याजननजगरेशावपिाण्स्काहिसयु
नेहहिल नमनबवामिका॥मामाहिकरयपुकुलपविवाहिक
हिनेमहा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्रिपनकुकोई

सुरा॥ मैं गाय वेदा विरंच ये जो ङ्गी॥ धर्म गामे
जेनकु नमस्य सोई॥॥ गावत गानिकं धर्मीव
सर्वांचि नु विध्व सो वस्तु धा सम म पायो॥२॥ त्रियवे नाच
शेतन महर खायो सं ३॥ मोजेन मुंच खा चमन तेमातु
कीनै॥ यु यान्पायतनन बसन धरीने॥ गामादि धकोमे
कसब ही जनवासी॥ गाये जा यस बकी न निगाले तकयु
३७॥ दोहरा॥ ककरि राज्ञा भि वि म मुं बहूपु नवरी॥
वे सब सायो॥ दान दीये द्विज जातको पुन्य गाव
कहि कानाया॥ ३५॥ इति श्री सतो पाख्याने स
तु शैनक संवादे एकचकि तमो ध्यायः॥ १॥
दोहरा॥ विन दोहि मेरा मजी मिश्रु ला पुर ते वास

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पट स पा सतागुरकौ धायडह पितृयुनमैसै नानाला।२
सतुउवाच।। राजायद्मारया मुदत्तासेतां।। कौर
नकीये यतीनसरै तो।। पुनरेतगावनम्पयोधा
नाडो।। किनकराउप तिभावस्तुनाइ।। १।। मेघु
विकारराजामियुलेस्।। माजरयजरम्प दीयस
बधेस्।। मुलिगकृतापारेवरके वला।। रोम
कपृकिडेरिदेयमवरा।। रा।। कुत्राभजन्नपका
यस्तुतेराम।। मासति पासमायेनपधान।।
नैमसकारकविकरिम दबानी।। जेहेडकाबधी
सर्बहितरानी।। ३।। मपीरामउवाच।। कमातादी
जेहमरेबरवानी।। कुत्रयो धायाचलवचहतनप

जानी।। हम सभी राव न करहिं सह माता।। सुरी
म्रयो धमा मैं न कुसाया।।४।। दो०।। निन म
नको एक गुरु करि ध्यान न करो मन बिना।। सें भी
नुमरे निकट मैं बस बिम दाश्चिति हि ना।।५।। चौ
पई।। हम में हे धर मतान तुमहिं माना।। बिसमरन
योगा नहीं सम गाना।। जे गुरु कि को ध्यावन जान
लोका।। होन कृतार्थ नेम बिशोका।।६।। सोतु
निसव राज निकी दासा।। करत बिचार भई मन
भाग सोचा।। चाटि दुके न्याहि न कर चितु सोचा।।७।। अनुम
षटभर बिनय रति सो।।८।। पुनर्वालि न की सब मा ग
ना।। बार बार सीय प्रेम सं गाया।। भोजन चाहित

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

री सिसु न के न्ता॥ क्रातनरभई जोगुनिजमंग्ना॥ ८
तो रजन नम वै देही एही॥ किलेई स्वर रूपतुतिक
रते ही॥ एवरानन नेड्रु नमातनकहुं॥ दे हां तेरेद
हि रघुमनमकें॥ ॥ श्लो दोहा॥ रचत बिधाता रे
बिड हहबद्धजननमरे मंदा॥ पीड़ा लखि रवतनन का
ऊकी भोगजननलखकेंहा॥ १०॥ चौपई॥ कहा तनमतु
लपती तैं पायो॥ ब्र हिंसबु पसीते भ करायो॥ ह
मकुंभी नहिं सो चनयोगा॥ ग्राए कहू मे सबेतु
रवभोगा॥ १॥ नसुषपिदु सह हबिर हिं जो नो रा॥ त
व कियो गा ते रसहिन यो ना॥ भले हिं बसति न को स
दकरन हि॥ जिंहां जाहिं गी सी ते कानन नहिं॥ १२॥ जा

नकउवाच॥ चौपई॥ मंगलकरनुजानकीदेवी
विधपूर्वकसीताकहुंसेवी॥ इहविधसुनि
बानीसीतांहिगदगदसुरबोलीअसमीताहिस
पिरस्त्राउसहोवहुतुमसीते॥ कृपानामकोतेसह
प्रीते॥ किवगोभीप्रसादकौरबहुसे॥ बढेसुभा
गतुमलकोमहसो॥ १४॥ दोहरा॥ वामभ्रमातुम
गमकेसदावगानेनमेसोहु॥ इत्यादिकस्त्राशिष
दईपुनकहिरामसमोहु॥ १५॥ चौपई॥ मंगल
करनअमईसवबानी॥ कृपासंपूरनविलोचनमानी
पुनकहिरामरहिसीयकुमारी॥ शुभगुणयुतसुंद
रवरनारी॥ १६॥ पितालडावतनितसुताको॥ कर

६: स॰पा॰

नसदानपपरिचर्याको॥जबककबबालपनैतेइ
सतो॥सोइस्त्रपराधनुमावेतिसते॥१७॥दासीति
मचरणनिकीजानेवारिद्येमाहिनचाहियमान
वाजनकदईतुमकोउपहितकर॥सदानुमारध
रमतीयलखिककरि॥१८॥नपच्चात्मजेनितसि
चनकरहू॥करुणाकरदासीलोवरु॥जबजेब
तुमस्त्रवतारधराहू॥मानवपुविसुनेदेवसराहू॥
१९॥दोहा॥नान्पनेंदवतनबतबसदापननीहोइतु
मसगा॥इतनादिकप्रभुभवाककहितोषरामकुमारि॥
रुा॥चैापड़ी॥दीयेरतनिबहुभांतनिरानी॥प्रियका
रणरामहितुरुचानी॥कंचनरतननविविधिवसनजोइ

६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चतुरकोलम्भुभदोलाहोडौंसीतातापरदई
चरुडाइ।।कदनवदनकहुंमानिनिनिधाई।।३२।।ब
वतमडहनादपरमूपरबहोतभयोमुसजनना
कलकुरा।।२३।।उरमिलाश्रुतिकीतिरितनबसी
मंडवीचक्रपिमानुरसबहीं।।दोलिहुंपरस्या
पतिकलीयो।।सारदरअलिंगनिकरिधरीयो।।
२३।।सुभमगआदिकसरवीयांतिनकी।।कप्तासो
हयानमितबत्रिनकी।।मितुलाधिपराजाकु
भागी।।प्रदानलियोमलिम्मतमूतरामी।।रधीद
हेना।।सयबसमरपलकरदीयोरामारिपुतिश्र
न्यासा।।माधुरमरतिरामकीनिजउरकरीनिवासम्म

दी०रूप॥ चौपई॥ दसरथ राम पदहि कीन प्रणाम॥ गम
न हेत गद गद कंठ बानू॥ निरखि तन को समो
प्रयाण॥ मिथुलापुर बासी नर नारी॥ दशरथा
रूप सब कौ निरषत भे॥ अश्रुपात गद कंठ
किरति से॥ तब एक न रूप बालक रूप बिस्तृा॥ भ
ये ध्यान तत्पर सिज तु मि छ्रा॥ ३॥ दुंदभी नाद
तिम हि गाजे गरजनि॥ यांति पाठ हय बोल ब
मरजनि॥ नर नारी जे तक कृत सब कौदत॥ गुमिय
भपर कोपि बको दत तभ पति सै बुहनि नादत॥ २४॥ दो॥ हरता॥ हासी
ते को कहतु हैं कौ पुन पुन रहता मा॥ को अ बमान
ने का करहिं लगाहि भया नक घा मा॥ २५॥ चौपई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दुहु बिधि बदन बिलाप कराने॥ सब के द
गारघुचमेचलाने॥ शत्रुजेय मामाइ केना
मा॥ चित्रैतासु परन पवडु भभागा॥ रहो तैसे रा
मघर मतनन धारी॥ आनो कर परिवार नतसारी
व शिष्टचत्रा ह्रि नैसे सही विप्र॥ सततावासी देवीदि
प्र॥ ७३॥ चले सकल तिन तिम कत्र धिकारा॥ ब
धूयानन मधकुर परिवारा॥ मिथुलापुरि वासी
सबलोगा॥ लोचनन दवैठ तजि भोगा॥ रघु
पुन चिर उठ ग व मे बिनवासा॥ महा नधीर जम
ये निवासा॥ ७४॥ वत जाहि महो त्सव रचना॥ चाव
नभमत न कौतन वचना॥ ७५॥ सोरठा॥ गाये गुरु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दसकपा पद्धु तात धन गवाडु जिमि धनी जनाकलिव
परतंद्रिक्रात चित विनवत सीय रामगुन॥
अज्ञ निश्री सतो पार खाा ने सतू सैन के से
लोके हि बल्लन मो धामायाः॥ ६३॥ सेहि ठा॥ जाव
हि गेड स ध्याय पुरी मू यो ध्यान्न पति व रा॥ म
दोहि ध्याम किल हिं मग्ज़ा डकं रहिं हर बजत मातु सरि
स तेउ बा चा॥ बो पड़ी॥ व लीक्स यो ध्या पुर को
सैना॥ कमनु निरहोत निरपन नवमु नै ना॥ ६६॥ कि मः
नाद हरर स्रो गगा ने॥ सु निय न नाद कि निन
गगमने॥ ७॥ बड़ रयानि देला पु का धिमन॥
हे मरत निजर बहु मजु भाषित ना॥ देला पं कति

राजततैसेसो॥ कंचनमनालधरीभजैसेसो॥२॥मा
रगाजौहुतिहितेबरातहिं॥ बारिदछांडविमान
सुहानहिं॥ जहंतहंसोहाबहुमंगलचारा॥ देखिय
लोगनिहरषप्रपारा॥३॥ निहस्त्रवसरयमदा
निकनाना॥ देवीवैशकाकरनायाना॥ परसुरा
महिहनामउदारा॥ सबसानिरामहेनउरधारा॥
४॥ केहनाकाजाइकहंतनभयोरामकोंधनुषबाए
निजनहाथा॥ कहिहनिनिसभागीदिंदतेबोलाहरषत
गात॥ पा॥ चौपडी॥ परसुरामउवाचा॥ ...
महाभागप्रभुबलअकुर॥ धनुषभंगानृपमकोनंभु
धरा॥ ताकहिहमकोंभयविस्वासा॥ राममनायए

६३ स॰ पा॰

तुमसाताना॥६॥इहहं धनुमष सकल सुनि रघु
नाया॥ नासु कृमि ततेज स सुर नाया॥ भो मह
राज गृह मंगल करिया को॥ मोर पुन्य मनोरथ पद ता
को॥७॥ कर पुन्य मनत बनामनुसाई॥ नाहयो का
र्जु कंतु दनापाई॥ भ्रात गुरि षीक हि कपिय प्रसा
दा॥ भ्रमसकहि मगनि भये मन मनहूं दा॥८॥ नेवपसा
रनिहार तवामहि॥ सीता सहित विदेहसुद धामहिं
जानतभयो कन्तु गहकत्तलाई॥ धनुमष बादित तजि
श्रानंदपाई॥९॥ दोहरा॥ रामलक्ष्मण पीसेना सहित
राजादसरथ संग॥ अयोध्यापुर को चलत भे दे
ते सब निश्रानंद॥१०॥ चौपई॥ प्रभुतनिससहित म

हाराज्ञाअज्ञाये।।सुनमेदीसननमसुखपाये।।न
गरलोगसकरनिकसपुरीते।।९।।अनुपहिपजो
सेगप्रीते।।१०।।मेगलगावतबहुनरनारी।।
बाजतपंचबतरअनंतभारी।।अनुरुबेदीजनअ
स्तुतिकरही।।बेदपाठद्विजवरअनुसरही।।२
सरकउऔरसननसुखन्हपतिगये।।वामिसुरवी
बिबुधरकीअनुमान।।निगमअयोध्याअंतरम
एीये।।रतनमनिमेडितनअपरनयीये।।३।।बिज
येतिपानाकाराजना।।अनिकरेगअंतनकछुचीका
जना।।भकिनिसहितसीयबसुनिउठाई।।४म
मककविपुरुणमहरबाड़ी।।१४।।दोहरा।।समबेकुं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

६५ सु॰पा॰ ठकुरी इह आया है रघुनाथा ॥ करि पूजा मकर
न प्रेम सौं शिशि विकाव सनेहि रूपा ॥१४॥ चौपई ॥
बीण बेणु मृदंग निसाना ॥ झांझ खंजरी गो
मुख नाना ॥ झांझ र ताल भेरि न बाजे ॥ बि
बिधनाद करि नाद तगाजे ॥१५॥ बाला वृद्ध
तरुण जे नाना ॥ नारी हरि मंदिर करि गाना ॥ ग
जे स्वास्थ दुनिरषि महाराजे ॥ राज निराज हरि रा
यव भाजे ॥१७॥ शिरावत कुल उपजा जो ई ॥ पर्व
तनु लपगा ये दर्शिनसो ई ॥ ता पर चढे राम मग आया ताने
चाम रकुवरसो भनेमाने ॥१८॥ कोरि मदन लावण्य
सुंदर न कोई सो गाम नोहर राम चंद्र तन जैसो ॥ भषि न ब

सनकअनेकप्रकारा॥ बरमबएएम्ह षिनतनभसाभ
१२॥ दोहा॥ भरतलषनरिपुदमनपुनबिलगा
नागअस्तवाणा॥ मनेमानेशिव [illegible] गामिन॥ प
बिवारितनतिनबाणा॥ सैवोपडे॥ ५५॥ तीयारतुअस्ताम
सिकेन्याबाला॥ राजनतनयपेषिनतिहकाला॥
अदिनपुषपमुकनबरषाई॥ गावतगीतमनोह
रनाई॥ १३॥ कहहतपरस्परनरनारी॥ धंन्य
लोगमिथुलापुरसारी॥ नैनकरएललमिप्रेमप
सारे॥ भुषोभारामबिलोकहिसारे॥ १४॥ धंन्यस
कलहैजननिरामकी॥ भरिपुएपकोबालानाहू
की॥ जासुतनयभयरघुकुलवंतसा॥ मनभयते

६ प्र०पा अधिकीपरसंस्था॥२३॥ क्रांह्रिंधंन्यहमसगयेलो
का॥नामचंद्रमुखजिनत्रविलोका॥२४॥ विधश्रु
भगा॥नननजनवाचा॥ बलतकुवरवरसुदमनमा
चा॥२धा॥ प्रोहना॥ प्राप्तकोशलामभवननाम्नास
हितकुमारि॥ तामुसदमवासिनभयेमेगालवसु
अपारि॥२५॥ चोपहरौ॥ उठीसुंगंधविधुरचंदुलो
या॥मनहरिदमहारैश्रुभडो॥ना॥नुकतानामा ब
नमहेसुहावना॥खेदनवारस्त्रिखिलमनभा
वना॥२६॥ हारेसिंहकूरहवरठोरे॥ सबकूसाधु
सैहैंअतपारे॥ बुलादिकसकलेहैदेवा॥क
मलादिकतियरूपकरेवा॥२७॥२७॥ कोपला

गृहपौरपौरपर॥राजन मंगलदुखलीयेक
रा॥कौशल्यान्वसुमित्रा रानी॥कैकेई रजयो
खिता॥श्रीरामेरमारद॥स्वर्ण पात्र महादिव्यहाय
धराना ना नार नन निपूरितसो कथादीपक
मयघालधरीये॥हिमकगोचतसायजगा
ये॥रक्षा दिहराइवानी कृनीकरहरकीसीता सं
युतकरमारानी राजनक्रूर पिपुममैसा निवर्षिर्द्रव
पघामा॥३०॥चौपई॥ निरभयराम चंद्रकृपाली
नृ॥पुनपुनमा वन्दवाचाती ते॥बहुरिकहत भ
ई रामकि बानी॥हमरु किकरहमत्रैतबिसमा
नी॥३१॥ब्रह्मानजरिहनहमलनपाला॥नामध

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

६६स०मा० शिवधनुभंज्योगयालागातिनकोमानकीनतु
मद्दरी।।सीताब्याहलीयोजससभरी।।३२।।रूर
एजेनकप्रतिज्ञाकीनी।।एकपनेदनकुमसुकि
लीनी।।मारीचकरिमगाहुजितमइउ।।कीरति
तुवसबजगप्रगटइउ।।३३।।खवपनखासहुविर
जीवहनुमानवर्द्धमानकीकियजेनिजजन।।एव
कबंधीराजनमानी।।भ्रूनिकुभांतिपुनदानहि
दानी।।३४।।हरिहुवा।।नागनितेउतरसकलरा
मादिकुंवरकोराजनतीकरिएजनतहूयेनिजउर
जेभिवगौरि।।३५।।चौपई।।बधजानकीलेकविम
कही।।उतरतनभईजानतेतवहीं।।तिन्हकेबदननिरा

गनिहारी॥ निज निज रतन निदेत भई सारी॥ ३६
बंधु बधु नियुत नाम लजाई॥ देवागारु पूजन
कराई॥ ग्रथ्या न्यायतिन की न पूजन मा॥ पुन नि
ज मात सति भई न नाम॥ ३७॥ निज पीवास कजे
कुल ये बिन॥ पुनु रत्न तिय सुर दुबुध की ताषि
ना॥ गुरुपति नी श्रांनै धनी जो ऊ॥ तिन पद नमति
६ करत भै सो ऊ॥ ३८॥ पुन कुवरी वरासन बैसी॥ इ
तने मैं न पकी नी कैसी॥ भूरि दान दीने भूदेव रसि॥
या निकृ गुणी ऋजाच कमे वरिसि॥ ३९॥ दोहरा॥ ता
पाछे कें अंतःपुर हि गये सुत नि सहराजा॥ रंग नायके
पद कमल नाय सीस समसमाज॥ ४०॥ कवित्त॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

६७.स.पा. यथानृपायपकादृजिवाथेहिजनिकोगहवि
हिवेषपतयेवपुर्वादिकसबुनिकेगाऋपने
ऋपनेगेहमुदतवसिसकलहीगाहरिहेकस्त
विवाहमानेदयथाविधमिधुलहीग४१गइति
श्रीमत्पोपास्यानेस्कंदपौजकसंवादेविष्ट
कवित्ताक नमोहात्म्यः।१९दोहरा।।कथाध्यायइसकृ
त ष्णीअदभुतातमहात्मासुरपतनीनारदर्षी
निरतकिऋांवदमाना।।म्रतउवाच।।चौपई।।
तातेनरवरजनीपवरतीयराजराजकेसदसनि
मिरतीगरंभादिकडेढुएपठाई।।मुदनासकिल
ऋपहुनाऋाई।।आ।।किरतनिऋरयनामकिथोरी।।

मंगलदातानिरखनिउतमसाहे॥२॥दिअपंगणिएकौ
शल्याकै॥३॥दिअ स्तवएलखिआइनलाकै॥४॥वि
तानरमयकरिछाडतमंगएल॥५॥दिसकलपवा भीड़भई
रतनेगएल॥मदाबुद्धितहिंराजा॥राजतना॥पतनी
पुत्रमिलहितनुछाजनता॥७॥ताकागोनजातिसु
रनारीपंभादिकसवनिरतिकरारी॥८॥हावभाव
बहुकरिदिखरावतना॥९॥भिनयपुनपुनमनम
नभावतना॥१०॥दोहरा॥कोनरीदतेनुयनहीउनरोये
नृपपासादिवरिषीवीएलीयेसदखिमारिमुख
हासा॥१॥पा॥सोपडीउवठिठाढेभयाफटतनवपाल॥सुतन
त्रिसहितमंदरसमपाल॥१॥विधवतनारदछजोराजेना

९४ स.पा. दिव्यपीठबैठारेताहिं ताहिं।। राजयोषितास
केलेआईं।। आसु एजनारदरिषआई।। नार
दकिलसमाजकेमांही।। निरततदेवबधूसब
माही।।७।। नानाभांतिबजनबाजा।। नानागी
तसुनतमुनिराजा।।८।। ठिठठेनाचदतनकाला
महाकौतिकीनचतनिरमाला।।९।। भांतिभांत
भांतदिषरावना।। मुनिकौतकरामागेगावताऋसु
रनरमुनिकीसभामेंफारी।। निरततअगेरामसु
खारी।।१०।। दोहरा।। कौतुकबहुतनदिषावहीं मुनि
सहमनतरना।। मिककबूरेखनमुखदशरथहिंकब
कौसलाबारा।।१०।। चौपई।। सुमित्राकैकेईकेसंग

खोज्यानयोखिताकेअपि परमुरवा॥ बीछानिज
सकेंधपनिधायोनायदयोमीकिरननन्यारे॥११॥
उयापिंसिगीभपुनधरके॥ कूर्चविद्यारनपालिन बीलैग
करिके॥ रंभमुकेशीडोरनितेलातम॥ तिनकोंधेनिज
भुजमुकिसन्नेमाँधरकरिमानकरतसुभनिरंते॥ १२
तिमहास्यादिककौनककरंते॥ कबहुंकपोलफुला
इवायुकर॥ स्वमुरवदिखावतमुदधरउर॥१३॥
अांबिपसारतचखरतमूंधर॥ भखितवडुडिमकपनी
अं[illegible]कर॥ मेंधरअपिकेकेइनिकरते॥ वढिठाडीक
रिनैनविकरसे॥१४॥ क्रिचरपकरतोहाथसोनार दो २
दमुनिकोझ्गाहा॥ मुसकावतमुरवतेकहतवचढिन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

द्र्ध्स० पा०

वरहिं सुनाइ ॥१५॥ चौपई ॥ मंथुरो वा चानहिं नव
सरवर को इमुनीसा ॥ मो सी सुंदरि ऋानन दीसा ॥ ऽ
ह से ब्रध विधिहि रचि दीना ॥ मैं भार यतु हि भर ता
कीना ॥१६॥ सो सुनि करि हृ स पर नर नारी ॥ सब हिं ज
न गानेऊ ब्रह्मचारी ॥ नारद रूपी महा योगी या ॥ हृ सन
मे यराँ है प्रा हृ रूतीसा ॥ १७ ॥ तुव जैसी कहहिं पाऊं नारी
सचुरा चर त्रै लोक दिखारी ॥ रूप परितु ष्ट भयो मैं भा
री ॥ तेकु बर पिषि बडहर षाईं ॥ १८ ॥ इह सुनि करि स
बे जन परिहासहिं ॥ करत परस्पर पाइ हुलास हिं ॥ उ
त्तम जैसे सब राम पिता दी ॥ नारद रूप शिब देइ चला दी ॥
१९ ॥ दोहरा ॥ सुकेशी ओरु तिलोतमा करि शुस्नार शु

गइ ॥ मन्हल बडाई पाइ धनु ज्ञान भई निज ठोइ ॥ ४ ॥
चौपई ॥ जन्हि कहं सी सीता होइ ज्ञा प्राननाथ रघुप
राम पुनीता ॥ तहां निहि सहजे ही विपुला ॥ भारी नि
धि आपि तहिं ही जुटला ॥ ३१ ॥ जिनके नयन करुणाव
हि माता ॥ जीवनि विस्व निसनु हि ज्ञातुम ॥ जिनकी
कृह विवाह चारि ते ॥ जे नर सदा सुनत पारि ते ॥ ३२ ॥
सोरठा ॥ तिनके मंगल होहिं भोगा भुक्ति इन मुक्ति
पुना ॥ ज्ञा दिअंत सुख सोहिं ते गा सोग परहरितति
हा ॥ ६४ ॥ इति श्री सत्योपाख्याने सूत शौनक संवादे
चतुःषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥ कवि वाक्य ॥ दोहरा ॥
कथा ग्राह गीध्या यह सत्या बधु म्रूनेद ॥ मिलि
पुरी की भाइ तिय ज्ञाब रु बहु जनपर संज्ञा ॥ १ ॥ समतो वार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वि

७स.पा॰ चौपई॥ अयोधापुरि कि वासी जेऊ॥ दसरथ निरिप तेखा
वन भीतेऊ॥ युवा कंन्यका विर्हदा नारी॥ पुन पतिव्रता
दासी सारी॥२॥ सीता स्वाम्हि बंध निरखनि कोरामा
श्रादि देख विकुवर निको॥ कोशल्या च सुमित्रा रानी
कैकेई लोजे तिक पटरानी॥ रा॥ सीस नवाय तिन्ह कंग
ए वेसी॥ सनकारी सब रानि तिनै सी॥ सीया मंद
वी अस्य कतिकीरतिया॥ नयाउर मिला सुंदरि कीरति
३॥ तिन कहं निरखि निरखि पुन निरखहि॥ वहु विध ह
रि सब नारी हरखहि॥ लक्ष्मण राजमाहि तस सव कुवंरी
सरव विलोकत नरूप रहि सुवरी॥४॥ दोहरा॥ धन्य ज
नकनामा नृपति सुता वृ रानन्नि जाहि॥ सीतादि क
सुभाग्य सकल पतिव्रशि हत हिंदुना हि॥५॥ चौपई॥ १

इह कलि कलि कलि बहु बनि दीये रतनना॥ निरषि नि
रषि निरूपहि मुद पतनना॥ को गलता दिक पुन सब
गनी॥ बसुरन निकंचन तिन दानी॥६॥ निज पु
त्र निके विज्ञाह निमाही॥ ग्री निदानन दीने हरषा
ही॥ निज निज सदनैं सब नारी॥ कौमी तुलस्य[illegible] गई
पाकरि सारी॥७॥ रहत कुलाहल सनापुरि मैं॥
दिवस राति गत लखवति नउरि मैं॥ महत कालवी
तायें शोनका॥ मंगल सारि मगनि कृत मोन
का॥८॥ शौनक उवाच॥ राम कथा इह ग्रनर
मणीकं॥ स्वयंभुत परमहत है नीकं॥ स्तुनि
का हम न विपति न होई॥ सरव मुजन किशावपि
यऐ सोई॥९॥ दोहरा॥ सहित जानकी रामजी कि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

११स॰पा॰ ह विध कीये विहारि।। भ्राता न्हि सिव बरनत भये
बस बरती श्रुति सागरि।। पार सो भरत सार उदार थ्यव
जनि राज सुत निबाह ह्र कसमुद लह्यो।। बुधि
सरत नमह भागार घुवंसनिकरि चरित दृह।।१।।
भरत उवाच।। चौपई।। एक समै श्रीराम चंद्र जी
राजराजपनि सुत संग नर की।। सीता संयुत मुद ता
पाये।। कौसल्या प्रासाद चलाये।।१२।। मरादि
व पर्यंक सवासो।। मुक्ता दाम निकरि परि वासा
पय फेन मय सुभ निछावा।। कसप सीया सुख
राम बिछावा।। सुधा चमर कुमार वन सीता रामहि
मुसकावत निरषत रूप भिराम महि।। ऐसी पल
पान युत नैर खंभात।।१३।। पिकि जरो षेतु रीसु हव तथा

दोहा ॥ सीतोवाच ॥ श्रीराम हिं सीता कहत ए
हु स्मयोध्या धाम ॥ पुरी रमा घो भित महा नाम
हुमान नाम ॥ १५ ॥ चौपई ॥ सरजू देखिय न्नु हां
सुपावन ॥ जैंवि जैं वैकुंठ सुहावन ॥ नाम बैकुं गोलोक
ठ देव इहां ॥ इया ॥ कोटि पु एवरि पा कृत पाइय
१६ ॥ तुम हो देवनारायण भरतार ॥ हौं लछमी तव
प्रिया कुमार ॥ इहां वास तेहम रे जानो ॥ बैकुंठा
इह पुरी प्रमानो ॥ इतनें कहत सीया के बानी ॥
भानु गयो अस्ताचल ठानी ॥ प्रगटी रजनी शुभ
चांदनी ॥ सब देहनि को सुखदगादनी ॥ १८ ॥ चंद
निमान न सोयहि बिलोकन तासीता हिं राम कहत में

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

७२स॰पा॰ योषित॥ श्रीरामउवाच॥ सखीनेउ विलोकहु रघु
दिं सिकृपदिं॥ प्राचीभाग मनोहरकुपौ॥ १४॥ दोह
रा॥ उदै होत है सुंदरी ताप नसाव निलोक॥ सब
के मन मनका चकोर दे घत बेद वियोग॥ २॥ मो
प दीपालंद कुमुदनी कमिन्न स फोट नि॥ अहो प्रि
ये परित:सुख कोर नि॥ कस कहि जन कसुता के
ताई॥ निज प्रिया भुजमांहि कंठ लगाई॥ स्याम
सीया के भे भार चाया॥ जगतचराचर सब निपजाये
पुन: बदन भे राम सीया को॥ कीयनिकर न सुइ
ङ:पीया सो॥ ३॥ हे सीते सुंदर नु व बदन सिं॥ पे
पेखि भामी कहिं भामवद नहिं॥ नव मुखनिर षिमु
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

धीरु रवि भाग गा ॥ भग्यो गगन मंडल लज्जा पाय गा ॥ ५४
तव जु गलो चन दे पिकु रंगा ॥ गये सघन वन भा
ज उतंगा ॥ चीति सिंह निरखि करि तोरा ॥ भजनि भये
सिरि चोर किजेरा ॥ ५६ ॥ दोहरा ॥ गमन कनु मारि वि
लोकके हिरगु नज भी विषे दंगा ॥ पंकज जल वासा कि
यो मानव वैने न उतंगा ॥ ५७ ॥ चौपई ॥ बिलग्र आहि
पति कीये न नक्षा पनि ॥ बेनी तोर निहारि लजा
पनि ॥ अगनि दहत तनकी तें कंचन ॥ तेरा देह सो
भालरिव कंचन ॥ ५८ ॥ संभावतन हिं पावपराज्य
यो रूप दूरि वासा करि लाजय ॥ नामब दन कुस
कचन उचारे ॥ सुभग नितीन हिं हरवक पारे ॥ ५९

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२९ स०पा०

आनन मनु ब्रम रामहिं सीता॥ कहि अज पांगा सखि
त पिबि प्रीता॥ ज्ञान जुवाचा॥ मन हाथ जैसें प्यारी
दासी॥ जू सचाहे तन सबा तनपु कासी॥ २६॥ पर
तु सुंदरी योषित सोई॥ पतिव्रता य सुअनुसारनि
जोई॥ जांके वसि नित भरता होई॥ पतिव्रता सिया
पनारी जो सोई॥ २६॥ दोहा॥ इम जानियप्रिय
रामजी नव दंपति सुख होइ॥ भाव जासु उर पर
स्पर स्रत तब स्वानत सोइ॥ ७०॥ चौ॥ तब तेउ वाचा सोपर्ये
निज मंदिर पर्यंक जाई॥ सोये सीय समीप रघु
राई॥ अरु लोचन्य वेला जब भई॥ आनि बर रघुबर
निंद्रा न जिदई॥ २॥ उठि करि किन्य करम सब

कीनें॥ बहुरि दयि पितु अंतन कलीनें॥ करी प्रण
मय योकन सज्ज हिं॥ काज राज पुन करन विराजें
इ॥ तैसे जनकसुता जो देवी॥ करि सनान दुति आ
निकरे वी॥ बहुरि गई राजमा मि निसी ता॥ सासवनि
र जनि हित सहरी ता॥ ३३॥ सासरजनिकी रजाकीवि
पुनकौ माल ना निकरि न वीनी॥ कियो प्रवेश श्रालि
निके सा या॥ सेवत सासव निसदं नि महाया॥ ३४॥
दोहरा॥ तिनके प्राण समान सिय जनकसुता सन
वान॥ पुनि नर नारी मुदित रहिं दंपति पिषि भगवान
३५॥ इति श्री सतोपाख्याने सत शौनक संवादे पं
चषष्टमो ध्यायः॥ ६५॥ कबिताक॥ दोहरा॥ इम

२४ स॰पा॰

घ्राये छूरकया होइ सीतापाक सुधार ॥५॥ पति नृप
लौमुंचाइसी मुद पावहि नरनारि ॥ ६ ॥ पुनि तब ॥
चौपई ॥ हर षत परम कौशल्या बोली ॥ राम मातु नि
न बातन अनोली ॥ भो देवी सीय पाकह्या निजा ॥ रा
मादिक अरु भूपति कर रिजुं वशिष्ठं वामदेव जावा
लु ॥ सकल भोजन मिष्टि नि वाल ॥ ए व रानने कारि
य प्रीति सों ॥ काम्य पक्वान हि विपुरी नि सों ॥ २ ॥ स
कें अमारोभ निजो सीता ॥ सुनि ककिमां के वाक सप्री
ता ॥ सब भगिनी ले साय अरुचा रा ॥ चार भांति बहु पा
क सवारा ॥ ३ ॥ विधि पूर्व ककसि जानकी देवी ॥ सब न
कीये नैवेद्य हरे वी ॥ पठे बुलाइ बहु मिगुरु ना जा ॥ स

कलपुत्र निज समेत समाजा ॥६॥ दोहा ॥ भोजनि
पाव नि नेत्र सिव लखा ये सालापाक ॥ हस्तपाद प्र
क्षालकरि थिति भे पंकति लाग ॥५४॥ चौपई ॥ ला
गेत बदन का पसीय लीना ॥ निज बस्तु निकसित्रा
हिन वीना ॥ स्वर्ण पात्र महं अन्न परोसी ॥ दीये वसि
ष्ट हिं जानगुरोसी ॥ धेनत्यों ही विप्र वर्ये अनिताई ॥
पुन्नत बस्त्रागे भ पच धराई ॥ पाछे धी मंतीसी यबा
ला ॥ निज भरता राम हिं दीय थाला ॥७॥ तब पिन
भरत लखन त्रिपुर तिहिं दीनें ॥ तिम हिं शत्रुघ्न हिं रस भी
नें ॥ यथा न्याय सम्बन्ध निस मरपा ॥ प्रेम संग पावा अ
न्न रपा ॥ या गुरु पुत्र गण ते दस्त्र सब राजा ॥ सीता कोम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

७४स॰पा॰

लिपदई सरागा॥ एक बड़े दुदड़ इथीवाजहिं॥ कीनें खु
स रमें धजनबकाजहिं॥ प्रति हि हरषा॥ सकल लोकमैं जो
पूमर चूडामणि सो नाम॥ नारि पाइ कविजान की
गुसकत भई अभिरामा॥ १०॥ चौपई॥ भोजन पाइ
विपति मे सब ही॥ वसि एकत्र दिनाघव पुनतब ही
षट रस सहित अन्न अन्न तनी के॥ परम सवादु सो भा
वन जी के॥ ११॥ पाइ रसोइ पान कर पाणी॥ तुली
य याबिधपान प्रदानी॥ बहुरि गये नृप सभा मे
झारी॥ यथा योग बैठे नर झारी॥ १२॥ बहुरि जिवा
ये कुल नर ना सी॥ ता पाछे ते दास रु दासी॥ सबे हम
सी ना सकल जिवायो॥ मंगल किये निवधायो॥ १३

पुनसीयभोजनमुंचोआपु॥ निजभगिनिनियुत
हरषअमारासीताकुरिपुहरणनितराजता॥ पाकस
दनिछिनदिनआसभाजनता॥ ५४॥ दोहरा॥ एरणदे
वियअनुकदिसदाशोहसीयामापाजांहिंसीताहे
इरहतनितलषमीजीहितआपा॥ ५५॥ सोरठा॥
तसिंधुविरजकहाएहसिद्धिनिधिसरबनिवासकरि
पाकसदनिकअसतेहुजादरयानिकुघरसिखविल
भ्दा॥ इतिश्रीसतोपाख्यानेसूतशौनकसंवादेषो
डशमोध्यायः॥ १६॥ अकविवाका॥ दोहरा॥ एक
कथाइसध्यायमहुंसीताकहिप्रतिरामा॥ मनीरथ
याजाकरहिंतेदंपतिप्रभुसुखधाम॥ १॥ सोरनेवाचा॥ कउ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

९६ सुं॰पा॰ चौपई॥चिरजीवसुतअमरतनुनीसबरा॥सानुक
हेतुहितुमबहतोवर॥रामकथावरपुण्यसत्पा
मुनतमुकतिदामदुकरुपा॥१॥सत्तउवाच॥इ
कसूवसरमहूंजानकीदेवी॥ममहिंवचनकयत
मयतेवी॥२॥प्रियपतिविरसकेहितहूं॥अस्सजूउत्तर
तीरेचितहूं॥३॥तुमऋपिभ्रातसरवेहिगालेई॥१म
ऋपिभक्तिनिसरवीऊलसेई॥मरहोभाभामहमपुराएणा
रेगावनिकूरियतीरयरूचिचारि॥४॥सूतउवाच॥
वचनजानकीसुनिकृरिराम॥कहीनथासुअमृत
श्रीराम॥जवबोलदसिपितानिजपासा॥तवसौंहिराम
इहवाकप्रकासा॥५॥श्रीरामउवाच॥दोहराक्ष्रहो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तात तिन्हु तिपती बिवाहे जे दीये संग ॥ मै सुत लवउद
भव बंधु जन दास सुदासी यो मे संग ॥ ५ ॥ चौपई ॥ मो
रे कौ नित जाचन रहई ॥ मत सातीर य निकर जे कहई
औरु देवता सकले जोई ॥ जो आय सु परसावे सोई
॥ १ ॥ सुतउवाच ॥ चौपई ॥ सुनि कै नृपति राम करि बा
नी ॥ १ ॥ अनुसासननि की सुनहिं बखानी ॥ द्वारपाल
तब राम बुलाये ॥ आवन कहुं कहि बच प्रगटाये ॥ ७
आयसु करौ लबनि के यो म्र ॥ तै से भरत हिं दयो नियो
२२ ग ॥ तब सार्दूं बीर हि ताडी ॥ नाग पालन निकसे तु
ऊाई ॥ ८ ॥ सैनिक पुन जे आन हि लोग ॥ ॥ ता मस ब
निपु निकरी निये ग ॥ तब से सादूत सुनत उठि धाये

२७अ०पा॰

रामबदनसुखमाबरषुनायो॥४॥दो॰॥तीर
थयाग्राहेतनुमउछ्रमगरावनिकरेडा॥सहितुभा
रजनिचलतनसबकुवरिरामकरीन्हा॥४॥चौपाई
इतनीसुनतदूनसुखबानी॥गुहतेनुरतचलेन्र
गवानी॥पुरिवासिनमहुंभयोकुलाहल॥चहिग
येडश्रीरामउतावला॥गएसरयूतीरआयभयेठाढे
तेसकलभ्रातसविगारे॥तेसहीसबजननीचाली
निजनिजवाहनिचढिसहञ्राली॥२॥शिवकाकहू
भईपुनसीता॥भांडुआदिकमनिमिसहीता॥स्त्री
बालविरहनरनारी॥सहसवरजतरिहरघनभारी
॥३॥रामचंद्रकीआज्ञापाये॥सेवकनावसकलले

आयो आवाहक नाव धीवर धीवरी ॥ सरब ठोर ते
इकठी करी ॥ १४ ॥ दोहरा ॥ बाजे बहोत बजावहीं सखि
न बाजन कछु पार ॥ चढे नाव ते सकल ही होत भये न
द पार ॥ १५ ॥ चौपई ॥ जब यज्ञ सब उपठन र नभी ॥
महापोतन नवि मर वि बिठारी ॥ पाछे नासकेत ऋषि राज द
पोते ॥ बैठे पोभि न नाव निवो ते ॥ रही सब नोअ
न्प ति तिस सहकुव वरू ॥ नाव न नाव चढि भात न मध
रू ॥ सो नैका धीवरी चलाई ॥ सब ठौर ते जाति
दुराई ॥ लिख मनि किक हन भा वजहिं बाना ॥ नाम उ
र मिल हिं सुदर गाना ॥ लहर मेले बावा ॥ एव सन
भैमन मधु धार डुराहि दिव सान नीर यमुना मजिहे ॥
१६ ॥ कहु सकेप लिख मनी र यमराजा ॥ ब्रह्म ब मो बन ठोर स

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ए०म०पा० मद्धप्रविराजा॥ स्वर्गद्वार द्रुमसर खुले राजा॥ सबती
रथहैं जो ते थोरा॥ पंथ॥ दोहरा॥ हम कछु पिनावधि
५१ है तनित प्रिय मैं हें संत हपेम॥ सोवरूपं ठोर भैव
सवसरय जलनेम॥ २॥ भावोप्रहु॥ यात्रा सोष
करण सदयोग॥ वरषवरष पुनि नरनि नियोग॥
एजनीय मैं इहठो पित्रागी॥ मुमरे सहित नबुद्धि:
नर नारी॥ २१॥ दुस्तो दान पुन कीनो चाहिया॥ बि
विधप्रकार वेदमान वाहिया॥ श्रावण शुक्ल मंब
मी जोई॥ पुन वैशाख मास जो होई॥ २२॥ घोषधार
इतकरि यसनान पानीरथ करा॥ वसकल जगमाना
नाघव अनुजन वीर कहितकरि ये हैं॥ इस विधसुनत
अखिल जीय धरिये हैं॥ २३॥ सम्मिनापारथवेतिय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

साध्या॥स्वर्गद्वार फल कहि रघुनाथ्या॥प्रिया
जानकी सहित सनेह॥अथे सुनावन धरम परे ह
रथ॥दोहा॥ श्रीरामउवाच॥स्वर्गद्वार मति मध्य
महा सब तीरथ सिरताज॥सुवि माहे इह सम न
ही गोलक क्षेत्र विराज॥१४॥ [illegible]॥दस कोटि
हजार पुनः दस कोटि शत नाम निमसनान के हेत सदा
सबही सुर आवत गावत गीत निया गए संसाल
वाइत दा [illegible]॥रिषि निभाय वदत गुरु सुकाप ग्रा॥सब
मरत निद्यारक मोल हि चाहि [illegible]॥कमि हैं सब नाःन द
यायुत दान समही मुनि तेम सनान सधा [illegible]॥वधि॥
र मात लोक त्राकि याग नेदे षिद्य रस प्राप्त जे वह ही॥
६८

७९ स॰ पा॰ पुनीवासफललहहिदेहमज्जनइतलहहीं॥क
हितभयेयेजोराममहात्मसरजूक्रहहीं॥६॥
सरजूउत्तूरतीरइतेमैंनावललगहहीं॥६७॥इ
तिश्रीसतोपाख्यानेसूतशौनकसंवादेसप्त
षष्टितमोध्यायः॥६७॥कविवाक॥दोहरा॥वा
सकरहिंजोरामजीतीरयतटिहरबाड॥एसघा
यहहकथाहोइशिवद्रुजहिंरघुराइ॥१॥श्रीस
तोवाच॥चौपई॥जोकाजेउतरेसबलोगा॥निज
निजबाहनचरतबिलोका॥चतुरंगनिबहुभांत
सुहाई॥चलतनभइसेनारघुराई॥२॥पजरहींबिरा
जतमहंदेवप्रभु॥सहितपारखतीनिजसेवनसब

पारबतीसरजनहिंठांउ न्नम॥ जरा न बुराएश्रन
रम्यभवोन्नमार॥ पुंडरीकपुनसितकंजभोजै॥
तैसेरकतसरोरुह लीजेमुकमलजनहंसरानप
उकनामा॥ कुमुद्देककिमेहितन्नम्रमितामा॥ अ
जलकुमुदुटपुनवष्टीसेरपा॥ सारसनाभना
दकरवेरपा॥ जलकेजेतुतिनेकरहूरला॥ प
दीयोकविनाद्नमनतभूविला॥ आदिहरयापत
वंश्रसम्नाश्रमनिरषिबोलोमेवत्रमंतुमा॥ सोई के
वरवाननसहतद्वीशोनककुनीसुवेनता॥ पा॥ सुन
नउवाच॥ चौपई॥ ईहांकरियविश्रामनमेरसा॥
श्रमितनमयेनिजमेनिकट एका॥ कहनलयरकिपु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

८ पृ० पा० पीडित नवा हा॥ डारन के एक बदन तनक बाहा॥ धी
स्सरजमग्रा थो म छाम यो द्दिना॥ कीन वा सचादि
य इत नेठा बुना॥ दिवरवान इह रम पसुतीर थ्या॥ स
ना न की ये ते बहु फल दीरति॥७॥ गुना सु मंत सु
उ०१९ निब चर पुनाया॥ उतर हकहा जू चकमि हाया॥
राम चंद्र सुनु सासनि पाई॥ उतर परे तहिं जन
समुदाई॥ पाहु मछाया तम सर बेजना॥ कीन
निवास पाइ सुख घना॥ महा कीह पट वेष मलि
जोई॥ पुत जन तनाम तासु महिं सोई॥८॥ दोहरा॥
दो जुग सो मि ईमर तपुन पटमें दिर सुभ सारा॥ सुनपु
र वासी सकल जन ते कुसग्राभिन अपार॥ ९०॥ चौपई ८

कनात

पूरमदीह्रुचुतिंसीरतनाई॥कूपरचांदनिद
ईलगाई॥तिनमहंनिजपतनीउनराई॥यथा
योगसरीयनिकरिकाई॥११॥चारोउरलमा
येतंबू॥बिरुधाम्रबलिगडाये॥थंभ॥तुरगम
तेगबूरखउपरगरघस॥चहुंदिसिभूरिपादसं
खलझ॥१२॥बिबिधाकारधुजाबहुराजत॥को
कूपाटरंगबस्तुककछाजत॥बनिकहारनानाबिध
लाये॥अनिकभांतिबस्तुनिपठाये॥१३॥कयबिक्र
यतहिंकरतअनेकू॥लेतदेतनहिंगननतबिबेकू॥
वेरपांबूदजहांतहिंसोभित॥किलतजिरनहिंको
पिबलोभित॥१४॥दोहा॥पावबतीसरमाहिसब

७९ स॰ पा॰

रानी नागर नारि ॥ रामचंद्र आदिक कुंवर कुंवरी
सीय लै सारि ॥ १५ ॥ चौपई ॥ करि सुनान अंकै जेन
[illegible] ॥ सोभित भये न जाहि है माये ॥ पुष्पप
दमक के ध्यान हि आनी ॥ १ जित भस दासि वृक्ष घन
मानी ॥ १६ ॥ पावर वती सहित नाके पुन ॥ कुस तम
येनी राजन जनगुन ॥ पाढे आन विविध परका
रा ॥ भुंचे सब निजन निकर प्यारा ॥ १७ ॥ रात्री मे
जागरण हि कीनों ॥ उरूष तियो ले मस सजन भीनो
के वितन रतनि गावत कोऊ । पक्ष परव जावत बाजे
सोऊ ॥ १८ ॥ कथा सुनत भये केऊ जना ॥ मिश्रत हृ
रच यो जिन मना ॥ आरुध निसाज बभई विनी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ता॥ हरसा बातनभ ये प्रियचीता॥१४॥ सोरठा॥ पा
रबती केयुकति प्रभु देवगणें के साथ॥ उठि रज
नभे नामजी शिव रिसी या संगाथा॥२॥ चौपई॥
त्यो हरी भ्रात नि रजा कीनी॥ निज पतनी परिवार
नलीनी॥ सरब जनों के अ एवन बोले॥ महादेव
पुनि नाम अमोले॥२१॥ लोक हितार्थ मन नें मैं नाभी
रजो मो हि राम जेन साबी॥ जो जो उ नम कारन अ
चारा॥ इन रलोक नों कन उर धारा॥२२॥ सो अब
प्रमाण जो करही॥ सकल लोग तिन केअनुचरही॥
तुम हो निज नारायण देवा॥ सुभ इस्मी लखमि अ ता
भेवा॥२३॥ जगत लोक ताम्रण के ताई॥ तुम विबक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

८२ सा॰पा॰

सुरूपनरसाई॥नुमती की गति पावन लोके॥पस
रैमतिहरनअ्रनघोघे॥२४॥दोहरा॥जेनरसोक
रिहैंस्रवणजोपुनकरहिंबखान॥प्रेमसहितत
नपरिसदापारपरहिंभवजाना॥२५॥चौपाई॥
श्रीरामइतिनामतुमाना॥इहईसबबेदनिको
सामा॥जेकरिहैंइहनामबखान्॥त्वंतेपावत
मुक्तिनिर्मान्॥२६॥श्रीरामतनवनामगुसांई॥
कासीमरतहिंदेउंसुनाई॥जोकोदेनसोइनर
नारी॥पावपरमपदहोतसुखारी॥२७॥हेश्रीरा
ममहाभुजधारी॥सीतारमयासहितसुरारी॥म
महरिकमललकरुतुमबासा॥हौंहौंसदाजगल

पदरासा॥२८॥श्रीसनतउवाच॥इहकहिकवि
श्रीरामहिसिरंकर॥सामककविरजेअनंतकरि॥अंत्र
तरधानभयेमहादेवा॥पारवतीगएमहलै
सेवा॥२९॥दोहरा॥मानंनभयश्रीरामजीअ
पनेभागमहान॥त्रिसमयपाइनरनारिसब
नवअननगानरनिमान॥३०॥चौपई॥सुनाजो
रमानाथरघुनाथहि॥रमारूपजानकीगुमा
यहि॥तापाछेसकलेजनसोये॥सपुमाहिश्री
रामलभोये॥३१॥परंब्रह्मपरधामबिहारे॥का
रणजगतअत्रखिलतेपारे॥रघुनंदनजुगभुजा
समेता॥मनयचारेषघमायनसुतनेता॥३२॥सि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

टुस॰पा॰ वकुलादिक देवगन नाना ॥ ठाकुर दिक करि स्तुति
मं ता ॥ जसमना यथा मक्कारसदे षो ॥ ना बिधि गुन सी
ता ऋषि वेर्षि ॥ ३३ ॥ राम देव के चरण गहे करि मन
दुमनरहत करवदीयेमा दिधर ॥ ह्री कीरती मा वि
वैमा दिका ॥ भूवर उमया करि काम अधिना ॥ ३४ ॥
दोहरा ॥ या विधि वैकुंठ रमत नदी तीर साकेत ॥
पुरि वासी विरषत सकल लोक सम रूप हर षेत ॥
३५ ॥ इति श्री सतोपाख्याने सूतशौनक संवा
दे अष्टषष्टमो ध्यायः ॥ ६८ ॥ कवि वाक्य ॥ दो
हा ॥ करहिं चरित इस धाय महँ नाना विधि केरा
मा सीया सहित पर जन मिले भ्रात न निशुन प

रधाममा॥मू॥स्रनउका चा॥चौपई॥त्रर्ई यामज
बहुजनीसेषा॥रहीबादकनतबबाद्यकरेषू॥म्र
मिकनफीरीदुंदभिबोलहि॥उनरगामूनिजेतस
बडोलहि॥१॥सोमुनिनिहुनिखलबितागी॥
तेहूनजिसेनिकबडभागी॥पखिवारिकनतबउ
ठेहजात॥जीनपोथाधरवाहितियारा॥रा॥य
टिकाएकरहीजबरातता॥बंदीजननतबसिमटसं
घाता॥बचनउदारकहनितबलागे॥रामोमु
निपाठकसनुरागे॥३॥सहितजानकीमकहिंबो
धता॥बारबारबेरावलिसोधता॥पीवरकंधम
जाअजा॥ह॥कुडलरुचिरहृयशोभितकान्ह॥४॥दो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

८४ रा०पा

हरा॥ अंगराग तातवि रलाय होइ तउनकि तो सवीरा॥ स्रा
य्यासौ मर दत भयो कुवार निविषेजीशापा॥ चौ
पई॥ सतन यनसुभ लाली भावनि॥ निद्रा साथ
सुलगात सुहावन॥ वैतालिका ऊचुः॥ महाराज नि
द्रा तजि जागिया॥ माइ तात विश्वपाल निलागियाई
ग्रेस्देव निद्रावस ताकरि॥ तुमन विलोकत नयन
हरि घर॥ जनक राजकी सीया कुमारी॥ ब्याह सरवी
य निकट परिवारी॥७॥ ओराजनजी राजन हेत॥ मं
गल वस्तु लीयि करि केता॥ पुरमत रनुमं रे वंदु निभान
ना॥ जिह विधि शसि गयो गगन मलान ना॥८॥ हे भरि
द महाराज भवान॥ नेत्रयुग मर खोलि यसुख दान॥

विगसकेजज्यों रामसुहावन॥ तुमरे लोचनसमता
पावत॥ ५१॥ दोहरा॥ नाराजिम गोलक भ्रमति औबु
कपंकजमांहि॥ तुखपो कि मिस्युनपवनमुखसा
सन्तिसमचांहि॥ ५१॥ चौपई॥ सीतलजलपल्लव
रव मुंड्राणे॥ परनमुकतसमसोभा लागे॥ ज्यों दारा
नाश्यामें मोती॥ जुगलडोष्टपरिफलकतजोती॥
५१॥ जबलगिउदेहोतनरविभानू॥ तमनाशकपु
रकाश्यकमानू॥ तबलगिऊसमाईकरिनभमें
हू रविभयोतमकाबरियासमभेो॥ ५२॥ युहरे तजब
लगीनहींआवत॥ पितातुमारराम जनभावत॥ प्रा
करि तुनिबलहिंशामेंकालिया॥ तबलगिचाहियचेतन

८५ स० पा०

नालिया॥१४॥दोहरा॥मतमतं गनिंद्रतजी हेरख
लकर्षतज्ञा गा॥ दंतरकततजिनके भये सरजर बिम
निलामा॥१५॥चौपई॥हु यहिल कतपट वैष्णनि
मारी॥भोजन हितम घर षतमारी॥पुष पहार
नेभये मलीना॥सय्यायामझेर चेनवीना॥१६॥
दीपवना मन्त्र बपसर तना हो॥सरबडो रप्रभुउ
डुपक पासीं॥हेतपकाव निरा षेजेई॥ डेहस्क पठ
तिसुहावनितेई॥१७॥सतउवाच॥केन्पा बेदकु
मामासबहैं॥निद्रातात्कमये तेसबबहैं॥झामेहक
करमकीयेंकदिनाया॥बसतरम छेलपदहिरेगा
ता॥१८॥बिंत निकरतसकलतिहकाला॥पुन॥

उठेतामसबहनिद्रालसगि॥दईसकलचालनकनआवति
उ

पंजर
सुंदर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निज निज बाहन चढि चाल्ला ॥ सीता ध्याय सुच
शिव का माहीं ॥ अरु चढे रथ पर ते जाहीं ॥ रणसिंहा
शंख दुंदुभी नाद भय चलत न भये रघुनाथ ॥ मतंग
बन गाजराज सब उतर दिशा को जात ॥ ३ ॥ चौपई ॥
तिन पाछे ते सबै सेनका ॥ चले जाहिं पुहर बन तजै नक
शत्रुजय जैनाम अनंत ॥ हे मनोपर जो भानुजनेगा
र ॥ लषमन नवे धुसो चौर रुनाई ॥ ताक पितो भन
श्री रघुराई ॥ हस्तारूढ सुकेत्र बखानता ॥ मकरि
घ्रतिरुलान छिन तीर तानन ॥ ४४ ॥ इहर पिथीवी महु सूज
गु साई ॥ धान्यवती धन लगात नसुहाई ॥ सरको मो
इह देश सुहावनता ॥ अरु तन रमणीक कोमा मन भावनता ॥ ४३

८६स.पा.

धर्म शील लक्ष्मण साधु सुभाकथा ॥ ६ ॥ इहं वस तिजेउ न
स मुदाकथा ॥ शालीनै दुल घर एण किर षी ॥ मोघम
कमिसो हस्तु वर षी ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ देव घर रहे ज्यासो
लता सु दुम फल परि ॥ गोया ला वायु को एम दु
स्सार थनू पकसिमू रि ॥ १ ॥ चौपई ॥ नाना धा
तु विचित्र तनु नर ॥ पर बनरम निहाविय खेदर ॥
नदी विविध विधरस तिप्रवाहा ॥ पार्वतीया पाप
हराहा ॥ २ ॥ जे वनइ तनु न रमणीया ॥ फल
विपुष पयुत तरु कमनीया ॥ पर मम मेवा रमदिस
सुखानी ॥ इह सु किता मह व पमन नमानी ॥ ३ ॥ नि
र पिन दीपुन कि करे दवालया ॥ विमोना मवर एण मकन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लया॥ क्षमा तीरथ मनोरथ माही॥ निज बल द
ई उतावरमहां ही॥ रघा॥ जनम ये महसता छई
परकेहि रनहत ररहुगड़॥ सबी गलै कबिदु
तनब सोता॥ कता नहे तम्राई सहसीना॥ रस
दोहा॥ पुतिरषीरात नएकाइ कबिजनकसुता
मधुक्रीडा॥ पदकमलोचनी रामसंग बिहरत
जल नविजुड़ि॥ १६०॥ चौपई॥ षेंचत बेलन उमे
परस्पर॥ जिमि सरनि मनमथ हरषत बरा॥ टल
गिघोर अबनि सनि तैना॥ तेहि सीय राम सहुबि
छैमा॥ छय॥ तुम कत॥ बचन कहत तबरामा॥ रा
नकननय छ लिका तक्रा भिनामा॥ जे सेतु मनकोर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharati Initiative

९७ रा०प० मासीयागाते सेइस्त हि मेरमणीयमा॥३॥ उद्या
लकके आश्रमरहते॥ पररूमश्र दशुताउपजत
हते॥ मरवत्र स्था निश्रवेर निकरिके॥ सरघाते
३३ मैसगातमइस्सरके॥ इसकेसनानमा॥३॥ तियन
रके॥ पुएरवृहिहोइहैं स्रघ्र हरिके॥ क्रमसकरित
मगायेसरितीला॥ धारेनिजतनमसकलेचीना॥३॥
धीये दानविप्रनिकेताइ॥ भोजविविधयुतसव
निजिवाइ॥ बहुरिमरा पभुहेश्री रामा॥ निजसेना
सहसीय जनग्रामा॥ अनुपाः दोहरा॥ सेनिकीयेउ
क देह कृतन करिकुसंनिइवप्राह॥ इहवनक्राया रम
श्र वपुघपनिरहितम्रगाह॥ ३५॥ सोरठा॥ धुमम
निसेचनिहेतपुरवासी गवनहिसकल॥ गुमभीमो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२ सकेलखमीयासखी परिवारि चलु॥३४॥इति
श्री सत्योपाख्याने सूत शौनक संवादे एकोन
सप्ततमोध्यायः॥६९॥ कविवाक॥दोहरा॥इ
सध्याय मैं राम जी सुमन किग्रहें बहु भांत॥ चतुर
भ्रात निज बधु निसह कीडत बन बन जात॥श्र
श्री राम उवाच॥चौपई॥बन शोभा निकहुं सब
ही लोका॥ग्रह कहु दिस रहि न सब शोका॥स
रकुंभर नेह करानादं॥किर कुपला बहु दास सबंदु
दं॥१॥ भैसे कहि करि श्री रघुनाथा॥ मवनिकी
न सीता कु दिस्वाथा॥ ते सब कैकन नवलेपाइं॥
बिसत निहोइ इनउ न कहुं जाई॥२॥ बटरि नुं दृ
प्रापन ता बनमै॥बिस रत तम यघन बन ननता षिन

सुनिद सें
करिजीवपला
तो॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मैं।।फलकुसुममनिदललकरिदुमधुरका।।नरहो
होतभयेसवगगुनिमुकेता।।७।।दोहा।।स्रायसु
पाकरिकंगमता निजमनइभइवरोका।।सुखसु
ममसोचनभईस्त्रांगेचलतस्त्ररोका।।५।।चौपई
कोइकुस्त्रीघुममनतनुसकावता।।कोउकंदचल
तमुदपावता।।पदनिमाहिनूपुरमुभगाजता
करिमेखलासुहावनिबाजनता।।६।।कुस्वनेसंद
कागीगिरपरहीं।।कुचविवभारनमनतुमगाचरहीं
लज्जतमइमांडवीदेवी।।निजउरमाहिविचार
करेवी।।७।।कैसेकुसमसरामकेस्त्रांगा।।इनतउतफि
र केउनवलिलागा।।मंदमंदगतिपाइचलहीं।।
भरतामुतभामनिमनुसरहीं।।८।।लज्जाकरिम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रतरिकहिवाच्या॥नामउरमिलानिजपतिसा
था॥गाइ बनोंनरमाद्वीसोइ॥सखीयोंकरिप
रिवारिनहोइ॥१॥दोहरा॥फ्ल तिकीरतीलषह
निबधूलाजनकानन्नमाना॥ताइवयसमेंमति ता
यासहित गजगामि निवृतमाना॥१०॥चौप
इ॥सरनउवाच्या॥नरनारीसहस्रतिहकाला॥की
नेंबनप्रवेससबबाला॥प्रभुमगाझ्हरीजानकी ननकाला
जोइ॥राजिवलोचनरामकहोइ॥रवातस्त्रहा
वतबीटकपाना॥गवनिरामकेपाछेठाना॥रामर
चंद्रमहाबाहुहनुनी॥सीघ्रुनगावनिकमियाजि
नस्वामी॥१२॥पीछेआवतप्रियानिहारी॥नाकृति

१९८ का॰ पा॰

इ श्रम गइ तिन्ह श्रम भारी ॥ तासु बाक सुनि दृत समु
खरामा ॥ प्रिया कंठ निज भुज धरि चरण समा ॥ १३ ॥
चलत न भये निरषि निज बन सोभा ॥ बहु बिधि कुसुम
पिषि मन लोभा ॥ सषी यां प्रभु मन यत निकुल ला
ई ॥ निज करि गुथ माला हिय परि आई ॥ १४ ॥ दोह
रा ॥ दई पुसप माला प्रभु भगवान मयपति हित सुसका
ई ॥ कंठ धरे भ्रातन प्रीति सो प्रभु हृत न भये रघुराई ॥ १५
चौपई ॥ बिनास कमाला उर हरषामी ॥ निज करि
सो प्रभु अंतर जामी ॥ प्रभु सकल तेऊ हृत न प्रिया सो भा
मा ॥ सादर नाहि यह कहि सुमि बिलता मा ॥ १६ ॥ पुसप
मयी सर जे सो रमणीया ॥ उरप हिमाई सीय हरषी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

या॥ करण पुष्प पठ्ठ य करै लों मांही॥ राषत म
ये पालि निज नांहीं॥ मधुर भाषत्नी मुसकत भाष
ना॥ वाम दिसन मुख लोचनि राषत॥ सीतो बाचै
करण मोर भूषित नर हुताई॥ गुल्म यरत नि।
जर तन हुताई॥ ८॥ श्रवणी कर तकृयान वजोई
भूषित करण जे यार य सोई॥ श्र सकहि सीतम्मा
पसि धारी॥ तांई कुसम लवा नि हित धारी॥ ९॥
दोहरा॥ जान की कदि मुख पदम की भुमर ले न मों
धा॥ कुसम सकल न जि दीये तन बल परसी या सुगंध
रा॥ चौपई॥ श्र य सी ना बर पद हि नि हा दी॥ कुं जु का
रया वद मुनि भादी॥ मन मुख वचे षि रामक हि मा॥

९.सना. दोरी भय युत विछु बिस्मा माया रशा न्रूप रा निमि
जेपदे बजा वुत ताम खियरा खियमेकोम्सु मावनाराम
श्रत मक्षं कपु निक रधाइ ॥ क्षा प पातक्ष मक्सुपाई
दूरा ॥३॥ भय कुच निकदि नामविदे कहुं ॥ पर सतम
ईहर षनि जमन मडुं ॥ कंठ लगा निसो भाग्य सते
ही ॥ हे मललता नमाल लन रूजे ही ॥ रख ॥ हसतबदन
माध वतनबक हिंहि ॥ पी निपराय एप्रिया जो म्ह हिही
आपमिल निनेमो कहुं पिमारी ॥ दीयो महतसुरव्र
मस्तिउ धारी ॥ रख ॥ दोहरा पपति केब बक्समसुनत
ही सुसकानी सियवाम्हा ॥ तबही देवी जानकी स्वामी
मक्षमा ना ॥ रपा चौपई ॥ सुसकावनसुलोचना ९

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सीया॥ पहिरावत भई फुलरमणीया॥ इह
विधति नरघुपति के विचरत॥ मदन रति
सजि मनाय थवी विहरता॥ २६॥ इत मैमकुंक्रस्ता
चलस्कता॥ ग्राग्रमये शिखर प्रतिरुता॥ तब रा
मादिक सकल कुमारा॥ सीता ह्या करति यम्र
नुहारा॥ २७॥ पश्चिम पर मुख संध्या कीनी॥ प
टवेश मनि शया पुनु झीनी॥ शायन करत मे
सब नरनारी॥ नदी तीर कृत संदर सारी॥ २८॥
दोहरा॥ हरषत मन बूझत सकल [illegible] जनति
ये रघुनाथ॥ याम गई निसि सयन तब गई र   जम
जनि सुखसाथ॥ २९॥ इति श्री सतोपमथानेस्क

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२६ पा॰ नसौ न कछु संसा देस न न रमोघ्याय:॥७॥
कवि बाक॥ दोहा॥ मन य थल मे जे हैं प्रभ
कवि सनान न मुकदान॥ इस घा येरघुरा
मजी कुरहिं सुमत बखाना॥१॥ श्री रघोवास
चौपई॥ प्रात भये दुंदभि जब बाजे॥ उठे स
कल जन मन अनुरागे॥ भूरि कक मिकीये
विभ्रारी विधार बैका॥ मासम पंए कीये मुरबैका॥
चढतम पुनरा घव भात नि केसहि तुम पूरबे संघोपाम
ररवका॥ निग्रहिता॥ पुनराजु राजे भये सुकृत॥ भव ले
मव स्यलपरम भ कृता॥२॥ सिनाम हु तोले
ई सब सेमा॥ सीता संयुत वी यीतेमा॥ खडे भ

नीरमननरिसंभ्रमभागे।।भयेविलोकतमननकुअनु
रागे।।२।।नापाहिंमधपाइमयोजबाग्राम
येमनतस्यलमैंनबानबउनरतमेगजनेरामा
सैनासहितकीनबिस्रामा।।नातीरपयपरसीयो
सनाना।।सरघासहितमधिदीयेदना।।वैस
वसनवासीस्कविधुहि।।बुलचारिलहिबानपस
हि।।५।।दोहरा।।भोजनिभुंचाबेसबनिदईदहि
ए।।अंतेना।।बहुतेंभुगमेंत्रनजनहिनिसिरहेम
बेना।।१६।।चौपई।।प्रातकालतबरामगमनहित
मनदीनोंचलसैनकसहिं।।महमनचमेगजबा २
जरथानरा।।चतुरंगनिबलसरमहांबराधा।।मि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१९ स०पा० विकाकुवरिचढायदइटधि॥रामचवभयेमूक
ढमतंगजा॥दद्धिजएदिसाहि विलोकनिकरहे॥
व महतीचमंरहरथविनवरहीौबलनसवोच
न रवमफकरेषा॥रघुनायकपदकंजवशेषा॥जे
वीषेटसुमंतकुनामा॥सन्नमभंत्रनिमाहिप्र
धाना॥१९॥दोहरा॥देवसानदरूरमफसतकै
कंजनिकरिप्रणाकाहेमामतडागडसमोहि
केहोफलसदी॥१०॥दोपई॥सुमंतउवाच॥
उग्रतपनामोइकब्राह्मणा॥वेताधर्मदृढजप
ठानइणा॥स्वर्गलोकप्राप्तहितताहिया॥महाराज
नपिऔतपमारिया॥११॥ताकेसपविनाशकेका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रण ।। गर्वित जोबन रूप जो नारखा हे अरि
रूदन स्वरकी वेश्या ।। सुरपति पठी पंच अद्र
वेश्या ।। ८२ ।। वन दहन आइ गई सो सरवा ।।
ऋषि आश्रम उत्तम सहित गरवा ।। आलिंगन
दीनें सिहताई ।। पुन आकुल ऋषि भयो तदा
ई ।। ८३ ।। सहत क्रोध कर युगत भयो नवा ।। पु
ति वंगना कहत भयो नवा ।। तुम बडवा होक घोडी
रि इह ठाये ।। व सरूपा इत्थितिम संत लाये ।। ८४
दोहरा ।। पंचास्या इह नाम सरस्वा ।। तिह ओव जग
माहि ।। उवशी देवी जान कीराम ज्ञा सुकेनाहि ।। ८५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

५६ स.पा. चौपई ॥ काल पाइ करि सो यस सखिनी ॥ छोडै दे
सहपति सखि जन सखिनी ॥ सुदर दे पति निर
बदु तुम हूं ॥ सुकति हेहु नहि ता में कम हू ॥ द
नादि नते ले करभो रामा ॥ स्त्रव निरूप वसति
८ इ ठामा ॥ तिन्ह करि सापकी मोच निचहि ये ॥
करुण निधेज्ञ परका कहि ये ॥ ७ ॥ ए वैश नक
नवइ हनु निरामा ॥ पुर्या सहि नदया वारिध
धामा ॥ सीता सम्बसेना के संयुत ॥ करत भये
रूपांकत तहि वास दयायुता ॥ ॥ ससुन रम लीक सरोव
युत र तहि ही ॥ सखि ता एवै दे हा र हि ही ॥ न हां आइ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रीरामउवाच

रमया सहरतनमः ॥ नारि पतिव्रित ति मे कीन सुरा
मः ॥ गं ॥ दोहरा ॥ पांचो बहु वारूप धरचरन फि
रतन एहुला सुह ॥ निजकरि सों सीय हाथ गहि क
हि बचन रामउतनाल ॥ २७ ॥ चौपई ॥ देवी प्रिय हु
नहि अब देखिय ॥ दया भई जस मापत पेखिय
तुम री कृपा करा ह तन एह ॥ देवलोक जै हैं वरदेह
रा ॥ पति की आय सु सुनि कहि सीता ॥ करि कर ल
अवलोकनि की ना ॥ सीया करा हि मा उकरि सोई
अछिन नतन न तन तिसु दरहोई ॥ २८ ॥ पुनि सुन करत
पूरन ममसकलन बा ॥ सीया राम पै जुगल मनामस ८
वा ॥ उक्त तिकरि एजा की विधि बता ॥ उन: बिमान नि

९५ स०पा०

चढि लई प्रभु मन निज रहा ।। सर्व लोक के पेखित
मन हर्षाना ई वंत मएन सुध सुर तन बही ।। मादि मते
इह सम जन पाव न ऐ ।। पृथ्वी तल सह हुं ती रघुना
थ वाले ।। देह हर ।। तत हिं सन ना न करि दास क रि
मा पद दोष भय दो दशि ।। तब सी ता प्रभु के लोचनी
पनि हिं प्रार्थ तन उरी ।। रघुपा चौ पई ।। सजल हो नाथ
इन तं ठाव मनो हर राजीव पान हि त कवियन सौ
व राम हि सी ता जस्मा दि कजे जीय ।। नाथ कु
ल वनाक रणी या ।। रघुपात बीरा म ठ ढि क मितन
कुलाल धनुष को तन्तु सों कीनी कामा ।। प्रभु रघु तेक
ह्यो नाम न विख्याता ।। रघुवारा म लो क सा ख्याता ।।

२७॥ दोहा॥ जूठहिं सन नृमूरुकदानकरि
श्रपु सब बलमय लोइ जाना॥ सौनक नहिं वृषार
मजी बली बिनाई मनना॥२८॥ इति श्री समो
पारव्यानेस्रन सौनक संबादे एकसप्तमो
ध्यायः॥७१॥ कविबाक॥ दोहा॥ नीरयबहु
करिहैं प्रभ महस धायकेनाहिं॥ मीरयमंगल
मोदमर जहिं जहिं रघुवर जाहिं॥१॥ श्री सूत
उवाच॥ चौपई॥ नहांस्रारवृंदई बिनाई॥
मन पुन धतागव निरहुराई॥ निज मैनामह
तीके साथा॥ बहुरें चलत भये रघुनाथा॥१॥
सरखत्रोर नेना उमंग गाई॥ सरजू ते सब सेनन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

८५ सं॰पा॰

गाई। मनहिं देइ तहिं परकी नों बासा॥ बिल्व दृष्टिः
जहिं सुरये निवासा॥२॥ ताहि ठां ग्राम बसे व
ड़ु आई। असी ना निरखु निकों हरखाई॥ नाना
वस्तु भेट उपहारा॥ जैसे मंगल डुव करि धा
रा॥३॥ जनकसुता के पाद पदम पवि॥ रजा
अरपण करत भई वरा॥ नामु चरण युग की
तुपु एन करा॥ परमें दरनहिं कीन विरामा॥४॥
दोहरा॥ तामु पास थिति पाइ कवि सुरवीर्भ
मन मोदा॥ बली निरखि तीजानकहिं मदेवी
मन मोद जिनि बिनोद॥५॥ गोवडु। गोने वरएर स वर्थि सम
भामा॥ के चन मम पार करका भा॥ चंद्रु रानन

श्री मुखचंद्रप्रभासो॥ रामकमलछबी प्रियाप्रभा
रा सो॥६४॥ रूपराम सिंशिवमारे धारी॥ देवरामनना
परमउदारी॥ नाथाकेसेकतनकरमलीकें॥
सर्लंभरनूकदि निरमलमनीके॥७०॥ सीयाकेदुदरी
दियापनये॥ केजलोचनाकोमललगाये॥ भूषन
वसनसबीरसंगकवि॥ येमोभाप्रभुवननदिननदिनेश
कबि॥७१॥ कामल्वापडिमसो॥ नाहुहे॥ प्रभुगा
येसीताकेसोहे॥ मनिंस्कृकतासेजरताटहृ॥
उभयकरएत्नोभिनमत्रानेकृ॥७२॥ देहता॥ बिलो
नीलोनाताऊमकुकनारनमिविविखु॥ गुपन
फललनिरमानसनवएवमानात्रभविजा॥७३॥ ली

२६ स.पा

६७

पङ्गादेतेंकीकुविकरिजनुमोहतेता॥ दाडिम
बीजहिंसीताओहनाज्ञापरजुगलकेरिमि
नमिंदनेता॥ रकतार्ड़ बेधककमंदनेता॥ २॥ पखु
एगिदिकञ्जकमली युनिमाला॥ पुरनकेढ
नमहरिजालाःमब एरविनकेनुकीमुलाई॥
निषनमालजनुसेभाषाई॥ रा॥ ञ्जस्तनिनि
हर पीनञ्जकजूचे॥ स्तारीषुनेनगोपुतिस्व
नैसेरीविवभुजसुभराजता॥ केतुकमञ्जगदके
रिकुविलजता॥ थाकेक निकुरपरकोपसुहा
वै॥ करमुककालिमेंढ विपवै॥ नामीकुदके
स्रतमोभीता॥ जि घोसोभनिसुंदरश्रीरामथा॥ दो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हरना॥कनककरन्चितनकरिमेरवलानिनेवेंपरि
छुद्रिपाउ॥७॥कूकहृदयरमणीक्रमनरंभास्तंभ
लजाइ॥नपपरवैापडी॥पादकटकदोऊपादबि
राजहिं॥नैसबहिंहेसकभूषितकाजहिं॥ग्रामब
धुनिडूमसीयाविलोकी॥लहितलहलरा
तो जहिबोंकी॥७५॥सबविहुंसाहियानिजसी
ना॥हैलषमीतियसोभादीना॥इहलखिपा
दपदमपरएमला॥कीनतिवहिंसबभगतिरि
भ्रान्त॥७६॥नानाभुखनेपुवहहुनिलागी॥भा
गमोत्रकुलमशुनिअनुरागी॥वाचालापकीन
तिनसेमा॥हैमुखीलसासबवपियसेमा॥७७॥

लं० म० १७०

महात्मा तिनिन कहुं दिये मंडन नाम। विस्व वि
प्रति ह्यौ तिनरंबंड ना। पुन फल उत्तम नार तिदी
नै। भ्रम नत्र भख तिस दान बीनै। १५१। दोहरा।।
जे हिं ठौ मंडन दीन सियजू सु पुन कीन निवास।।
तखमा मंडन नाम तिहंथान लोक परकास।।
२५२। चौपई। प्रस्ततो वाचा। सीता दिक कौ पुन पुन
सब हीौ। कवि परणा मपूर्व हिए न बहीौ। सकल
गई निज निज गृह माही। ब हेला मजी रात न नाही।।
२१। उठि सनानन कीनो सरजू जला। भविदान दी
नै पुन ना प्रतला। बिल्वहरे पद सीस निवावा।। वि
धवत पूजा परम सुख पावा। रघुरा मन रायजनों सह

गवतैं नाथ॥ नंद ग्राम उतरे सब साथ॥ मा
नैं ग्राम अनेक निहारे॥ तिन तीर थल अनगन त
३१ दिखारे॥ श्रीपति कृत पुराण मकरंद ठाउं॥ पु
सूत नै मनौं दान निज पराउं॥ तन मन सामसर जल म था
जो अरसी॥ जेत करै फल ता सम ग्रंथ मी॥ २४॥ दे
हरा॥ ता हि तो यस जैहू बीसी ना पूनि कहि राग म
का कुत स्यूनि के अखिल यग पत्र अनेक निवासू॥
२५॥ चौपई॥ पुत्रिया सीयपुतनि निरखि ललदि खायो॥
नंद ग्राम थिति नाम लखायो॥ ता पाछैं बहु दग्ध व
जिसा ये॥ से निकुमक लामु दत है होइ पायो॥ २६॥
जाके दरसनि निज अघ नासतु॥ नंद ग्राम कहु पु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

९८ स॰ पा॰

एकप्रकाश्यानं।।करतलभयेनहिंसबज्रागारनं।।
कथाभीतनन सकलआचरनं।।२१।।भरतेप्रभु
मांडवीकुवरन।।ओवरामिनकीजियस्तुभक्रवक
इहांकुलआपनिरविदीजे।।निजसंस्त्रासंकना
मधरीजे।।२२।।सोसुनिभरनतामनेक्रायस्तु।।
मांगीजायदईप्रभुपायसु।।कसीलगायकर
नेभरखनकें।।भरतकुंडतिहनामधरनकें।।२३।।
दोहरा।।सोभितभयसकलोलजलनानापद्म
रमाल।।प्रभुपेषीगलखलोकननेकवाकुसु
नि लिमाल।।कु।।चौपइ।।सीयारामकुसिएजेसोने
भरबनिनसनिआदिनेपीने।।भदेवनिमोजनि

कि

करि बायो॥ हि मस ढूँढै सब पुनि जि बायो॥३१॥
एक जे सन्मान कृत ग्राद र॥ सा षे जा चक त्यों हि
नाम र॥ ता हि मने इह तीरथ म इउ॥ लोक म हि
परगट होइ रहिउ॥३४॥ जा सम मान दान कहि ये
कू॥ सो ताको मम पुनीत किये कू॥ नंद ग्राम ते दसि
ए जो सा॥ गया कूपते उत्तर यो सा॥३५॥ दोहरा॥
भरत कुंड भा नाम जिहि तीरथ जगत महान॥ वि
मल पुभा कमि ता जहीं मन घसन नी दान॥३६॥
इति श्री सत्योपाख्याने स्तत मो नम कसंवादे दि
सप्ततमो ध्याय:॥७२॥ कवि वाक॥ दोहरा॥

२२ स॰ पा॰ इसध्यायमकहूंआइगीकथामुनीस्वर एका॥न
पकरिसीतावरलीयोहेइस्तुरवीसविवेका॥१॥
स्रतउवाच॥चौपई॥तहिंसमानकविदीनेदाना॥
रायवसीतासहितसुजाना॥पुनसेनायुतकीन
पयाने॥पहुचेनवरमनरुकरस्याने॥१॥उकं
रमासीतासभयथिति॥रमरामसिलसुंदरिनि
भिता॥रमापादसोठांवप्रसिद्ध॥तहिंदीकोमुनि
महासिद्ध॥२॥अधायजानकीकरिकेवास॥अी
रएभयोकलेवरतास॥सखीकोइवासंतकना
मा॥सीताकरिमनोहरराउपामा॥३॥पुखपलिस्कावनि

बनहिं पठाई ॥ सो मुनि पुंगव निरखे आई ॥ मै
तसी सकल चतुरक नकिहआ ॥ जरा कलेवर जीरण
सारा ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ मान सिंह आवत निरख हुल
दमी पाद सरोज ॥ पेख्यो नाहिं बसंत का सिरन
म पद कंज मो ज ॥ ८ ॥ चौपई ॥ आन जान किहि निवे
सुनायो ॥ दरसा नि मेइक मुनि करि पायो ॥ आलि
समु निस रहसा उठि चाली ॥ तन मन मल ऋषि पति स
ह आली ॥ ९ ॥ रमा पाद मुनिवर केपासा ॥ आइ सी
पाद रमा निकी आसा ॥ सतन उवाचा ॥ नृप वह धुनि सु की
न तमु नीस्वर ॥ बाल नयन निरख्यो योगीस्वर ॥
गाहि बैसन मुख मनतेज मया ॥ रामना रायण ह

१०स०पा० बिहरभवभयापुनलछमीमयसीयाविलोकी
करतप्रणामपुनीमननतोषी॥८॥प्रणतहेत
प्रजनभयोइनकों॥सीताराममहितजनतिन
को॥नुहतहेतजानकीदेवी॥शिरकविकरप्रण
मपुनितेवी॥९॥ ॥रमापादउवाच॥वि
जय भंगीकंदो॥जयतनुवभाषीपंकजाक्षादीजोमवसा
जय हीरामप्रियेो॥जयतवमातालछमीमाताजय
स्तुति जगतारपवसोहियेो॥मुनिमहादेवीनमःकरे
जय वीसुरपतिसेवीसवकिये॥रामप्रियाप्रीप्रणाम
सुधारीदयानिधानेनमःकियेो॥१०॥सुपदमाल लिये
यरामप्रियालयसीसधरालयपादत्वयेो॥सुजे १०
ये

गजाननीकसल्लाकरनीनमोनमस्तेपादकयो॥
विश्वेश्वरपिञारीदयाउदारीनमःउचारीभाव
लियोलीलागविननयेउयजगजननयेनमःनम
स्तेकेवल नमिये।।२३।। विश्वेश्वरिप्रियपरमेश्व हरि
रि शारण्यगतिमैंना बिलसोंदिवदेवेष्पाहिनु जय
भतेष्पाहिदेवदेवेशी पांउमंहोंमैजोऊहुंहरिदा मो
रिद्वंकसल्लाकरिममदुषदहोउद्वेलोकउपाव
निकृनपुनपावनिनमःनमस्तेजलनिजहो।।२५।।
बुलादिनमंतेजगाताअंतेश्रानेददातीकृपाकरे
जयरामप्रियास्तुनमःनमास्तुःदयाकरास्तुःअखिल
धरोअस्मारतिहारेनमःकतालेसमर्दिकारेनमःप
जय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जय

१७१ स.पा रे॥ॐ अंबुज वासे वंद नि भासे च पलायै तै नम

जय स्करे॥२७॥ सलवरमा मि नि मो मन भाव नि

जय चलरूपा नमो नमः॥ मां परिपालय दासानि

जालय त्वं शरणागति मातु नमः॥ मसरण पु

पवं कमले जननं एकमलानन नमः ते मः॥

जय श्री शाही मे महामाई शालिपवतायणापरिसु

महामाय॥ दोहरा॥ भोसी ने बहु कह नि कावो

लव बारंबार॥ ज्ञान सा सएन हि मोर कोतु दी

शसए माधा भा॥२०॥ सीमे वा चा॥ चौपई॥ जि

नेवकरी पुएफमयउस्तति॥ जेमानव नहि कर

सि.द हि जगुपसंनि॥ जेमगानी युन स्थ व एकचा ही॥ ति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नमःकुंवकुसंपदवैभवाह्नी॥२१॥जिपतिर्हिं हृध्याने
उठिएदी॥मिराध्या भगतिसम नित नजे ही॥सुव
सोभागपदोडसंपदं॥बुद्धिमानरिद्धिमान
भवन्॥२२॥प्रतवानगुणवानभ्रेष्टाहोइ
भगतिपुतमनुजयथेष्टा॥इहंतोत्रमदपु ३
एपमयामिसदविदुहिंनामकसुवमयाम्र
हिपष्ठसादजनहिउपजावै॥चतुर्वरगफल
तुरतउपावै॥इहकृददीनमुनीकहुंसीता॥२३
मचंदसंपुतकमिप्रीता॥विघुनिविनायसुरवरी
सोऊ॥रमारामविवहारककोऊ॥प्रातभयोर
मातीरयअन्हायो॥श्रीसरयूजलपरसहायो॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१५स०प० रूपा॥दोहा॥रामसीतासहधर्मात्मागावनअयोध्या
ओरामात्रापलएकद्वीवेपएमजनेवेगमवेष्यावडे
क रा॥२६॥षीएकसैनकवर्णजनउत्तादिकसव
साथ॥बाहनचक्रिडेसकलरथगजनेसव
लेएक पदातना॥२७॥हेदा॥तुम्मापनिंचलेसवहीसा ओर
तुमले रिनातुरिपै[illegible]गवने[illegible]नवहीं॥तुपनिहनि[illegible]प्रा
भ्रमपतमेमैनिममर्यादृकथा[illegible]वृद्दनो॥२८॥इनठो के
पति [illegible]वृरमा[illegible]आदिमहा॥तपिडोनपदुसतरए
वजहा॥किलदेननिकेहितनाथा॥नेको॥मुरु
नाथुतुरे[illegible]जयकामनिको॥२९॥सोरठा॥ना
दिनकोदइठांवजुपनहदीक[illegible]लोकमें॥नाम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रगट परम भावक कह्यो मम चलत चित दयो।।२।
चौपई।। भ्रमयो धपा पुर प्रापत भेसरवे।।निज
निज गृहि नाभार गति गमके।।राम भ्रात रसंयु
त कृत्रा यो।।राज द्वार पाक रिठ हिराये।।२१।।म
जते उतर पवेर घुराई।।राजा कें पर एक करा
ई।।मुजसे गहि रान हिं नर पाल्ह।।कैठल्या इ
ति महि सब बाल।।२२।।परमा नेद मह मन
पायो।।भ्राये पुत्र निर विहूर घायो।।कौशल्या
च सुमित्रा रानी।।कैकेई तैसे अपरानी।।२३।।स
ब हि पुत्रन मक्री नर घुनायो।।भ्रात सउरलाये
सब मानां।।सारव निसी ना करी पुत्रन माभगति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करि

१२३स॰पा॰ निसहित मुदत सब भामा ॥३॥ दोहरा ॥ पति
नको कंठ लगाइ मिली रानिन सनेह ॥ सब धव
रानन निको सकल पति सुत निज निज गेह ॥१॥
पवंग मकूद ॥ गई बहुरि ऽम जान सो तीरथ यात्रा
करि आये श्री रामप[...]रात मक्तातुरा ॥ जो सुनि
है इह सदा भगति युत पातरा ॥ कहै सुनि करे यु
त भगति न करि मन का नभया ॥३॥ सोरठा ॥ ता
जन को फल होइ तीरथ यात्रा सकल को ॥ न
हि संसय शुचि सो इहै अधिकारी परम पद ॥४॥
इति श्री सत्योपाख्याने सूत शौनक संवादे वि
सप्तमोध्यायः ॥७॥ अथ कवि वाक्य ॥ दोहरा ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इसधायमैंकथाइहआवैसियइककाल
ला॥मालपरिहिरावतभूनभयोमलिसिषिति
यपतिनाला॥१॥सोनकउवाचा॥चौपई॥
अहेस्रतककरूएनिधमोहू॥रामविहमसु
नाइयसोहू॥जाकेस्रवणमाउकरिमोमन
कैबहुंकहाविनकतनजातकना॥१॥म्मनउ
वाच॥सुनहुविप्रमहामागमोहतेप्रसमकु
धानहिरषवतोहतोअस्रषोकविपुनिजहिर
रमणीकाया॥सोघवसीतासहितसषीतासुरा
कीनभुवेसाविहारविमिसिन्ना॥ताकेजोविनोद
अगनिमा॥सुनियसरकुसरतीसंयुक्ता॥जत

१५ रा.पा. कात्मजा गई प्रभु का ॥ ३ ॥ राम सहित मारम
वन सोकू ॥ नाना भाव मनोरम हेकू ॥ कीर
ति गाय शील करि निज के ॥ सुनत मनहिं भर
ना सिय भिज के ॥ ४ ॥ दोहा ॥ अस सोक वाटि
का जाइ नित मन बरितु करत विहारा ॥ सीता रम
या सायब दु राम करत नृक्षा चार ॥ ५ ॥ चौपई
एक दिवस सीता सुखि देवी ॥ पुष्प मनई मा
ला करि लेवी ॥ डार तिला गि राम गालि माही
६ निरषत भई देह निज नाही ॥ क्षाप निमलि प्र
ति बिंब निहारा ॥ उर मधु दुंसे हमयो तब भारा ॥
कौसल भरा मचे द्रुकरि के ठे ॥ दे राम नोहर मन

परि गंठे॥७॥ दूसर बाल शंक उरगाई॥ सीय
बाला हृदि मोन नाउ ठाई॥ एक पत निबुत रा
म कहा वे॥ दूसर कै सी कंठ लगावे॥ श्री सीमा ८
नमाई निज गृह हो॥ सखीयां सु भगा॥ सा य सनेसे॥
श्रन्या पीवा कै चल गई यों॥ सीता सखी सहम
श्रकठ ई यां॥१॥ दोहरा॥ कुंजांतर ग्वियन लखी
सीता पर मम सोचा॥ परिवारि न भई निकट होइ
विंन पवायए मोचा॥१॥ चौपई॥ किम श्रम समान
करत भई सीता॥ किं अंमन तकी पिन सती सभीता
चारि ओर पिरकरि उकलावैं॥ सोचन सब कर
पिश्रार बुलावें॥१॥ बीजन करत एक हित लाये

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१५स॰पा॰

कोइकअनतरतिंचमनरकुनायो॥कोऊपानबीट
ककरलीयो॥गृहएककोसीयइहचरिहीयो॥१२
इतनेमेंकुइकन्यापराग्राली॥केशपुसाधिकु
रुनिरखाली॥बेलीविबेमुमनतुघलागी
हेतजानकीहितकनुरागी॥१३॥नेकअपांगसा
थतिहिसीता॥कुरीडपरतनतहांरहठरीता॥१४॥पु
सपकुमंघतनिनतजिदीनें॥नबनकीनबेनी
धरलीनें॥१४॥दोहरा॥सुभमानामऋषली
सोकरतमेंयिलीबाता॥सुभकविकेप्रांजुली
प्रीतिसहितअ्रालाप॥१५॥ ॥सुभमंगावा
चा॥सोरठा॥निबेधरूरतकिहकाजअ्रालिकेख

सुधारकिहि॥कोंतेमोमनमभ्रांतिउपजीबुरि
सुलोचनैमा॥१॥हा॥श्रीजानकयुवाचा॥चौपई॥सुम
मेतोहिकहौंकिङभाना॥मुद्रिकमनोहरमोम
नजाना॥हिक्षाचवरजमहांममसमोई॥तेपुनिबर
भिसुनावेंसोई॥२७॥मैकीनीमाला॥धितिमंदि
रा॥रामकेकहितनअ्रातहोसुंदरा॥पतिकेउरपहि
रावनिलागी॥पिघीसुदरीभरराएपागी॥स्रव १८
रामलिमेहावभावकरियमुहिसीकेजलोचना
अ्रतवरा॥समसमानमिसउपजोसंदेहा॥मग्रष्
नतियाकोदेहा॥धोरीश्रसमभ्रांतीयुतहोई॥कुं
हेमानिगातिपत्रिविनुसोई॥२८॥काएमैंसखी
सोमेकी॥केमा॰॰नासकरलिनेटोकी॥सा॥दोह

१६ स॰ पा॰ ग।। सीता कहि बानी सुनत प्रभु भगा स सती ज
हासा।। फे केता सिस कर क पालि कि जनम हि नहि यें
त उपहासा।।२२।। चौपई।। सुक कें सीत नहि बानि व
मौनी रवानी।। ऐसी मनि कहि तु हि भ्रम कैसा नी।। तु
म जो कहा परलोके मोहि।। नहिं राजन मुलोच
ने तो ही।।२३।। नारद कि या करि तु छति की नैं।। प्र
भु मैं पतिया च निकसि ली नैं।। तेजो कही वे नाव
हि दे ऊं।। एक नारि वृत पति लखि वैसै ऊं।।२४।।
दोहरा।। भलि भयो बढि वचन तु वके सइस आ
घ न बानि।। कौसल भगति मैं निरखि के पंक जे लो
च नि कमल जानि।।२५।। चौपई।। तैसी कै आदर सौ पिहि
औ ना।। प्रभु भै नैनी निजमय रति जो ना।। कसम कहि मुक

रपालिगहि लीना ॥ अक्रूर विलोकनि केहूं सन्मुख
कीना ॥२८॥ निरखो सीना अक्रान नमरू पांखत ही
मनो हरत सो सरूप ॥ हरसी अक्रूर पांगा सपुन तु सका
ड़ी ॥ किंदनपुनपुन निज उर नाई ॥२९॥ मैं कीयप
तिसै कार्हन भारू ॥ त्रिसज्ञान मूरोपयो ना ऊँ
क्रूरा पनि दोष अक्रूरा पत्र हि घाना ॥ पहु नाव न पि
रफिरसीय मानना ॥ रचा कै तनवियोगाज पीडा डर
ही ॥ नासं भायउर फुरन हिं करही ॥ सत उवाच ॥
सरवीनामकी धीम तिरकू ॥ विमलानामको
रचित बिवेकू ॥ पीडत भई जानकी निरखे अक्रूर
रामपहि बदन न हरखे ॥ विमलो वाचा ॥ महाराज
तुम कहा करोगी ॥ निरखि यसीय वरानना सो धीः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२७ स॰पा॰

इंदुसमाननसरवीयांमाही॥अधिकविषी
दतेंहरषननमाही॥३॥सुनिकरिताविमलाकीबा
नी॥रमयुतवरखीताननदानी॥३१॥सुमत
सीयाकरिपरमविषादा॥हरनिविषादवेद
युतभादा॥३॥ठिआसनितेसबरगवने॥सरवी
यनिपरिवारतनुरभवने॥३४॥गजपतिगति
चालेरघुबीरा॥निजचरननिकरिगहरगंभी
रा॥करतेजातउरमाहिंविचारा॥निश्चयकी
पनसीयनिरधारा॥३३॥आवतपतिहिनिर
रनिहारी॥सीताममसुंदरीजोमसुरबारी॥३
ठिठाडीसोबालासुंदरी॥नोयोसीसलाजभईम
दिरा॥३५॥दोहा॥कोटिमदनलावण्यतासुंदरप

तिन्हहि निज हरि दीन्ह॥ गंधर्ब राज पुनि मासर समुद नभ
ई बरना शि॥ सु पा॥ चौपई॥ पुथम सप्रेम कीन परना
म॥ बहु बि बचन कहि करत बखाना॥ महाराज
ज्ञान मम ज्ञाना॥ रोपे तनु मम बिनु दुख तन महाना॥
उदा॥ जीव चर मनु कहि प्रापति मिसउ॥ पुभो तुम सरम
हिमा न हिं कहउ॥ एक ना बिनु तनु मम श्री रामा॥ क
री भाँति मै मन न ज्ञान जाना॥ कथा ना क बिदु बित भ
ई मैं पाऊँ॥ अब दोऊ चरन परन प्रभु भ्राऊँ॥ सुत
उवाच॥ इह बिधि गिरा कही जब सीता॥ चंदु नि
भान नष्ट पिक सुप्रीता॥ दो॥ भुजा मारि लेखा
लिं गीन बा॥ कहत प्रिया पुनि बचन रस दसबा॥

सीतांपीनपयोधरबालहिं

१८ स॰ पा॰ श्रीरामउवाच॥ भ्रांतिभईनहीनवउरसीता॥
परमप्रियेप्रियतरमयिप्रीता॥४॥दोहरा॥वा
मकरतममउरसदात्वसुलोचनेवाम॥तातेभ्रम
नहींमाचइहकहतभयेश्रीराम॥४०॥चौपई॥
असउचाररघुवरतिहकालहिंकरिसोंसियभु
जगहितनकाला॥चित्रलिमीनिजप्रियारसाला॥
४१॥पुनकरिसोंकरपकोरेलीना॥न्वलेनिजाम
नित्रतहितकीना॥मलिकालिककविचित्रतिमे
चे॥सीतासहितभयेथितिमेहां॥४२॥तिहपीढे
सीयकीसखीयांसबा॥परमसोदपायोतिन
हूंतबा॥राघवकमिक्रायसुमनबमाजी॥करन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भई न्रनजरदमुनभ्रानी॥४३॥वरमसुंदरीको
ड्ककम्राली॥मरदंगवजावतनभ्रडूरणाली॥कोक
वजावतनवीणाग्रपता॥कोमपवजावतनभईको
सततता॥४४॥दोहरा॥कोऊक्ववजावतनबेसरीमर
दुनूपवरमुम्रजेगा॥पएवीकोऊस्तुदरीमानतम
नभ्रानेदा॥४५॥चौपई॥गावतनभ्रभिनयकर
तमनोहरु॥राजभकभ्रागेचरितनकतौवरा॥नाना
वेषधरनभ्रोबाला॥नृत्यमानकलिगायनि
रषाला॥४६॥रामसहितमनतनभईसीयनारीप्रभ
हिषीरामभ्रकुकीभ्रनतपिभ्रारीमसरचजातनसक
लहरषाई॥७नकीडाकरिमनसुखदाई॥४७॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१०४ स० पा० रमय निमाहिं भोछ्जो ॥ या मा ॥ ४ ॥ मन भये सुन्दरी
ग्रन्ता मा ॥ ५ ॥ आप बिहार भाव करि ताकरि ॥ ताहि
ली मैं मान सिंगार तसे ॥ ६ ॥ ५८ ॥ ता पाहें भोगत
भये भोजनि ॥ नाना बिध के रस पुन सो तनि ॥
क्रीडा करि विरत तहां बिराजे ॥ बीर जवान सीया
सह राजे ॥ ५९ ॥ यों तूपै ॥ लै ग्राय पुन सर बसकी
यै राजसद निमै ॥ इत्यादिक बहु चरित रामके
जानहु मन निमै ॥ परमातम परमेश्वर निरूतन
धरे सो जन निमै ॥ रसिक जनों के भाव निजे मस
ब भाव जन निमै ॥ प्रीति सहित न कुरमों धरे ना
सहि पाप जने का ॥ राम भगति पेहें सुखद उध
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सोरठा ॥

दैपाइ बिबेक अपारौ ॥ जिन्ह कि न तक बहु नदे दइ गोप
नीय च्रत यन नि ते ॥ श्रुहा युन रिकु हेंइ राम भग
त पूनि सौन का ॥ ५३ ॥ इति श्री सत्योपाख्याने स
त्यौन क संबादे चतुर्थ प्रतमो अध्याय: ॥ अथ क
विकाल दोहरा ॥ सो बाच लमै ज्ञाइक रिसी नास
ह स्री राम ॥ हिंडोले फूलहि मुद तक या अध्याय
इ सकाम ॥ १ ॥ श्री सूत उवाच ॥ चौपई ॥ कबहु
क परब तन अत रम णी के ॥ सो साच लन नामा मुम
नी के ॥ रम या सीता करि प्रभु संग ॥ रघुनायक
गे मोहक न्न के ग ॥ १ ॥ कुलपा नाम नदी तह दिवर्षी ॥ ज्ञा
नु सम भी प व ... नि लो कमौं ॥ एर ब भागा पीठ इ कुंजौ

११॰स॰पा॰

को॥ विद्यानाम मम हृ नफलतं को॥२॥ जासु दछिंह
दिशि डूक ठौरा॥ कुंड गऐ धाम मनोहर औरा॥ वास
योधका है जहिं यांतो॥ खेवा चलो नाम है तांनो॥३॥
सीतासाथराम विवस्ता रू॥ करत नभये सदीगए
परिवारू॥ जनक नंदिनी सखी यों सहिता॥ क्रात
मवशि निज पति संग राहिता॥४॥ दोहरा॥ सो बाला
कीडा करत मन हर्षि परबन माहि॥ नाना कुमम्रा
कीऐं नहिं पुहप निमंडित क्राहि॥५॥ चौपई॥ व
रषारितु आवएक रिमासो॥ रमत सीयाघवसह
क्रनियासो॥ मयूर कोकिला जहां विराजता॥ चात
क्रपर पहिगए राजता॥६॥ कूजत नमत नमानभग ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उतनहां॥दादरपुनपुनबदनतनहां॥सुनिकरिति
नरविनागिरमाही॥घटामनोहरघनघिरआही॥
७॥रामझुलावविसीयमनकीना॥सखीगएंसो
सबलखिलीना॥रतननिरचितखंभरमणीया॥
रतननिजरितवेदिकरिलीया॥८॥सुरसुरतनि
मंडितनौदोला॥रचीआविशालरसालअमोला॥स
खीयनितहांसनेहबैठारे॥रामचंद्रमनहरमिजुला
रे॥९॥दोहरा॥तासुअंकसीनाकरीलज्जाकरिमुस
काना॥रामचंद्रघनश्यामवनविद्युतसीयासुजना॥
१०॥रागहिंडोलविष्णुपद॥सखीझुलावेंहिंडोलनेर मिलि
स घुराइ॥पैमे॥घुगमहिंदेतहूला॥सुदतुमननुसका हो
हारेका॥रागहिंडोलरागहिंडोलसंज्ञाबहुरिकल्लिमल्लार

रा. स. पा.

काचन्न सतिनामकमागे वादये तिम्र पारा।। पभा वा
मनाहुर वैनि केऊ अप रुकर घतडो रा।। नाम वजीद
लं दिखं ठुंगी फल मधनो रा।। रम चेहरुड्डन कं न
नया देन दं पुतिजो रा।। रूल नेव सपरत म्रै चल ध
रत करि मनन्ने रा।। मरा।। सै ों घ जल लवु र घाडुओ
तिन सखी मुघ्दउर धारा।। अं दोल भी नेनो च दंप
तिसी या भामउदार।। र कन्न्अदमुन जीन पहरत
वसनि रन निसु धारा।। कूरन ली: ला मनु जइ वु
भुक विभ्र तम बुलि बलिहारा।। छा।। धें चडुोर हैंडो
लनै बीम्र लि निगी धु चला डा।। न व भई भी तिव
जामन की [illegible] पतिके ठल आनहुरा।। छा।। मुसका इह
ठकरि वद तिसी ना ऊट तमनन करघाडा।। नव रामे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उरक्षानेदपायोपुत्रियाकंठलगाइ॥१४॥दोहरा॥
चढुनिभानननस्रषमेकनककंगगसुनिबाना॥भय
जिनकीजेकरहरसक्षागेनिजकरिमाना॥१५॥चौप
ई॥उह्ननपीनपयोधरहाथा॥निजसोंगाहिवृद्ध
स्यलसाथा॥लईलगाइपपामायामहि॥हिंडोले
फूलनसुखपामहि॥मंदमुगंधासीतवियारी॥से
वनसीतहिरामपियारी॥कुसमफलफलहिदेतब
घाई॥निवेदतजनुनिजप्रभुताई॥१६॥गुमक्षार
विक्षुपद॥कंद्रादोलेफूलतरघुराई॥सुमनेंबरष नि
त्मसुरसमुदाई॥टिका॥वारिबिंदुकुणानबरषतमेघ
प्रभुपसक्षाना॥रामसीतहिदेतफूलेसरवीक्षानंदमा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गा.रा.सं.पा. नाना॥१॥ पा हिंडोल सुख कहुं पाइ है दुबे सखी सी
ता सा था॥ ता बिमा नै उतर स हु सा ति नै सु र धुना
गृ.हा.ए था॥२॥ सा॥ पाद का परस हुं के प्रिया पालि मि
ना॥ पाद पदम के मार चाले मह हा रा जमह ना॥३॥
निज निकेत हिमवत मार ग रा म हुं का पा इ॥ होत
भय प थिम हुतवर षा बादरों जूरला इ॥४॥१
ग्रप राम ला रा॥ बाला म ई थि कन ना का रि॥ को सु
भव सतर धारि का सब परन मिल मि रना रि॥ रिक
तु वतस कल दू कूलन के सारी मन भावना॥
लागि गेवा सं कैत न सो यु कत नी स्वना तो ना॥ ॥२
सो भने पुन रम लिय तक लत कुम नितर थितन बैठा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामसीतासहितनृतैसेभयेस्थितिपैठा॥२३॥रा
मसीतसहितलेडमेकेछाहलीनिजवसना॥सुरे
गसाटीसंगबालाहैसनीमिव्रसना॥२४॥श्री
गजराजगतिचलरामवीरकसुंभकंचुकधारि॥
नरूछायजाछिनदंपतीआसीनभयसबनारि
२५॥श्रीजोरुमलाराजलसोंपतिहिदेषिकिव
पोंछनामुखवसोटीआपानिपतिंप्राहकामल्लारे
कामयानयासपरसलीनेंपरमरमृकपोल॥
कानकुंडलरचितकरिसोंनिमसिक्षलिकनिमो
ला॥२६॥रामचेडकमुकरमार्जितपुनःपुनमुसका
ना॥मदवमरहुनिकिरविप्रतिमआपंगापरपन

श्री३म.पा.

माता॥२॥ राम अस्र पिरख कैंचु की करि प्रिया मुर रखं
गोद॥ पेषि तेस बस्त्र लिनि केहस सुदन बदनो
भोज॥३॥ चुव नि नीर की विंदु काजनु निर्मलाम
सिको ना॥ मूल ककारा हुँ अब तपुन पुन कुंभो रोज
पपात॥४॥ स्य॥ दोहरा॥ लागी सरुज मसा रिका
नेन भ षलप्रमाटंता॥ पुन पुन सुषमा रामजी प्रि
या बिया दिक्षेता॥३॥ चौपई॥ निरषत ऊडव भि
षत रघुराई॥ चरित मनुज तन ज्यों दिषराई॥ च
डामलि निज हाथ सुधारहिं॥ नासा कृमि सुकता
तिमसा रहिं॥२॥ करण उसप जेका नों मा ही॥ ति
न हिं सुवारन पालि निजा हीं॥८॥ पति प्रीति बिलो

कपन्हेरी॥ अस कहीं मन मुसकन सब चेरी॥ ३२॥
ह्रुवति परस्पर सगरे भ्राली॥ निरखि भ्राप मैसी
यब्बन माली॥ देवति भ्रमलोकनि के माही॥ भये
न होइ भ्रम बंडु को नाही॥ ३३॥ भ्रातिभ्र लोकिक दं
पति दही॥ सीताराम सपायन के ही॥ इन नेहीं
अंतर के माहूं॥ जननी रयपठि दीन तहहूं॥ ३४
कोहता॥ भ्राये भटानि कायत बकर सैं पुष्पक रघु
नाथा॥ रथ मह भ्राते हए किये सियस भ्रलीस ब
साथा॥ ३५॥ सोरठा॥ सहित जानकी राघव पाये॥
मणि विचित्र रथ मालि चलाये॥ नाना रतन निर्मित
रतिसुंदर॥ ना प्रासाद ले भ्राये मंदिर॥ ३६॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२१४ मा॰पा॰ कौसल्यासुभभवभयनिकंदाये॥ नवसबदनित
ये नदैवकायो॥ कारदसुतजोरीपरमसुतनाछ्री॥ पुनपु
ननिरषिमातुहरषाई॥ ३७॥ इत्यादिकाचरित
रमणीया॥ जेमनहरनरामकुसीया॥ मनुष
सउधारनिमग्नीनरावनि॥ जतनसीमनोहरद
विदनावनि॥ ३५॥ दोहरा॥ यदवानदवापहिन
कहिहै॥ पमनोहरजनना॥ जेमतप्रेमसमझवए
वहितिनसुनाइबुद्धिमानना॥ ३६१॥ इतिश्रीसमो
पमचानेस्रतमोनकलसंवादेपंचमस्वतनमोध्या
धाय यः॥ ५॥ दोहरा॥ घतकलमइसेमहुंकरिहैंसीता
राम॥ जीनहारिकरिपरसपरमुदरंपतिमनमान॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सूतउवाच॥चौपई॥एकदिवसकातिककेमा
स॥राघवदीपमालमहुँतासे॥तुलसीपूज
निलोकेप्यापी॥कार्त्तिकपूर्णमेतेमनमुधापी
१॥दीपमालकीरजनीमाहीं॥जोकोईनरनी
नवरघाही॥तेतेरूपकोउनिरिखैसोई॥ति
यापुरुषदेखेतेसुमहोई॥जोतेजीवहतलि
ज्ञेहैं॥लिखवामासुमेंसहितसनेहैं॥
कार्त्तिकरूपदेखेलेनहिकोई॥जोदेखेलेप
हुनेहैसोई॥३॥श्रीडामूनकरतमेरामा॥
प्रियाजानकीसहितविरामा॥जीत्योसीता
पतितेदाऊ॥प्राहवाकपिभुमदलसुभाऊ॥

सोरठा

१९५ स॰पा॰ धा॥ श्रीरामउवाच॥ देहधरा॥ तुवजीत्योदेवीजु
ऋषिकाजकिकरौंनुमातियाक्रबजोचाहोदेउं
सोकहीयेमुखखोउचारि॥४॥ सनतउवाचऔएहु
वाकमुनिकानपतिकेसोमगलोचनी॥
निजमुखबचनअबरवानसायज्ञपंथारिषिव
पति॥ढा॥ जानकीउवाच॥ चौपई॥ जौदैवोम
नचाहनस्वामी॥ तोदीजैप्रियकंतेनअंतजामी
जैसेमोउरमेंहैराजन॥ तैसेदेहिइकंतोतेसा
जन॥७॥ तहिंस्त्रालिंगनिकरवैंनोकौं॥ ते
रूपानगुमुदीजैमोकौं॥८॥ हसमुनिकरसीताकी
बानी॥ राजिवलोचनिरामबखानी॥८॥ए

हमारी मनुमानि द्रु देवी॥ जस्वाह सिप्रियतम
हि करे देवी॥४९॥ भेद्रु ब्रह्मा लिंग निगाठा॥ तु फकीरै
ॐ नियजनेबाका॥४५॥ दोहरा॥ बहु विधि तरवेल
तभयेराम जानकी संग॥ जीत भई श्री राम की सिय
कहि बाजी भेगा॥४६॥ जानकी उवाच॥ चौपई॥ जी
तो मोहि मवन पति बीरा॥ देउं कहि सबतु फिर
ए धीरा॥ कहे मोहि महाराज बात सो॥ कौन
हिय सब तुजे सानते जो हि दासी तेरसवा भी साथी
पूछ अंबु जे सब कजगासाची॥ काका देउं न प्रभु
मो नाम जानन स्वरूपा हिमन पर्वी तेरा॥४७॥ प्रयसु
कारी राजन यारी॥ विहि तम विहत से जानन सा

११६ सं॰पा॰ री॥ वाक प्रियाके सुनत नमदाल॥ वदवरान
१४ नहि राम कृपालु॥ एवं एव सदा मयि देवी॥
है करत बालवयाके रिसेवी॥ स्रम जुवा दवा॥ सदै
करि क्रीड़नि करि नमा॥ जन प्रिया सह प्रभुनि
जधामा॥ मथा॥ दोहा॥ पुन शिविकलुग्राम हवै
तीरथ गुपत हरिया॥ जात भये श्री राम जु सीय स
हप वितन करिता॥ ध॥ चौपई॥ कारतिक मासि
तीरथ राजापी॥ सनान हेत नकातया तिनिता
पी॥ कार्तिक पाइ तीर्थराजें नी॥ सकल पा
लिलन पिकृत धमरयपंती॥ १७॥ गुपति ह
रि निरघन तहि पापा॥ नरपति नतलिप्त

षिव लछमा आपा।। महादिव्य तिस देउ माहीं
सीता सषि वराएसहि तन हाही।।१८।। कलप
बास कीड द्वाकारिके।। किये बास नहिं घरमहि
घर के।। कीये घणा बासी न सङ्कुना वी।। भरि तन हो
बासि न भे सारी।। नेहा दोइ न्हा।। रामकंद रमा नि
कामना।। जा कहुं जन पद ग्रामा।। पट मंदिर शोभ
ति कि षिव लषा न सम सह रूपमा मा।। ओं जा दिक चौपई
कर मकरत रू विसाथा।। नायम मा थ पय रणति सु
नाथा।। नीरथ थया जाकरि फलरहु।। मानेम सम
बिलोक सने हार ११।। पर एमा से कीन सना ना।। दे
न भये न बम रिशदना।। स्वर्गी द्वार पुन प्रा प्रहोई।।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२७ स॰पा॰ कीनसनानसीयाहरखोईमरयादानदीयेसी
ताबहुभांतीः॥ सखीयोकरिपरिवारितभातीः॥
भरदेवनिपूजोपुनदानाः॥ बसतनरभषणदीयेम
पाःनाः॥ स्रुंःगबटयसभोजनिसबनिजिवायेपदी
नदछिणानुदतसबनायेः॥ रामोपीछिजक्षेदच्छि
नाईः॥ दानदीयेपुनपुनरघुनाईः॥ २५ ॥ दोहराः॥
सबमनतेगजअभकिपुनरचशिविकाशाणदीन
दान भरतेदेवानसजीवगणनभभुरत्तिकीनाःराणाबो
पईः॥ बहुविधोरकमविबिबलिनुरनाः॥ कहतबु
चनमदकरिपरणमाः॥ श्रीरामडवाचाः॥ तुमले
२ विशुकपैभरदेवाः॥ तुर्मतरज्ञनितेफलएवाः॥ २६॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

होतप्रसन्नज्ञानकोनाथा॥१५॥मांकंतनिरंज
नजोआतमा॥प्रभुध्याकेपजनिजेकमिहो॥भरतल
मैंजगदुःखपरहरहीं॥१७॥ईहांभोगकरबहु
विधभोगा॥उत्तमगतिपैहैंपरलोगा॥१८॥तउवा
चा॥विप्रहितवत्सलगिरबिस्नुभाऊ॥१९॥सबभा
वयाबिधरहुराऊ॥२०॥जोरहाथप्रभुगवदतनु
बानी॥२१॥मिथउत्तमदेनबखानी॥विप्राऊ
स्तुः॥भवानकमायायमदेवगोसांई॥नहिसंश
यसीयललवमीमांई॥२२॥दोहरा॥सकललो
कऊकलपानृहितमायाभ्रमवताराधसेपुबारि
एजनिकीयेकीरतनिधानकमसरतार॥२३॥चौपई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२८ स.का. इह लोके पावहि सुख भोग ॥ पर लोके परबुल
नियोग ॥ कीरति हूँ है पावनि लोके ॥ एर घुतमा
त भवता देके ॥ ३१ ॥ ऐसे आनंद मन सुनि श्री रामा ॥
भये सीया सह अतवलवाना ॥ सरब जगत ज
न के अवलोकत ॥ हिज पुरवनि पुलमय योनि
ता ॥ ऐसा कीन राम पुनसि विक आपनि ॥ बैठे सी
का ता पीसव सैया पनि ॥ विविधि भवन गावन नतकी
ना ॥ भोग अलंकृत राम नवीना ॥ ३२ ॥ दोहरा ॥
नाम लेत जे के सुजन न चाहो भ्रम रथ सुवासा ॥ न
हि अचिरज कसु मानवी तु हज भोग बिलास ॥
३३ ॥ इति श्री सत्योपाख्याने उत्तरार्धे नकसेवादे

षटसप्तमोध्यायः॥७६॥ कबिवाक॥दोहरा॥
इस अध्याय मध उवैं नसीयाके साथ॥ दृष्ट
न अवेलैं होलका फागुणसैं समुझायथा॥१॥ श्रीसूत
उवाच॥ चौपई॥ इह बिधि फाल्गुण मास सुहाव
ना॥ करत न चरित नर सुव सजन पावना॥ खिलि सी
ना सैं बहु बिधि क्रीडा॥ सुखदायक भावक हरपीडा॥
१॥ परस्मानानाम जनन भावना॥ भरि चरित न करिये
सब बनदावन॥ भरि जनम गान अस न कर हूं॥ क
हि समय पन हि यारहि परहूं॥२॥ शौनक उवाच॥
बूहि सूत न महाभाग मुनीसा॥ मम संशय पर करिहमा
गुनीसा॥ फागण फालगुण किह बिधि खेले॥ तात्र वै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

११९ स.पा. देहीकैकमिमेलो॥३॥ सूतउवाच॥ जनकसु
ताफालगुणकेमासो॥ सकलसखीपुनिधा
नप्रकासो॥ अरुकहायो इहफागुनिमासा॥ उद
तसेलकाकरहुउजासा॥४॥ देहनाकरनभईउ
छमसकलवैदेहीमुनिबैना॥ कोऊगावनतनृत
निकोऊवाद्यमनोहरसैना॥५॥ चौपई॥ हावभा
वमैंमृतपरवीनी॥ सीतानारघुवरसनमुरकीनी॥
करतबिबिधबिधिकीडाम्रालीं॥ दुहुँवनिरुसहेत
धरतालीं॥६॥ केसरसंगकुंकुमपतनी॥ डारपर
स्परभावतनी॥ बबरानननारामसकसंम्र॥ पिच
कारीडारतमंडुंडंगा॥७॥ कनककुंभगसीनारहिली

२०॥ बसंत धनाश्री धमार ॥ जनकसुता रघुबंसासिरोमनि खेलत सुंदर होरी भर रघु
कुलचंद चंद्र जनु पुनि टेसी ता मनोचकोरी ॥ टेक ॥ रघुवर एक जूथ सखी यूथनि के भर गुला
लका कोरी ॥ इत ते दोउ दल सन्मुख यनंदन उत ते जनककिसोरी ॥ १ ॥ जुगल भेट भई जब श्रीमाति मे
हमरी स्याम नी ॥ मुदित भये चपल निपुन तरजित जीवनी ॥ २ ॥ बेगहू रचपिच गुल्यम गुथ मई
निकुंड डार कर कासी रघुवर ॥ रद ई चलाइ सीया के पुर सर ॥ ३ ॥ जोरी ॥ राम गुला
गोरी श्री सखी सीया गुलाल कुंकुम गृह भरि झाक विमलन मुख पानि हूँ ल सीया मुख बमी
री ॥ ४ ॥ सुनक थादबाई ॥ भीगन ये रघुवर के अमन ना भरु सी मु इत जनक सुता प
रहरख मई को दित युन का के दमनना ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ या विधि दोउ ति सोरी ॥ ५ ॥ सखी
शल्याम सुसक पर स्पर सीता राम उदार ॥ खेलत डाहन रंग बहु सकल मई ब्याकित
तवा नकयोरी भीगे नारि भनार ॥ १ ॥ रघुबर बारिहि भीर हरष हरितल पखया की
दुवे या दे ॥
कारन ममास नखेलत देपति होरी ॥ कब हूं डारत रंग उदत होइ सीया सिर मोरी
होतन श्रम मा कब हूँ गुलाल लबेरी ॥ टेक ॥ कीडत निज उर घाय मई श्रानु रचतु
मनिखातका ननाहीं हित कहि उठत ह लोरी ॥ सीता बिल सखी कोऊ न बालन
नेदयुति मरा यों संग लीनी छिप निहारत नव किसोरी ॥ १ ॥ राजा न मान सैनक राम तरी
होरी ॥ ७ ॥ ग होरी ॥ अपके इ
लाल रंग पिचकारी चोवा गुलाल समयो री ॥ एक बार सकल रघुवर पर भाम निकारी नथ्या
रा ॥ ४ ॥ बहु बिधि चारे स भाम निज तिन हूँ हूं करी बहोरी ॥ दूरि राम धके ल्यो सीत हिं रंग
कुंड पर थोरी ॥ ५ ॥ पकरके ग मग ये निज सदन हिं मातु घर ले जोरी ॥ ६ ॥ पाछे सीया सखी मिल
श्राई लाल तनक कुनक लोरी ॥ ६ ॥ एक सखी पुनक हो मह विप्र तिल लनु माभ ओरी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२ रूपा. एकसमसखेलनदुहनिकायन्नहियोरी॥सीतारंग
कुंडगहिडारीभीगेवसननिनिकोरी॥२॥समलिक
२ पीजानकीहठकरिएकरकुंडगेडारेसो॥३॥पाछे
सुदनहसतपुनपुनसियसकोडनपतिसउघोसा
॥४॥मनककेचुकन्नसएभईसबुनसरंगीउस
नीषा॥५॥मकुंडतेनिकसेबाहरठाढेगाननअमवी
घा॥६॥ललितलकीयेतितनेभेसरतीयोंकरमीयो
डारगुलाली॥७॥तेत्रयुगमकेडारनकानकजल
लेसवसुआली॥८॥ठाढीभईविचारतमएवरनाम
निरंजननेरो॥९॥जननितेसांजनहोइअनुचितपर
हैजगतमंबेरो॥१०॥११॥कुविचारधारउवमंतरमन १२

दिढ धावन कीना ॥३॥ समझें जन हरि बदन मं
थता करें प्रणाम यों चीह्ना ॥५॥ चौपई ॥ सर
बयो षिन रिहा सकरावना ॥ चितद चले पल
य मुहावना ॥ ह सत जानत नृप नंदन आगे ॥ नै
न सैन जानकी क्रपो ते ॥६॥ दोहरा ॥ सखी ग
ल हि पुर निकीया पाछे धावत आप ॥ कैकेयां
सदन गये राम वंहु करि दाप ॥१॥ रो ग जैसं
ना होरी ॥ होरी रखे लषलाने रामजी आगे जग
पति पाछे जानकी ॥ रेका कैकेई मंदिर जानकी ॥
नहि तु पत नृ भये प्रभु आनके ॥ राम मशां कनि
भान नै ॥ कैकेई कुपाय विकानने ॥१॥ सखी ग
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२१ सै पा॰ एग सहघावती॥ पाहुँ सीता देषी आवती॥
राम हि गुपतन भावती॥ मैं यर तिन हि अला
वती॥२॥ इ सभवनै राम लुकानै॥ अंतर वर
तितै मैं जानै॥ तब बहु रिककै हांनी॥ कहि
मैं यह बहु फिडकानी॥३॥ कौंवा मक सब वानि
कीना॥ कौंनं दपुर बली चीन्हा॥ पुनस समि
ति मानुक के ही॥ सीता प्रति आप कथे ही॥४॥
ए सीति पंकज लोचना॥ इस रंग सौं रंग स्रुलो
चना॥ इस मैं यर बस निरेगा वहु॥ तुम्ह रंगक
वा सु हि युगौं बहु आप॥ सुनि बचन न कैकैई केरे॥
सीता गए सबै परेरे॥ नाना विधरंग पोतास॥

सबले पत न हरषत जाम्ह ॥६॥ सुनै राम कै न हित
राखे ॥ जो लोइ न पाव निमा को ॥ सो कऊ लतास
कपे ले ॥ लायो सब सरवी यां नो ले ॥७॥ सु भगा
करत रज निमाही ॥ सो दइ दिषाय सुनाही ॥ सका
रस मैं सुरवदे षता ॥ मेघ रभई लज्जत ले षत ॥
ट ॥ तेक होरी सारंग ॥ परम परायए भये व लायन
जान गुप न थि नि मे हिरां व्रुम कै के इ भवन [illegible] निकउ बलाइ
[illegible] न मदुन मैं कं तरा टेका ॥ सह सा उठि धाये निजज
न नाये म व नि हि स्त्राये सुंदर ॥ सुस मिन कर सबके
मन ले कर षेर मा पती हरि संदर ॥९॥ र पा छु परली
रस केजु क तैं विंदक सरवन रंग मैं रंत राषे बत पर्ये के

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२२ स॰भा॰

जननीकंके जाइ ब्रुबे शाकुंतन गा॥४॥२६॥ रहस नि
पसारीह सतसुतारीं अबंबेबत्र सभाषका॥ बिव
रषकता लिवबदनहिषा लिव मातुमोहसबता
षका॥३॥३॥२७॥ मातासुखमाजेत पालिनिजा
र्विनत्रभयहो रसुनभाषता॥ जनकदुलारीपा
पसनारी मातुबिहारी सागन॥४॥२८॥ कनकक्रं
गाली जिवहिसमालीठाढि देखिक चपाली॥ स्वास
श्रापनिगोदस्यापनिदेखितसीसनिहाली॥५॥२९॥
जननिकृपांगीसखीगणंगी मिरवारी सीयसंगा
कनकंसंभीसीतांरंगीसुभगाहिदई सुभं गा॥६॥
द्वासीतानृतिकासरवाचप्रकासमुनियेदे बिहसी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इनतातनुमारेजेंनाहमारे भी जडारिकुंडसारी
गाक्रबक्राइपलायो जेंकंसमायोतोरसाबुइव
राजताामेकेंचुकसारीसंगाघिचकारीशिरूमाडमी
भाजत॥८॥दोहरा॥तैसेबसंतरपुनःपुनमोरे
तोरेबाला॥क्रसएच्चूर्णदेजनकियेअबतोरा
घसेभाल॥८५॥३३॥सोरठा॥सुनतसीयाकीबा
निकोशल्याबोलीबहुरि॥उपालंभवरखानह
मरेकरा॥मेमनतकरहु॥३४॥चौपई॥भयतुमारते
दोरनकरायो॥मोरएतमोजेंकंसमायो॥इस्का
बहैफागुएकोमामा॥कीडाबहुविधहोतविमा
सा॥गृहएकेंकहुफगराजसीते॥जोचाहतमनमहु कवे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२४ सु.पा. नतसरीता॥ असकहि मातु कुशलता गुनिनि॥
बगु बसतनभमबलर तनिकि अनना गुनि अदयेकु
शलताजानकिताई॥ उत्प्रीति करि हवसमु
दाई॥ हसनवद नतवसीता देवी॥ सातुत
यतेनिज करि लेवी॥ ३७॥ बहुरि कमलपवा
दीसीता॥ रामहि वचन वदन सहप्रीता॥ ग
वनियप्रभुप्रियमोरेगेहा॥ आवनमम सहित
नकरिसंदेहा॥ ३८॥ तबश्रीरामजनकनितेआ
यसु॥ पाइउठे मुदरिदि चलायसु॥ हसतनप्रु
याकेगवनेसाथा॥ सखीयनि करि परिवा
रितनाथा॥ ३९॥ दोहरा॥ नहंहराइ करि बि

बिधबिधरनयनवरदमरामा॥ इत्यंनरनि
जैमेंद्रिरेकीनेक्रीडाकाम॥४०॥ कुपैकें॥इ
हबिधचरिनसुरमनरामकेतोपैगायो॥जेजेफागु
एमासकरमकरिजगप्रगटाये॥जाहिनहिकह
तिनजोगायतनितेगोपरघाइया॥अबएभावन
हिजासरामनिंदकनहिगाइया॥नाहिसुनावे
दुष्टनहिवाचकबुद्धिसुजान॥पुस्तकनाहिंदिव
ताईयेश्रद्धावेषिवरवान॥४१॥सोरठा॥सुनैसु
नावैजोइरामचरिनअद्भुतमहा॥पापरहततन
होइभगतिसहितसुकतहिलहै॥४२॥इतिश्रीस
तोपारखानेसरनशौनकसंवादेसप्तमप्रश्नतमोध्यायः ७७

१२७ऊ.म.पा. कविवाक॥ दोहरा॥ ग्रीषम रितु मैं रामजी कि
ल्सीयनदीनै जार॥ ड्स धाये म्रछ हतु रे करि
बहुनाव विहार॥१॥ श्रीसरन उवाच॥ चौपई॥
जेठ मास के सुकल पाष की॥ दसमी तिथि सु
भदा सब नाष की॥ नाम दसहरा लीजे जान॥ दस
बड पाप करत है हान॥१॥ गंगा जनन म दिवस है सो
ई॥ गंग गना हत बम्र न फल है सोई॥ ग्रीषम नामा
रितु नब आई॥ तिस मैं उसनता न्पोर चुराई॥२॥ सर
जू सरिता जल मधना ऊं॥ सीता साथि विलास क
राऊं॥ चलसी नैसम संग हत्थि करिके॥ सखीयो
करि पवि वारत न हर को॥ आहस नुमसि सि लि कसि है

विवहा॥ सरजू निर्मल जल मध सा का॥४॥
दोहरा॥ कौसेक कहि करि रामजी भरत हि आग्या की
ना॥ ग्राम सरजू हो न हित न भरि कनान नवीन॥
पा॥ चौपई॥ आयसु रामचंद्र कहि पाई॥ कनात
चांदनी भरि गडाई॥ सरजू तरि सेवक सनु दाई
रामचंद्र प्रति आग्या सुनाई॥६॥ शिविका पम्मा
कृष्ण भई तब॥ सीता सखीयां संग लई सब॥
गवन राम तब कीन जनाधिवा॥ पाइ नियोग हि
चले सु राहि पाठा॥ सखी निकाय सीया सम आवा
करि लीला॥ प्यारी ने रिजरि मुकता ली॥ ओऊ पर जान

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२५सभा॰ कीबिराजना।।नाकीसोभासीयकरिभ्राजतनाट
स्याम्सवातकरि उडवनसामी।।नैसेहियोभि
नसबनागरी।।निरषनप्रियिसाघबनाऊबिके
श्रस्थ्रूरूऊमागतबरबिके।।१९।।दोहा।।मात्र
चल नअंभीरूवारिजहिंनहिंतारिसोपानो।।नहं
सुहावतनालकरिऊचेपंकजपान।।२०।।चौ
पई।।घुंकारनभ्रमराजतहूंकुता।।बाद्धधरत
नहिंनाहिंजुभपंकता।।गनेतीजनुप्रसपनिकी
करहीं।।पदमपदमपरिइतउतचरहीं।।२१।।
स्या।चलतीबालासबथाकी।।सेदश्याधिक

आयोमुखताकी॥ सिरकेदुखमगंउगिरलागो॥
तिवकेमधःपरतनहिआतो॥५२॥ करतएककहा
जेपतिहैंअवनी॥ रामविलोकीथकतसोगव
नी॥ तिननहिंलवाइसंगमहाराजा॥ सरजून
दतरिजाइविराजा॥५३॥ जैसेकपसरसुरीहि
समेता॥ भूपतिमंदाकनिकेंतुहेता॥ नदवनता हि
नस्नोहअश्रासीता॥ सखीगएनिसहपरमपु
नीता॥५४॥ दोहरा॥ मंदरदुरग्यासकलदि
शिसरजनजनसंगसुलहाइ॥ रतनिजरतस्रोपानव
हंस्रमुतनमवकुभाइ॥५५॥ सोरठा॥ श्रीअनि
उरमितनरंगससरजनवहिमथहारिएी॥ सीतार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२९ स॰पा॰ मकसंगबनतासकलसुहावहीं॥ँहीं॥निर
नीरथतरिकरनिविहारा॥इहसंकुलमहदेनि
जेधारा॥उतरेशिविकातेरघुराई॥रामसखी
गएसीयासुहाई॥१२॥पादधोरेसोपानेसुख
हनिा॥नृपरहंसकसहितसोहगिा॥तिनको
रविसुनिहंसविबुदना॥सहसारोनमयेल
जेसदना॥१८॥सोपानौंतेलिरांधेनबनी॥स
लिलप्रवेसाकरतभईसबही॥सरिताजल
निरमलअतसुहा॥तिमीनककवरजितसुभ
रेहा॥१९॥दोहरा॥रामायसुउतकृष्टसुनि
धीवरसकलकिलाजा॥पोनमेंचक्राकैंतहांना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

थितिबिनरि समाजा ॥ २० ॥ चौपई ॥ उयनि नेब
ऊपर जलचर कीन्हेउ ॥ नाभि नाविल सोअधिकनब
कीन्हेउ ॥ सब समीप देखी रघुराई ॥ जनक सुता मनजानि
जमनभाई ॥ २१ ॥ चामर कर नृत्य पोत निहारी ॥ प्र
मप्रिया याबृति बानि उचारी ॥ श्री रामउवाच ॥ निरे
निरषत कुल वन शोचना ॥ एदु सरवी मैं भावत मेमना ॥ ए
२२ ॥ इन के अंगन भाकृति राजत ॥ सरजन दीसुंधत
भ्राजत ॥ जलक सिंजन लोचनि होये ॥ पुन पुनजो
इन रक्रम बोये ॥ सोअंजन मिल गात विकारी ॥ जो
कालीकला गिनिस भारी ॥ सग करतन इहतलसो
न्मारी ॥ होवतनन यनपुनः पुनडारी ॥ २४ ॥ दोहरा ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२७ स॰पा॰ ढकृत सरोज बिबुराजन ने ने उ बिकट से भा सा ॥ त्र
त्त निभार नि तंबु करित रनि स मरथ मग्ना ॥
२५ ॥ चौपई ॥ पुनि के एर बि बाहु बंधाई ॥ इह सब
मूरती जन नाम्र धि काई ॥ उहुरन कूपर को अम पा
यो ॥ कि रके भर बए गु हप गिराये ॥ अर्ध ॥ जल सम
ऊं नदी प्रवाहे माही ॥ कि रन कि रन रूड जा न मदा
ही ॥ स्त्त निमेड लाये पित कारा ॥ योधि संग्र भ
मुकन समु सारा ॥ २७ ॥ मो तिन की माला जनु सो
हत ॥ नि सिन सत्र वे सग मन न मोहत ॥ जल लाव सिलि
मना भीमा जहीं ॥ चक्रवाक जनु कुंच इस माजाहीं ॥
२८ ॥ सीते ने सम पावत सोभा ॥ इह सबिला सित मीथि

जलोभा॥८७॥तीरद्रुमगावनगीतं॥इहवरंगगणाञ्र
नहीश्रमीतं॥८९॥दोहरा॥मदंगमुजंगबजावहीं
[illegible] कररंगमनोहरपा॥९०॥रकनबसउकौशेयपुनजल
करिक्रीडसुहावा॥१॥चौपई॥बाजतबाधनितबुभ
वसाने॥रसनासोभितकरिक्ष्यानें॥क्रमकागावेंब क
सनिभिगाये॥अमभामजनतलांपुर[illegible]गायै॥२॥स शब्ददमनु
खीयनिबदनवारिकरिभीनें॥अलकांक्रीडतबुव बोये
तिनवीनें॥जलकीबिंदुकपोलौऊपर॥ऊरतपरत नि
जलकनगिरमूपर॥३॥इनकमिबेणपरममनो
हर॥राजतजलकरिपूरणरचोकर॥इतउतहलत
चलतपिठभागे॥योंसोभितजनुनागनिलागे॥
३३॥भीजीवादियोभसबअंगनि॥जिमकीडतस
रिमाहिमतंगनि॥सरनउवाचा॥तिनकेअधमुतपे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

षिविहारा॥भयउतनसाहसीयाउरभारा॥[illegible]
नहि[illegible]
[illegible]॥
दोहरा॥सीताकरिप्रणाम्ननहृयेरामविमानविह
या॥जललउतरेसहप्रियपूनीतेजेनावहिरमारमा
३०॥चौपाई॥भयेविलोलमानसंगनारी॥कि
मरनिस्ताशूमनोभवकारी॥जैसेगजपतिगजनी
संगा॥वनकेसरितावारिनिसंगा॥३१॥जनाधि
विहार पकरिसोसरवसुभानन्नौकरतभइनिवरिसु
रांग[illegible]निा॥इहनीलसमस्यामरामजी॥कमलेतुए
ज्यौंनारिकामकी॥३२॥कंचनपिचका[illegible]रिस्वलीगी
देतचलाइसंचराभोगी॥तिनकेसाथरामसमहा
राजा॥गंगामेसुरपतिजिमभ्राजा॥३३॥बासची

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अपृसर निसंग सुहावै॥ जानत रघुनंदन प्रेम
भावै॥ इह बिध करि विहार जल माहीं॥ नाहव
ठाढे कूल तन हाहीं॥ ३९॥ दोहरा॥ नदत फिरे जो व
न राम कहुं निकस जानकी तीर॥ सिंघ मृग के कुम
ला जिम हिं सोह सरवी करि भीर॥ ५०॥ चौपई॥
आवत जल ते कूल तुरंत॥ भीगे बसन तरन मन
लजंत॥ पीत बसन हृदय अलक निवारा॥ साधी
सिंचन बारंबारा॥ ५१॥ इह बिध प्रिया हित निरखि
रघुवीरा॥ पाणि पाणि संग हिरण धीरा॥ पट वे
श्रम निकहुं गवने नव हीं॥ नाम प्रिया सह सखिग
ण सब ही॥ ५२॥ तन बसन बह निपट पहिरे नव परा॥
कीने बहु विध वेश मनोहरा॥ देक सिंदान हि जनि

१२५स॰पा॰ केताई॥भयेमगनरुच्यानररघुराई॥४३॥सरजूतन
टिनबचलेविहाई॥सबसमाजलैसंगलवाई॥
रामप्रियासीतासंगलेई॥निजमंदिरपरवेशाकरे
ई॥४४॥दोहरा॥सरजूवारिविहारकरिआयेश्री
ते रघुनाथ॥मिलेयथोचिंमातुपितपुरजननायो
माथ॥४५॥इतिश्रीरामलीलापारखानेसूतशौनकसं
वादेग्रं८सप्तनमोध्यायः॥७८॥कविता॥दोहरा
सत्यपुरकीरमणतावरननिहोइइसअध्याय॥निर
षिनिरषिहृबिसुखलहैंसबजनकहोनजाय॥१॥
सरनउकाचा॥चौपई॥एवंरामररमाकरिनाथ॥करत
विहारसदाजनत्राता॥जननीतातनभ्रातपुरवासी॥भ
त्यसखीसेवरामविलासी॥करनमस्मंदनसबतियजन

को॥ मंगल दा बिनोद करि मन को॥ नगर रम्य साके
ता भ्राजता॥ नाना रतन निजरत बिराजता॥४॥ स
ता नाम निरमला पुरीया॥ भ्राद्या शुभा नाम इस
पुरीया॥ अयोध्या नाम भयौ है विख्याता॥ बेद लोक म
हुं है साख्याता नाम ठु॥ नहीं राज मंदिर रमणी के॥ नाना
रतन विभूषित नीके॥ अयोध्या नगर रम्य के मा
है॥ मेरु पर तन निजरत सुहाहे॥५॥ दोहरा॥ अनि
करतन निकीर एर चौज्वल ना कै सम सोइ॥ उन मका
वास निस हित तोरए प्राकार सु होइ॥ ५॥ दिव्य सुव
र्ण दुरग संयुक्ता॥ रोपन ता मके कौं निरुक्ता॥ परिषा पी
र कूट करि बनीयां॥ बरणि न जाइ राजत अग नीयां॥
द॥ प्राकारे पवनौ ते हाल हीं॥ तोरए परिषा रतन नि

कोट
ष
तोरणकी
हि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१३-स॰ पा॰ जडहो।।मद न कछु नेकता।।सबैं राजत ता।।रचित विचित्र क
रमा करि छाजत।।७।।स्वर्ण सै कछु नाय समेत गृ।।स
रब ओर गृहि संकुल चैं ना।।नील स्फटिक वैडूर्य मुक्ता
मरकत तोरण स्फटिक संयुक्ता।।८।।ताकरि लिपति हर्म्य
य लखम्या।।जो कहु सर बदेव करि म्या।।स्वरजती
रक्षा इक करि रामा।।दिव्य परम जो शोभित ठामा।।९।।
दोहा।।अश्व पदात रु हस्ति रथ नाना राजत विभ[illegible]ति।।
क प्रकाम उरात लपूतो लिखुम तोरण एक बिलसति।।१०
चौपई।।सु रूप सुवेषा स्वव निके पायत।।भिन्न भिन्न तु
या तिन नख्या यता।।[illegible] निकम मि प्रासाद चतुषपथ
बहु पात्र विक्रय धन लै गया।।११।।सराफ बजाज ठो
ठने बहु विधी।।अन्न लगाये देर वि का ईआर नननि १३
नर व विप्र अनु सि[illegible] भई सिद्धि।।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गननीकरीनजाई॥१२॥उतनपल्लपन्नशुभासाय
सोहना॥चौपीकविजेहितहिंउपशोभिता॥देवायतन
नदिअन्नननीको॥वेदघोषअन्नभावननीको॥१
बीणबेणमृदंगकअनादी॥उतनकहशावदकरियु
कतसुहादी॥शालतालपनसेकविबागा॥नारिके
लकेलापिबिरागा॥१४॥दोहरा॥आम्रकपित्यआ
मलकपुनअशोकगुनदअपशोभा॥विविधप्रका
रअरामयुतपादपफलनसरोजपाप॥चौपई॥
बकुलमालतीजातीफला॥नागचंपचंपकपाटला
कणैकारकरवीरकेतकी॥इनहिअलंकृतआनजेत कनेरर
की॥१६॥निबजंबीरबीजपूरादी॥अपरमहाफलमा
करीनैका

तुलिंगादी॥ चंद नलस नगंधक्रादिक करि॥३
पशो भितनाग॥ हि निजतनधरा॥४॥ द्विवतु ल्प
परमायुत त्रुवी॥ ज्ञानवुरूषतम सही घनजवी॥
रूपवंत वरतीयक विज्ञा॥ बुना॥ मानदृदे वदेवीग
निता॥ बुना॥ पधासन कविता श्रेष्ठ करि युकता॥
सुस्मृरूसम द्विजवर मस्तक ता॥ ब्रणक जनदु
केदा मम्न पाया॥ कलपवृक्ष तजों राजतम सम्भा॥ ९
दोहरा॥ ऊ चम्रवा सममकृष्ण जेदंती द्विग गजभा
सा॥ निसरा जाग्र हिरमभेरनतनिविम्र विनमास॥
१०॥ चौपई॥ अंतः पुरे सदा श्रीरामा॥ सीता सहरा
जत निज धामा॥ मरहादिवा सिंहासन निकूपर॥ना

नारत निज रति न संग न परा॥ ४॥ वामे सीता
श्री गा बिठाई॥ रघुनंदन राजन कहु बिठाई॥ सी
न हि संलाप निमेष चमु राम॥ भक्ताभीष्ट वृंद सद
अनुला॥ ४॥ सखी सेम ह सद भिनि म सेवना॥
किंकर सेवहि जन सुख देवना॥ सेवकजन हि स
दा मन न हरहीं॥ सकल लोका मनाथ रण करहीं॥ ६
तनया जनक पती अविनाशी॥ इह विधि धा
इ स दा सुर वासी॥ रामं रमन त योगी जि समा
ही॥ सत आनंद चिदानन ताहीं॥ ७॥ दोहरा॥ इ
ति हि राम पद कमिश्रे परम बुलव रखाना॥ मा
तु पिता भ्राता सुहृद सरवा राम पहिचाना॥ ५४॥
चौपई॥ स्वामी राम राम महा राजा॥ राम चंद्र सख

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रहतकमजा॥ एहुचरित्रन्नतें रमणीका॥ सी
तारामवयोसुमनीका॥ रहा॥ शौनक सुनिक
रि आसमुनीनें॥ इहुमैं जु मपूत्ति कहा सुनीतें
धनयशआयुबढाता॥ एही॥ वंशविवर्द्धनपु
एपमयेही॥ ७३॥ लोकमांहि जे मुननसदा है
उत्तममंगलनि नहिंपूदाही॥ चतुरवर्गइह हैं
नितजनको॥ मुदकारकजोश्रीएल्लामनको
र॥ जो इह चरित्रसुनेहरषाई॥ अत्र यवावा
चेतनमननलाई॥ ब्रद्धिहोतसुखसायउभीते
ब्यासकहोइहशुभहिलहै जो॥ रक्षायथा
शकतिवाचककीरज्या हैंमहात्माकरहिन
हरज्या॥ मंगलहोतप्रजाकेनाई॥ नृपकेकुस

दो॰ संवत नरस करि रिषं बंधुभवसु ससि स्पष्ट प्रकाश॥ भौमदिवस
श्रावण चदि तिथि पंचमी सुजान॥ ५२

लसै देव रघुराई॥ ३८॥ दोहरा॥ साधु गऊ भूविप्र गुन सम भके मंगल होइ॥ सुनै सुनावै धारत्रश्री सत्य मंगल बोइ॥ ३९॥ इति श्री सत्योपाख्याने सनत्सनक संवादे बालचरित्रे एकोन षष्ठितमो ध्याय:॥ ५९॥ मंगलं सर्व अस्तु॥

भाषा कार कवि वाक्य॥ दोहरा॥ करता भोग निमूनन त्रिसरन गहे रघुराइ॥ ३ चर चाहि कल्याण हरी सदा परम पद पाइ॥ १॥ पद सबल तेरु तजे भूएल वन भिरत भय माहि॥ दु:ख सभें अंत मैं नाम लेत गति पाहि॥ २॥ अक काम सकामी नारि वतसुमरै श्रीरघुनाथ॥ देव दनुज नर नाग खग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१३३ स॰ पा॰

वशागति सब विनु हाय था।।३।।अवाचोअपनीभा
वनाअनुगतिभजेहैंदेव।।हमरेतोरघुवंशम
णिअत्मानंदअभेवा।।४।।कबिनु।।सीनलला
चाहैंसो तिहपावतत्रांगंककोकसीनललताघ
रीजाहिसदाहीनिमेसके।।सोभाकांतिलीय
एजैंभानकोजगतजनआननतनमनजिन
कीप्रभाहिनेसाके।।राजहेतुधारठसेवैपा
कभासत्किकोजाकोदीनेतीनलोकराजहेतु
रेषाके।।तोकोतहिभजैंआननम२ सोपद्यानजन
मेरेजानैंएतभजैंद्यारथनरेषाके।।५।।आदि
प्रभुताकेहेतएजनगणंकेनायआदिएजारिह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सिद्धि जिनदई गनेशको ॥ बसुबांछा धार
कैउपासत धनाधिपति जानेनाहि जोको
धनदीयो है धनेशको ॥ भजवेके जोग राम
सरभु बखा मसरा ऋषि जिनके स्वामी हितू
सेवक महेशको ॥ आत्मानंद कहै निजरिदकी
ज्ञोमाचीकाम चाह अनचाहे भजौ दशरथज नात
नेशको ॥ ६ ॥ अडिल्ल ॥ कलिपायो बलआइ
माचन सिमानसी ॥ मरवापरे जगमाहि रामन
सौ हि जानौ ॥ कहै सुनैन हीको ऊरामकी गाथको
हरिहेकी नौ ॥ ग्रछ बखानक हौ हितवानको ॥ ७
दोहरा ॥ कविता के बहीये ऊदाजमक मेलक सु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२४ स॰ पा॰

प्रासा॥३६॥ दस्त्ररयनहिमंगहोइ अबलसुद
प्रकासा॥७॥ बकनाकेइह लोडीये प्रथमम
हुकरपाठ॥ पुनअनवयव्रतरेक करिअरय
बनायसुनाठा॥४॥ इसमरे तो कछु बलुनया
गुंयनिकोसुपहासा॥ तिमसुधारकेवाचीयो
साधुबुद्धि कीरासा॥९॥ स्रोरठा॥ रामचरित
इसारसुनेसुनावे प्रीतिकरि॥ सोजनपरि
हैपारकलिमैकछुसंसयनहीं॥१०॥ इतिश्री
सतोपाख्यानेसूतशौनकसंवादेप्रातमा
नंदभाषावर्ननेभगतिदायकगुंयसंपूर्ण
मसमाप्तम्॥ शुभमस्तुसर्वजगतो॥ हरे॥
बालचरित्रअद्भुतरामचंद्रजीके

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सूनत उवाचा।। सोरठा।। इहि बिधि श्री रघुनंद अवध चं-
द आनंद निधि।। करत बिनोद समंद प्रियजन हृदय निकं-
द निनाना।। चौपई।। नित नव चरित करत रघुनाथा।।
कौतक बिकहि सिराइ गुन गाथा।। जन निजन कपुर जन
प्रिय भ्राता।। सषा सषी सेवक सुषदाता।। अवध नगर
नित मंगल मोदा।। निरषि राम कृत बिमल बिनोदा।।
पुन्य पुरी राघव रजधानी।। बेद पुरान प्रधान बषानी।।
सत्या बिमला नाम सुहाई।। पुन्य पुनि त्रेता कहि गाई।।
सत्य नाम साकेत नगीधा।। अ बैकुंठ बेद कर बोधा।। ५
नेते आदि अमित नगर भूधाना।। कहिं जासु कृति राम पुरा-
ना।। बिबिध बिनोद मोद गुन गाथा।। महिमा जासु त्रिलोक
प्रकासी।। नाना भांति मंडप जन मंडी।। मन हु प्रभाकर प्रभा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पुचंदी॥ अंदुरंसदसनमनूरदाविराजो॥ सुरपति पुरी वेषिज
हेलाजे॥ कंचनकलित कोटकलनीया॥ दीस्वगराज
तिरमनीया॥ सारक्रुरपरि बापरि वेषा उपवेनेविपिन
बेनेबहुवेषा॥ सुधनसद नकहु विकाल्या॥ कहुंसत
नकहुंताबुबनाए॥ मानितोर नमनचोरं लिवाधोविष
कुमेसुरसिलपिसवारे॥ २॥ दो॥ सदनसर नसा सम
नेबनेथने ससमाना॥ गीरवानसु विमानगानदरदारि
असमाना॥ ३॥ तोरकछंद॥ कलधूतमराकहुंरजनि
कुकराज निवेस विराजति हैं॥ कहुं हाटक पाटिक नीलम
नी॥ मसमानि कवा तिक वेसबनी॥ जलवेलुकतानवि
तानतने॥ पुतिमे सुवेहसनेहसने॥ विमलामहिमाक
हिकोनकहे॥ सिवमिव बिलोकिवि चिव रहे॥ तसिंसुंदरश्री

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

[illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

[illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

137

सनो॥सनि काममनो ब्रहुवेमकवो॥ बर का श्रमसर्वं
स्त्रबृह्वबरे॥ निनन्मेगु धर्मजरावजरो॥ निवंमूकिकवे
श्राति दसहोपमवेंगपुरसगपगु नमसमहाजरहिवाडवे
हेतुवहुमसनिमो॥ विरेवेहुमानमूममहसपेनिसो॥ श्रवधे
सगुरीइहमानवनी॥ श्रुरवंदितवेयुगनमनी॥ ति द
सध्यमहामनिमेरुपवेंमा॥ सियसंयुनदोमरमेसरमा॥ नव
रवसिवहासनिमध्युलसे॥ कारच्मेवरसरेद्दि दसेवपाद
श्रनहपुरहसितवरम्मोगविमनिच्चुमता॥ राजेनरगुनेदन
नहजेविजगुरपुरहता॥ श्रवदोपठ्ठमसजलसघनघनहुदर
मपोमा॥ नेपुकेजनकेंतुकश्रभिमामा॥ विविघवमनमवन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मनिमाला गं मध्ये गरा जुनर सजाला ॥ कस्स निमधुरमद
नमन भारनो जन्मजना लसो ननदिय मोरना ॥ बुर्मि भाग
भामि निमननभा ऽ ॥ ततिमनको रस्कू पक्षा घिका ॥ नि हिसग
क्षिवि ह बवनन तु रजा ॥ कजुनदसनसनन कुब्दा ऽ ॥ न
बक्षिर स्मनस्पवह्यं दना ॥ भ्मिल मुक्व वकारक्खिन बेहन
सुधाव्वह सम दृ ॥ विलोकी ॥ श्रियप्रुपवु मनकनको मो
सधीसपासेक्कोद नरानी ॥ पदसरजस्वनि सवभानी मक
करकलपविर पक्षानामा ॥ सदाकालनदरनमुनकामा ॥ श
घ्रम्बानसद नमोध रहा ॥ जननीजठरब ररभ्मोक दहा ॥
कनकमुनासजुनगुमुधाना ॥ पाव नव्दगु रानब रवाना ॥
तिनकिजमनयथा सङुगाशा ॥ दिनर नदगु नबरिरनख
हाऽ ॥ ५ ॥ दो ० कुमुदवेबुबिनकोमुदीनिदोषिजमु घामिदा

ना॥ जैसोत्र हैं तो मानकी जानि जानकी जान॥५४॥ बो
ध्रसपिय जानि कृपाल जगवंदना॥ सिष्य कलिमल गवै करे
विकेंदना॥ सीवसंपति है परीक्षा बिनासी॥ परमानंद के द
गुनगुसी॥ परमब्रह्म लखैं रनतिस्कातिजा॥ मैसस्वीगस्म
पुरंनस्किप्तां हो॥ स्वक्षकरबनारराम्मबनारी मनन्त्तपुसाकोने
विनमी॥ कहें रहें तितसस्मन्नपा॥ परमनतबोधक
रसस्तपा॥ श्रीशुकदेवजनक संबोवा॥ गुननगुधासुन
समनविघादा॥ एकसमय मिथिलाधिप ज्ञानी॥ कीनो
प्रश्नशुकादिसनमानी॥ रामनलसुसियोसुकुस्वामी॥ वि
रनहू जानि कृगुगसनुगामी॥ मनबुहत्न वरवेदश्रवता
नासुनेतनुमनवेन कोजाना॥ श्रुतिनदीन यवासमनसघ
बोलबचनसमनिपजनुवरषेसुनननुपानमहें सवउदमो॥ मानांरह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुत्र

बेद सकल स्रुति सिम्रिता ॥ कुल नन नवि निसस्य भाग बु जारी ॥ जि
सै से मो कु सं लक्ष्म घर गी ॥ मी स न गु नि नु प री कि न रा जा ॥
कु कसो का गो ल कु बि रा जा ॥ गु क गु नि बु ब ने न मि थि ले सा
बो लो लो ब ढ रि गु न हु स र बे सा ॥ १ ॥ हो ॥ बु ल न न वि न स
दे कि गु म कि रि वि थि गु मो सु हा ना ॥ गु नि कि म को यो प री
नो हि रा म म क ल ग न ना ॥ ११ ॥ बो ॥ गु नि गो लो क बु के को मा ति
क हो क पा बि थि म गु नि गु दि पा लो सु नि गु वि बि न य ब न
ने मे प नि को बो ल स्रि गु क सा ग म न ति के ॥ गु न रू प मे ह र
क बे हु को ल्ला ॥ दे व सो व लि लो क गु स मा ला ॥ न स्म सं वे ग
मे रस नि मा की हो न गु सो सि ब न न ता ली ॥ पर हे न ना म सा
मगुब ना ना ॥ श्रु नि सि ता ते सु मो ब ह ब मा ॥ स्वे न दी प पा न
गु क म ग वा ना ॥ जो ग्रा नि र ब ना म स्म जा ना ॥ जा गु स भा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

परमेसरु संगा ॥४॥ ये विविध विधवाद्य अंगा तिन्हि
ग्रासिन्नि सिल्त निमामय वसाना ॥ पुरम पुरष श्रीराम प्र
माना ॥५॥ सेवनीय अ वनीयसदा सो ॥ कानन्न यमननीय
महारो ॥ परमानंद कंद गुनमासी ॥ धेय गोय सि वरम किना
सी ॥६॥ कहि विधि बारहि बार नरेसा ॥ पुरष बुधानधु मोक्ष वधे
सा ॥ पुनि नारायण रूप अनंता ॥ सेस सुद सोमि श्री भगवंता
ना सुसदा सिता पिवाहु वा ना ॥ स्तुतिसवे सुगुन निरधारा ॥
रन वतन वपसगुमतो ॥ स्तु गोन बुधकि वि हरि हरने ॥ र
दो ॥८॥ कहि विधि सब स्तुति सारथ्री सीतापति कि गे यज्ञो छानि ॥ ९
वरितसे चौसु मैसवसभयाव ह्रुलोश्या ॥ श्रेय ॥ सोमह
पमसजो वन ग्राना ॥ सुनि रोपको कुलोनिनगा नया नित हि
सल्मानन मगन द नरानी ॥ र सुतिमस्पमनमा तिमदमानी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कबहुकनि नइछागो लोका।।गयेकछिपमैंखम लछसोका
जहांकानसुकधेतेसमरहा।।कलपविरपसबलछकबरजूहा।।
जहिं स्यौंसविपिनबेदाबना।।धननविपिद्रगोद्रगोबर्धन
पुरेमहिं जसुनाबिरतेसुनपा।।लोलकलोलकलिनकलरह
पा।।नासुनोरमततोमसुदाबना।।कलकदबकोनमनभाखब
जहिंबुजरा जनासरसरानी।।बुजबनिनाबिहरेमदमानी।।ज
होकिसोरदेसबरधामा।।विनकोडनबुजबीथिबिहारीपजो
माधुरजमतुपरमसमारा।।सुरलीमधुरनादनबनागरा।।नासु
ललितनलीलाकरियदेवी।।श्रीरुरभानुसुतासैबी।।सु
धोनामसुरईसमनायरतिसनकोरिरूपरसधामा।।१०।।हो
जहांललितललीलाकरबासिंधुमगानहरिदासा।।बृलमसुबहि
सीकेरमरिसगानेरसिकनमरासा।।पपा।।चौ।।गुबिजहंनरयनाम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बुझ रजा ॥ नासु घोष रस पोष बिरजा ॥ दिन दिन दिपति
दिवाकर जोतीं ॥ मंगल मय मंडन मनि मोतीं ॥ जा कि रोनी
नसु धन अगाजा नी ॥ धु नव न स्त लं व त्स ल स खा नी ॥ जे हरो
पना मधु न गगन रासी ॥ भू रि भाग भाजन नख भू नवासी ॥ विदरत
बहु विधि विषवनाये ॥ जि न हिं निरषि रितरज ल नाये ॥ प्र
कृति पार परमानंद रूपा ॥ जो यतनजू यधु तेजमल जन्तू पा
कालु जाल जे जाल विहीना ॥ मव दा स है यह यगुन हीना ॥ जि
हि क्या लो कि कस कल समना जा ॥ पर विचेष्टादि भूरि गुन भ्रा जाय
कम ला कार कुसुद्धरि निकुञ्जा ॥ सकल समाइ कौ वस्तु विथा
ना ॥ उत्स व नित नित नि रमुख केली ॥ नित रूप नव नव लल ने वेली
मंगल नित्य किय मंगल हीना ॥ गोधर सादक नित्य नवीना ॥ पत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हेरपकलकालिंरीकलो॥ बैसीवर मरकरनवमलोपुह
ह्ये॥ संहदर मणमनिकानेअवे धामकामजमिगणाणबि
बिधग्रोपिकांवेरमधिवैदाखिविनलुललामा॥ मथवेाा
कारतकेलिवेद[illegible]धवनमाली॥ चेडकिंनिरें मैनविपि
नाली॥ अदेविरंनिस्माविंकबुदे गा॥ कमुनिकुगनमकरिके
हिहसिवे वा॥ लहिगा विका मावबदमागी॥ रमैवुनेसरम
नरतनगी॥ पुलिङ्क निगवरिविगनमक्रानिंसं॥ गोपी
भावभाव नाम क्रिकें॥ विदरैं नहवुमनाय यकसेगा॥ रंगेल
लिनलीलारस संगा॥ करिकलगावबिविधरसकंजया॥
करैवुयाप्री नममनमंजना॥ तिरे सम्राजनविधिमैनाहिपाला
निरमैाकडवेयरसजोलो॥ नामपरिकिंनजिहि जेमाजोना॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निरिंहुतितें भागवतनबखाना ॥ श्रीभागवतसुवनकरि
राजा ॥ जोयरा लोकविसोकविराजा ॥ सोनुहृदैविदोलिसुन
गावा ॥ जानिसुकसमवदरसिरनावा ॥ लोबहरीबि
नयनुनेवा ॥ भगवन्मुनिनवबदनकलुमीमेपा
योपावनगोलोका ॥ नित्यविलासभवसमसोका ॥ १०१ ॥
दो० ॥ कहरिकेर्तनाकररनारनवकस्योकुतारथमोहि ॥ कहे ए
कसदेहसुनिरहसुनिजजनतोहि ॥ १०२ ॥ चौ० ॥ कवहुईहा
गावरनेडूकदेवा ॥ सुनहुस्वामिसोकहौंग्रसेवा ॥ नाचेते
हुलेकवलुबनवारी ॥ श्रीवृंदावनविपन्तिमेंजारी ॥ पुरुब
एकद्यायोतिहिंठामा ॥ ईदुनीलमणिसुदरस्यामा ॥ कृ
ष्णसमानरूपगुनभाजा ॥ वयवपुवरनविसेसविराजा ॥
धनुषनिखवानवरधारी ॥ नामभागभ्राजतिनयनारी ॥

जिहिं विलोकि ब्रजनायक नंदनंदन ॥ श्री राम आय नमो ज
गबंदन ॥ इम कहि कस्यो स प्रेम प्रनाम ॥ श्री राधि
का सहित सुख धाम ॥ करि प्रनाम पुनि विसकि निमांहि
मध्य चक्रिन लखि लोक मझांही ॥ पुनि सो पुरुष पहर
बेन माला ॥ धरि अधर निमुरलीव सजाला ॥ रास
रास मंडल मधि सोहा ॥ गाय गोपिका गन मन मोह
नै बसु रवचक्रिन चरित्र यहि चाही ॥ भा विमोह मोहि
मन माही ॥ भय हि मुहि कहौ कृपा करि स्वामी ॥ तुम जो
गीसर्इ सब गामी ॥ १० ॥ मीयाहु दस र्व भृगु तम मनु
कहौ को व हिं पुरुष सुंदर सांवरो ॥ कि हि काज स्त्री भुज अज
प्रविसो ला सु अंगउ ता वरो ॥ यहि हरहु मम संदेह स्वी सु
क स्वामि सत सिरमनो ॥ कर कनानि धान सुजान तुम भाबु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रा नमान सकोमने ॥२१॥ सो॥ विभुरातव र बैनमु
नि उत्तरदीनोजुमै ॥ सो॥ सबसुनसुषदेन मिथिलानाथ
कनरपते ॥२२॥ इति श्री राम रहस्य रत्न हरि विरचिते
श्रीसुकजनक संवादे सप्तसप्ततितमोध्यायः॥७७॥दो॥
सुनहु परीछित प्रेम निधि पर तमतत्व रहस्य॥ हरन
सकल संदेह गन करन सुजन मन वस्य॥१॥ चौ॥
रह्यो मोहि पुरुषमें नाई॥ नहि सुष सष पुरुषोत्तम सोई॥
परम ब्रह्म लहर नप रधामा॥ सो श्री राम नाम सत्र भिरामा
बरनों तास परम प्रभुताई॥ कस मतीसम सो सुनु मन
लाई॥ कबहूं कचित्रकूट निजधामा॥ कुसुमित बन नी
रिव र सत्र भिरामा॥ तहं मृगया रत पतिहि निहारी॥ बोली
जनक जने सकुमारी॥ कह्यत्र वसर नरदेव दुलारे॥

गयाके लितन हतुमपारे ।मस्त्रनजलमकनीकसिननव
वेदनाममयेनुपतिनेदनच्छ विमददवाहीरघदीप
तिदिख्यदिनेसा ।।कारियक हेकलिकुंजनिकेसा ।।सुनि
सनेहसानीसियवानी ।।सिंधुजानीमनीसनमानीय
प्रानप्रियरहिलेसंगमतुवेसा ।। [illegible] योमा घुरीकुंजपूवेसा ।।
मी रिकद संग [illegible] कि सो [illegible] र मेडे [illegible] मोहीज
[illegible] कामो दमदमातो ।।७।। [illegible] मधुपम [illegible] माने ।। २
रोग [illegible] तनि [illegible] त निमंज [illegible] सिं [illegible] पान ।।गकोकिल
कुल [illegible] जनजोहाकु [illegible] का [illegible] नाशी ।।वंद [illegible] सतु गेय
कुल [illegible] वलत पव नेवतन [illegible] मनमा ।।२।।भ्रुकुटि [illegible] नलसेत
लवंगलता ।।लीपर सदि [illegible] करमन [illegible] कमति वाली ।।जहि
विमालेमरवर सरसाने ।।के नव [illegible] नव [illegible] हविकसाने ।।

चौ

143

कुलकदंबकाननकुंजे॥ कुसुमितकुसमावलीबि
राजे॥ तहां गाढ़ दंपति रसरासी॥ अयेसुमनसयनीयबिला
सी॥ रसमयपरसपराग लालपवुसंगा॥ मयेपरसपरसप्रतिरसरंग
विविधविलाससहासरसरसाये॥ परमप्रमोद पगसपरपाये॥
तबरसिमंदमंदमृगनैनी॥ बोलीप्रियहिं वेहिपिकबैनी॥
सुनहुस्याम प्रियाकुंजमहलमैं॥ चंद्रमुखी चयचहलपहलमैं॥
राधाकृष्णरसिक अलकेली॥ कीजियक्योंनजुगलभुजमेली॥
सुनिबोलेसुप्रुबैसबिहारी॥ मुनममप्रानसजीवनप्यारी॥
श्रीराधावृंदावनरानी॥ सोनतकौंसरूपरसषानी॥ कुंज
कुंजनंदनंदनगजगामा॥ सोमनमथकोसबुधसपुरना॥ पुनि
वृंदावनविपिनसुहावना॥ सामनिनुधामक्रीस्सकातिपाव
ना॥७॥ दो॥ इहविधिकरिनिजबल्लभहिंवकुंविहसिनारि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बोहिणाद रसोहं देवनननं कुंजमाधुरीं हीएपाश्री
नमुनाजलकलोलकूतसीतलं॥कोमलमारुतेमेसुम
सीतलं॥६॥रत्नरचितनववविधिचित्रविभागं॥किंनरि किंर
सिक्ष्मगानपशुगगं॥गोवर्धनगिरिवरजतनूपा॥
बेनउपवनराजतरसरूपा॥सुतिविमालहदराबन
मोह्ना॥७॥दशउपवनमनिमनमोह्ना॥जहिंबेकुंठ
सुधिविमुखसमाना॥नंदसदनाकेदनिधाना॥८॥विवि
धवरनगोधनगनभाजा॥६॥भागवविदितसविराजयाँ न
वनेचकोमेडलीमेइना॥वसवसतस्रणवनिकरंउ
ना॥बिपिनवासिकावासमदछिना॥जहुधामगपिव
मलमखिना॥बहुरीगासमेडलमरामीजहिं श्रीवंद

विपिनविलासी॥नाचतनिजप्रेयसीसमेता॥स
जैसेंगीनेरीनिरसविता॥सिंदूरसमनजुवतिजनजाला
गाउतिगीतविमलव्रजबाला॥हरिषाइनिजप्रि
यहिपैसा॥बोलेबचनबहुरिबरवेसा॥६॥दो॥कु
मराधिकादंपतीइनममतवेस्त्रवतारामधुरललि
तलीलाबलिनखिवविमोदनहास॥७॥चौ॥तिहिं
क्षणवसरसियरामहिदेषी॥मुदितराधिकाकुलविसे
षी॥करिउनामव्रविसेतिनिमारी॥जयाजीविसल
बीविसमाही॥नवतविद्योरासरसरूपा॥सियर
घुवरकृतनमलिनस्त्ररूपा॥विविधवजेस्वजावतिगी
ती॥सवमहत्वरीसरसरसभेवी॥मृदुलमृदंगाचंगाक

रनालाला॥ बीनउ पंगसुरंगरसालाला॥ खिहितविविध
बाजनजगाजै नै॥ सबभिलखजैनहोनबतै नै॥ कियर
सुवरकुननू सकिहारी॥ मईविविधिवउरविवसुननारी॥ म
मधुरलिकामादनबीना॥ सुनिजानकीगानरंगभीना॥
सुनिबुनबालजालकालिमोहे॥ मदउनमसरिससब
मोहे॥ कैरनसदनउनमादननामा॥ कमलिनिसुबत
नवदनाना॥ नवपरमसुपचलासविलासा॥ भरिभाव
रंजितरसरासा॥ कोटिनकामकलाबिवनारी॥ करीवि
लासविवसबुजनारी॥ कबहुकजुगलललनतसमाने॥
दिपतिदिवदिपतिदरसाने॥ कबहुंगोपिकामनमनिज
नूपा॥ कलिकेलिकरनलनूपसनूपा॥ ॥ कबहुंकजा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गुगगोपिकाइकइकुश्रीरघुवीरा।।नाचतनरासविला
सनधिमेदुरमुरिरसरीरा।।सांचौरतननसुवरनरवित
श्रुतिसोहतौ।।स्यामापेमीरमुकुटमनमोहनमोहना।।गुंजाहारपीत
पटराजै।।अधरमधुरमुरलीमुखबाजै।।नूपुरकंकनकल
करचरना।।सनिमरूपमनमथमनहरना।।कोटिमदन
मनमोहनरूपा।।विविधविलासरासरसभूपा।।इहवि
धिनितविहारविलासी।।नित्यरूपरघुवरसुखरासी।।
ताकुनिवासनित्यनिजधामा।।चित्रकूटगिरिवरअ
भिरामा।।नामधिकुंजमाधुरीमाहीं।।नित्यरूपजेदाव
नमाहीं।।नटनिकेलिकरतरघुनंदना।।भूमिमनकोतुग
नजगवंदना।।जेहटवंदनाधिकारसमेता।।निजजनवंता
येतजगजैता।।नहठसेवकरतनमोबेनासी।।करिकरिबे

विविध केलि रस रासी॥ बहुरि बिलोकि मतिभ्रम भारा॥
नारि नैतैले नलनलिन अवतारा॥ होइ प्रकार वसुदेव अवा
सा॥ करत घोष वसि विविध विलासा॥ नाते परम नु
[illegible] रामा॥ मत न वितक्ता नंद घन नम भिराना॥ कुमारि
कृष्ण वतार सु [illegible]॥ ना सु पूर्ण [illegible] तिगाए॥ श्री दा
नाते नु हि करनीय न हिय रिसदे स्वरूपा ला॥ स्वम [illegible] सना
ननन तन श्री कोमल पालक कृपाला॥ [illegible]॥ [illegible] काल
केलि कलि नक मनीया॥ [illegible] मन [illegible] कमनीया॥ क
ना सु [illegible] नमर पाला॥ [illegible]
ला॥ कौरि कौरि बल [illegible] ना॥ विसु [illegible]
हुनी॥ [illegible] मनी [illegible] ना॥ गोपि [illegible] व भा [illegible]
मसैवना॥ सद [illegible] लेस [illegible] ना॥ [illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ममउरस्मुसो॥तुनिमुनिजनरंदंदकुबनवासी॥सोठ
स्रकसमेदस्तुबरासी॥निमुपिहुगोपिकात्रुरूपा॥
नाम्बनूनिअभेरमेद्रुमनूपा॥बहुरीबेष्कुतिगन
अतुरागो॥नाननगोपिरूपबडभागे॥सदासद
पक्षोजहंकाला॥सुरभिरनेरसदा॥सजाला॥क
निकरननेमभीषमिशुतहाइ॥जहंविक्रुनाथधा
सरसाइ॥मिपरानगतहरे नक्रेश॥भहननदजाहि
अमलम्रुमेदा॥सबलीलाजहिंनिमनेरीना॥काल
प्रकृतिपरिनामविहीना॥जहंसकललीलाग्रहि
देखी॥श्रीभगवानकीबरासुमवेदी॥१२॥दोहा॥श्रु
सम्रुरसुनिजननजाहिंसेवन्याहिसकिसनातनी॥

कई कोटि कोटि बिंजन खाटि खुपंच वरनि पुनि घात
नी॥४४॥ ग्री विवकुटविनि नेवेघ राविपनिविनाशिनी
श्रीघ गा वनमुननेधावने सदा सेवेसघसंघारे नी॥
१३॥ सो॥ पर मेधुभरमगुनिनामपद्मनमुगु हिरेरवना
मिन नपुनिकार नवषान वेदनपावेपारउनह्य॥१४॥
जानिजासुनूभिलापुरामस्वागेगो लोकपुहि॥नि
ननवलीलालाषललिनवलिननि नेहोजिनर॥
१५॥ ऽ निर्थीराम रहोसतनूहिदिरवितेश्री राम
नामस्व भक्के मरदसनूतितमे धाय:॥२०॥ सो॥
सुनि मनु निसुवर गमानि विसुरानु वोलो वचन
मुनिवरकहो वषानि स्वोरामगोलोकनिम॥१॥

चो॥ स्तुनि स्तुकस्तुनि छो लेवरखबचना॥ ८९ जथा
गोलोकवि रचना॥ स्तुनिनृपकलम्प्राद्धिस्वीतमा
कसौस्टाष्टि सेकल्याणिकामा॥ तबहिरिहरन्यगमीरि
बना॥ स्तुने तिनिपंचतनतबनिवजाए॥ तिननेपुनि
ब्रह्मांड बना॥ ॥ निखिलजीवगनवासस्तुलवा॥
त्रिविधजीवरचना॥ पुनिकीन्ही॥ कर्मभिन्नपापपुन
तिनहिंदीन्ही॥ सागरससप्तसरितबसुधाकीक्ष्करि
बहुरिरचना॥ कविक्षाकी॥ गिरिवरसरवा॥ विविध
विधाना॥ वनतीनामानेद निधाना॥ दिवसप्तद
जेमनुजमनुबनाऽ॥ विविधबासवररचेबनाऽ॥ स्व
वपुपंचररचनार विविमा॥ सेकमललोचनका॥ मिला

नबबोलीसीताश्रीरामहि॥स्वजस्मसयनघन
सुदरस्यमहि॥सत्र हीना॥ थम्रहुतनवकुरनी॥बि
दविरं किनेरं चनवरनी॥ ५ कामाबसुजोसंसा
रा॥स्वर्हतेविवेकज्ञनेकपुकाम॥१२॥ दो॥ सबप्र
कामुदरसुभदसवगेपुरु मिपाता॥ ॥ निजु कि
नकलनिवासवसिरमेजवतिनुनम्नालपरान्चौ॥
परमपुनानधामरुनामा॥ कोसलपुरप्रीहत
नमपामा॥ सकलपुवेचपुलनयललयहरोधाएक
स्वाधम्रवधपुरसोई॥ जुमपभुसदारमहदह
माही॥ नवलनिवासकरोकुपोनाही॥ सबकरने
वनिवाससुमकीना॥ निजहितविरचोकोनन्नवी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ना॥ अद्दपि सत्रहिय महदास सरूपा॥ यहि पर धाम
नि कामक्त्र नूपा॥ निरुपि श्रुति मम मन उतेके वार
चहुं ना जान ते नि लय कृ के ठा दि धियजत प्रापर मक्त
मे तत्मा॥ श्री साकेत नमर सि सु बसामा॥ इमसुनि
श्री सीता वर बचना॥ कहीं हि गोलोक विरविना॥
कोसलपुर स्त्र भि राम नाम ते॥ प्रगट कस्यो निज विम
धाम ते पक्रम लउ कासब लोक सिरोमन॥ बैरिन
सेकरादि सुमनो गन॥ ६॥ दो॰॥ श्री साकेत समान
जहिं सब रचना सरूपा॥ राम बिलासादिक लोलित ने
लीला सकल अनूपा॥ ७॥ चौ॥ पुर ते है जनकन जिरा
जी॥ नमर लतरैं गरेगम रिमूजी॥ दिव्य रतनमय मिनि

अतिपावन नाम भयो सो गो अधम नू मनभावन नाम व
प्रभोद ब नन्दी नि धा ना ॥ बनो सो बूंदा विपिन मह
ना ॥ पार आनन नरवर जुक्त रूपा ॥ भयो सु हेमी सुख स
रूपा ॥ सप्र पजु राम घाम सुभ सामा ना ॥ सलोन सुन्दरी ग्रह
स्त्री मनमा ॥ मघा रूप धन्या पति दियो रा ॥ कुलो सुविन म
मि धानस्म श्री रा ॥ भयो सुनेद नाम बूनमपा ॥ धन्या जे
हों जसोमति रूपा ॥ लीला अधिक करगो पि गुपाला ॥ कि
ये सब निमव नाम रसाला ॥ श्रीज्ञा नेद भई श्री राधा
सुमिरत सब निकलुत न बाधा ॥ ३ ॥ हा प्रभोद विपिन
परनानी ॥ ३ ॥ इहां बनी बृंदाबन नानी ॥ महि सागर भर
सिक निधि धारी ॥ कृष्ण रूप रघुवर अवतारी ॥ निव वि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लास्यसमरसरातो।।सुरलीनादमोदमदमातो।।६।।
दो।।स्वबलीः लाप्तिकरकलितकलगोलोकनिवा
सि।।श्रियनमधुतिबोलीवचननिकसिबिदेरुमा
रि।।७।।नायस्त्रलोकिकतोकगोलोकप्रसोकविलो
कि।।मनमकरितोषस्त्रतोकमोरविबिलोकिनिस्कोकि
ट।।सकलसैंनिसाकेतसमनुभ गमसमीइकठाइ।।का
मकलितलोलालतितनचितनकरिहैइनसोड।।श्यामा
।।गुयावचनमधुनिरामरसिकरमेतिहिसोतहिजागा
वतमधुलिस्त्रचितनमहामाममवितनयाधनपबोधन
कन्हीशुकवचनाबिलासा।।बिहुरानमैथिलस्वमना
सा।।तोनेपरमतनश्रीरामपसोनकमनुकिमनपसबजा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मा॥ यहि श्री गुरु कइ तिहां सकल रूपा॥ सकु तिसिंहां नसा
स्तुति भपा॥ मैजन हेजो गीसकि का मा॥ सो सब छिद्रा नेह
धन रामा॥ गुरु कम नकारि से मग्नु मदाय का॥ सब दम अज
नेला यकार गुनाइका॥ दीन दयालु हरि नद: खंदा हका॥
निभ नेजोगमोगा निरबाहका॥ यहि कलि काल लका
लविलोका॥ घर हृ घर घर घर नर नमू सो का॥ ब्रह्म माया
महेस मन हरनी॥ बिबुध बिरंच निबेव नकरनी॥ सब
रनेसर नबिनु नरा॥ नि दुरेना॥ का सजियजा नम अनु सि
यकै ना॥ जेमयध के बुधि म्र सकृ याने॥ कामी कुटिल
कपर लपराते॥ कोटिकलेक कलित न भै मंदा॥ पुनि पु
नि पर मसहार जे मके या॥ नेम्र पिजा सुमरनसु पलाहि॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पुनि भअद सहद वारिनदहहि ॥ तासु समानत्ताम
सुभस्वामी ॥ कहहु कवन्नगनुचं मनुगामी ॥ जासु
नामवगनिकानिसतारी ॥ वदत्नअधमहस्वानता
री ॥ जोनिजअनुगमानुपिनभ्राता ॥ सुहदसखासखा
मीसुखदाता ॥ सोकारिकृपाकृपाकूपाताभ्रकुके
हृहमयतुमारा ॥ ११ ॥ केदारदककसदारसुवेसम
वनदरितदूषनदावनो ॥ सियसहितनसमारहृस्प
यहिबरमोसुनेमनमावनो ॥ जनप्रमनेमसेम
नगावनसुननसवसुपावहो ॥ यनुधानकु
लकलनकोरतिकोनमानवटवहो ॥ १२ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अपवर्गदायकसर्व्वलाड़कस्त्रवंधिनायकगुन
गनं।।वितमोदमंगलकरनेरघुवरमगतजनजी
वनधने।।श्रीव्यासमुनिबदनारबिंदनागलित
कृपायोजुमें।।रघुनंदगुनमकरंदमुनिकुलचंचरीसो
प्पायोजुमें।।३।।सुनिसरतबचसोनेकसमाजसमेत
हियहरखेमहा।।रसधामरामरहस्यरस वसि वि
वसिहृगवरकेरहा।।सूतहिसप्रेमविलोकिपुनि
पुनिसकलविधसनमानिके।।कीनेपरमपूजन
पुलकिश्रीरामसुरतिमानिके।।४।।सियरामरम
रहस्यंयहिसुखसदनसमसुभदायकं।।विरच्योय

यामतिरत्नहरिरघुवरविहारविधायकं॥कलि
कालकठिनकरालबहुजंजालग्रतिजियजानि
के॥भवहरनससियधनुधरनगुनगानकरिहैंकौतुक
बखानिके॥१५॥सो॥यहिरहस्यरसधामरामराम
रामाचरित॥कविजनबचबिस्रामधामकामसुमि
रामपुद॥१६॥प्रभुमाधुरजचरित्रमहामोदमंगल
करन॥बरन्योआसाविचित्रभन्योअश्यामतिरत्नह
रि॥१७॥दो॥कहिनसकतसिवसेसबिधिउनकेरा
नेंनररघुनंद॥सोबरनैकिहिंभांतिकहिममसममा
नमतिमंद॥१८॥श्रीतुलसीगोस्वामिकीकरीन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कलसी जानि ॥ छं॰ मिदु सकल सज्जन सुमन बिसुधि
कुल सरसमानि ॥ २० ॥ कहै जदपि गोस्वामि समब
चन बुनाइ बनाइ ॥ जदपि होत गोस्वामि सम कहै कि
बन कबिराइ ॥ २१ ॥ सत कि सी बानी कहै होत संत का है
को इ ॥ पै ब कहं सब रावरी करत है सन हि हि होइ ॥ २२
मह मकुमै मलिन मति पुनि भगवंत रति हीना ग्र
थ ग्रथन गुन गान बिनु गाढो ग्रंथ जन्त बी नास्वी
बरनादि कुगति दोष गुन रीति रसादिक पंथ ॥ छ
नेकै बिना बिबेक हि बिरचि बडो योग्रथा ॥ २४ ॥
औ है बहु दूषन विदष प्रतिपद पद मकरंद ॥ हरि

152

गुन सब दूषन दमन जानि पढहु मति सुधारु ५॥
ग्रंथ निसज्जै नृसु जनता पाल हरि विश्वीन॥ नातरु
स्वान समान सरा ऊगी नवेद निंदु षनदी नाउ रधा पुरु हि वि
चार मम दोष गुन नत जि निजै अपनि नहा री सुनो गुनो
सक्षमत जन नु हि क्रम चरक अवधा रि॥२७॥ सिय
रघुवर लखि छ मन भरत नश्री रिपुहन लछमन॥ वंदे
कार हि वार गुन आचार्य सब संतार ६॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथ यंत्र जंत्र फोले का ॥ शोरा कलमी छन सादरु ॥ फटक
डीफ लु ॥ सौ सालोनं ॥ पंजे बराबर लै के ॥ पीसके खरल तुक
र नाछु लीमूत से ॥ अथ वाफराई खर ससे ॥ अथवासरहि समसों
दोपहिर खरलु वा तीन के मिसु काइ खर लेके जंत्र जंतु का रे जे तेकाल का
बरसों का डोनी वा यंत्र जे फोला टूट हे जाइ ॥ खरा नासका दि नि र्दन
होस ॥ चार तोले किष्ट ॥ तोला रस ॥ चार तोले फटकडी भा
सा अफीम ॥ नीनों मे वएं ॥ किष्ट वरखरो ॥ अफीम तेरसकड ॥
तेकर छा ए लेएं ॥ फटकडी चिट्टी कुलकर पीस पावंनी ॥ फेर
अफीम वा मूपका लेएं ॥ पाणी नाल रस हू गिला कर लाइ पावे
चिणा ॥ आई यंत्र फोला धुंधा मिट्टी होस ॥ तोला सीकोकु टकन
राइ लेएं ॥ दो मासे मवाहर बीरख रलुकर ले एंअबी पावे नापा तोला फु न
णीड लकाधु धजाइ ॥ रेपारस रमास लदी दोइ लेकर बंबेली पाछा ॥ फटकडी ॥
रगड नैन कंजे तु कारे मिसा जंत्र धामि र जाइ ॥

दोहा ॥ कलिवं जीवअनवायएऐगोयेहलोगेचाम ॥ दोदोमा
सेसाबनेमषेपीडुतननहारा ॥ मा ॥ दो ॥ मना सावलिजेवादृएंगी
वेपागरीसो एकाारतीत्रमलक्ष्मिफेनकोहूरईइसहीदेकर ३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कासे की गति कहि न जानी

चौपई ।। मन र स्वानी नर बोले बानी ।। चलत तेवा मे ??
शुभ दानी ।। बुधि सा ति दाह हनि है सुखखा लंगी ।। मे थे ले
उ बुधि सा तिर होई ।। चलत ते दह न सब कु खु र वाई ।। ५ ई
ह तो ज मे पुगार ब स्वानै ।। स्वामु को गति को जे तुजा
वै ।। हो र ।। जो कु गे सो दूर ब दीजै ।। सघो न जउ सले
मिल लीजै ।। म्रादि त बोले कर कि गार ।। ला गभ्रा
नी पडे पुकार ।। सो मे बोले हरि चित लाई ।। मन शुभी
बुद्धि नित पुगराइ ।। बोलु बोलजु बसंगल बोलेउ
मीरन सब मे बही मन डोलै ।। बुध बोले कोइ मित्र मि
लावे ।। कैकउ मीठा भोजन पावै ।। भाग बोले कम्ल
मि बास ।। बुम कु शाल घर मे रालबा ।। गुकर बोलप
ढोले कोइ ।। मिठा भोजन पावे सोई ।। मन ब्रबास का रहेउ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कालु॥ जहांसा निक्कर रहिदु कालु॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चौपड़ी।। इन सभ ज़मा लेगोरे का होइ।। तीनस्से रद्दु लर
स कि कसोइ।। तो लेती नरसें दु लेइ।। अग्र गाध स्वोका
तो को दे।। सम अलख पे होइ ते खुगोली।। रद धसे
ग वा तुरख मा हि ड से ली।। कुबत करे घरे जोरो डस
सु ला गा ता म सनो ला।। वो।। ... य बडा त्री मिल लि भने
ह्र डे बहि डे असा मले छाल्या ल्ली बफ ल मा ने का नाल
मे घां मि र च्छास सुंठी ने डा।। बू जी दा नेज वन्नी मिश्र।।
दो वें तो द री यां मि ल चिट्टे।। सर का कल चित्त गोजेसार मिटे
दो नो वा म ए ला ची बिन बसा।। सभ मे सम ले कुट मिल पासा
बु दाम रो गे नि सो क स मी ना।। विधि एसे से दूत मिला
वो धी ना।। पीछे जल दे चाश पका वो।। दिन इक्की सा दिवस

ਪ੍ਰਿਥੁਮੈਜੋਰਾਜਾਗਏਇਕਿਕਾਪੜੀਰਿਦਨਗਏਸੋਰਿਭੁਕਾਲਨਗੀ
ਗਏਪ੍ਰਗਨਿਮੈਸਮਾਇਕੇ॥ਕਿਰਦਗਏਪਾਤ੍ਰਦਗਏਰਾਜੂ
ਤਗਿਰਿਦਗਏਬਾਲਿਗਾਜੇਹੁਕਸੁਖਸੰਪਦਾਕਾਮਾਇਕੇ
ਦਿਕ੍ਰਮਾਦਿਤਜੋਸਿਸਧਸੁਬਾਹੂਜੇਪਾਗਏਤੇ[illegible]ਗੀਸਭਨ
ਕਿਸੇਇਸਜਗਤਆਇਕੇ॥ਸੇਰੀਸੇਰੀਕਰਤਜਨਤੂਬਰਬਾਦ
ਗਏਰਾਇਸਬਜਗਤ੍ਰਿਕੁਬਾਜਾਨੂੰਬਜਾਇਕੇ॥੧॥ਕ੍ਰਿ
ਤ੍ਰਾਸਭੁਕੈਆਪਾਸਤਾਂਦੇਸਅਨਰਗਨਪਰਦੁਰਗਾਸਭੁਹੂਸੈਤ
ਸੈਗਾਜਮਾਨਮਨਪਰਕੋ॥ਪੀਟਤਸਾਕੇਸਦਾਰਿਗਾਹਿ
ਕਨਿਨਕੂਪਾਨਤਰਿਕੀਕਰੀਸਿਭ੍ਰਾਂਤੇਦ੍ਰਸੋਚਕੂ[illegible]ਪਰ
[illegible]ਕੋ॥ਰਿਦੈਪਭੂਸੋਕਿਗਾਪੇਮਪਰਿਹੂਗਾਚੌਅਗਿਕਰਿ
ਭੂਸੈਕਰਕਾਇਰਿਹੂਰਿਹੂਪਰਕੋ॥ਏਕਸੀਤਿਕਰੀਨ[illegible]ਕਰੀਕ
ਕੇਰਖਾਆਪਤ੍ਰਿਪਭੂਆਂਖੀਰਤਤਾਂਬੀਤਾਖੀਕਰਕੋ॥੨॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथ पाँडु रोग पीपल को पईस नवरोग वाइ कफ को हर
गौं डी या झोला दिक हरनेवरा ॥ इ अथ भैसी या सेर कु लेई ॥
कड वाने नु पानु पर सेई ॥ त्रिफला त्रा धुसेर को कुट करा ॥
आठ सेर जल मे गनीधर ॥ दो इ सेर रहला ह धर कर
तोले पांच पाच वि कुटा त्रिफला तोला ॥ वाइ वडिंग पांच तोले दे
दंती तो ले पांच मिलावै ॥ ता भावक ने रक्षित पावै ॥ चित्र
तो ले पांच मु ले इ ॥ जिमी कंद तोले चतु देइ ॥ पांच पाना थी
ने जमाल सु गोटे ॥ गो हे मा हि उगाइ कलो टा ॥ अथ वा गो हे
माहि पोट ली ॥ सारा दि ने आग पर सो धुली ॥ वच तिला इ तोले
पंच पांच आमले या वा वडिंग इन नाच ॥ तोले पांच त्रिसौ भी लेवै
देवदारु भी इक समहा वै ॥ पांडु रोग छके दो दो तो ले प्रात सीत जल सौ मेल कुटे ले

[illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रिरनमालकी गोली सेटी रवाइ॥ मोधकतेलुम हे सोपदाइ॥

दोहरा॥ रतनजिजोतरतांजणीरतमूढीभीनामा॥ लूकांरेसेपानपर
पीतपुषपगुणधाम॥१॥ मरचासोंघुटपीजियेबिरवसमूंदेतनसाइ
यावरजंगमभ्रांतदोहलकायेसुभदाइ॥२॥ मूलछाल्लेइसीकी
ममीरनिरवसीजान॥ वरकस्वरणमोतीगुलीखिंदमोतीयाहरा॥३॥
दोहरा॥ करकवेधीपत्रकरकंचनकेसुरगपान॥ पहुंनपुरदासंगसम
बोयूरसलिपकान॥ धूपमाहधरसातदिनमरैरवरणिपुरवदान॥ आधी
रतीदेइजनकरैरोगकीहान॥५॥ चौपई॥ तोलेतीनअमलेसार
पीषभ्रांतिसांरवरलेडा॥ भनकलजैसीपीलापहला॥ ताकेर
ससेंमखरलनमहला॥ दसादिनखरलकीजियेप्रीता॥ ताकभाव
णदेंडरक्षीता॥ गोलीबांधलीजियेता॥ हि॥ अनमीसीमीलेपाका
हि॥ मधुलेमुरवकीहूजीलीजे॥ ऊपरलीमुरवतीलेदीजे॥ वांकामुरव
तलोकोमिलीता॥ कफपडेटीमारीसगसोजा॥ गजनमकुभूमिरवोदीयेत १८
बेहे॥ नारोवामेंटोवाजनबूहि॥ कोराकुजालामेंराषा॥ कुजेमेंसीसीधुरमाष
लागाइनकोकफपेवाकरकांनसांगसीनलदेबातीलाइकबदरीकेपान॥ कुष्टहरेचालीदिनघात

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Series III

॥ॐस्वस्तिश्रीगणेशायनमः अथप्रेमपचीसीलिष्यते।
दोहरा प्रथमसुमरिरघुवीरपदकुनयकुवीरमनाय।
दोनोएकस्वरूपकीकथाकहोंप्रगटाय १ निजनिज।
जानउपासनाकरहिवादसंवाद रामकृस्नकोभेदक
हितेनहीपावहिस्वाद २ काहूनेमांगीसिताकाहूमिस
रीनाम वस्तुएकपाईउभैतैसेगोविंदराम ३ अपने
अपनेसमयलैभयेअैअवतार सत्यकीयेविधकेब।
चनहरयोधरनकोभार ४ दोनोएकस्वरूपहैकीयेनिं
दवडदोष प्रेमसहितरसवरनीयेविनपापैमोष ५ अम
जिनकेसुद्धउपासनातिनकेभेदनआन निजनिज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्र० १ पत्नउवाइहैकेऊरामकेऊकाःन ६ चर्चाकीजैउनय
कीप्रेमसमेतवनाइ सोनिंदानहिमानीयेकहितुन।
दोषमिटाइ ७ चौपई दतनदेशनगरइकप्रेह राम
उपासीसभजगुरहे सुमतिरायराजातिहदेशा सभ।
गुणपूर्णसुंदरवेशा प्रेमभक्तितिहसुतकोनामा राम
सुभ उपासींगुणधामा धीरवीरसुंदरसभअंगा देषीयतहू
सरमनोअनंगा शीलवंतअतिचतुरउदारा सभजन
प्रीतमरहितविकारा तांकीउस्ततिसभजनगावे दे
शादिसंतरकोजोजावे ८ दो० अवरदेशकोभूपइक
रावततांकोनाम हरनेमातांकीसुताकृष्णउपासक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भाग ९ चौ० प्रेमभक्तिकी कीरतसूरी रावत्तिसुनउपजी

रुचभूरी पठेपरोहितकरीसगाई सुमतिरायकेवजी

वधाई दोनोंओरहरषभयोभारी दुहुदिशमंगलगाव

तनारी समोपाइलिखलग्नपठायो सुमतरायअति।

हीहरषायो चलीवरातसगुनभलपायो हयगजरथ

बहुभांतबनायो आगेचलेलहाअगवाना तवबाजे।

गहगहेनिशाना भलेमुहरतभयोविवाह करकुलरी

तरजसभकाह दंपतिगएसेजजहारची जिउहरक।

भलामघवाराची हुलहकसोप्रथमजैराम तवपा

टघोलबोलीवरभाग १० दो० अंतसमेकोसिमरवो

१० अवकतिसिमरेराम मंगलदायकसुनेकरनजप।
२ जुकुल्मकोनाम ११ पुरुषोवाच चौ० भलेकुल्मको।
आवतजाने मातपितामेघवंदीपाने आगतहीभेया।
मरवाए भलेकुल्मकेमंगलगाए हमरेरामप्रानतसु।
खकारी मातपिताकेसमभसुखधारी १२ स्त्रीयोवाच।
दो० भलेतुमारेरामहैपिताविरहसोमार रावनको।
जननीयकीरहेनवासरवार १३ पुरुषोवाच चौ० हम
रेरामपिताप्रणराख्यो माताउनमेजोकुछुभाख्यो निश्चे
होइवलेवनवासा भाईतीयासंगतेजनतास तुमरेकु
ल्मकंसमेलागे मातपितामयुरातजिभागे १४ स्त्रीवाच

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दो० वृंदावनमेजायकेकीनेकृस्नविलास रामतुमारे
सीयासंगवनवनफिरेउदास १५ पुरुषोवाच चौ० राम
हमारेसीयसंगलीनी धर्मशीलपतिव्रतावीनी एक
स्त्रीव्रतआपनिवाहे तुमरेकृस्नकहनहीव्याहे परती
याकृस्नरमीव्रजनारी तांकोसिमरोकौनविचारी १६
स्त्रीयोवाच दो० रामतुमारेजतनकीदईजनकतवसी
य एकस्त्रीव्रततौरहेपाईअवरनतीय १७ पुरुषो०चौ०
तुमरेकृस्नभलेव्रतधारी छलसोंरमीजलंधरनारी।
आपपाहकेपाहनभये अजहंतुलसीसंगरहे लाज। म
नआवततांकीगाथा एकस्त्रीव्रतश्रीरघुनाथा १८ ।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

द्रो० ३. स्त्रीयोवाच दो० वरमांगेपायदिगोपकाकरहतसंकट
धार सफलकरीतिहकामनारमीकुसमरजनार १९
पुरुषो० दो० रामहमारेवीररसकवहुंनदीनीपीठकु
सम्प्रगराबेरमेजरासिंधकीदीठ २० स्त्रीवचं चौ० रा
मतुमारेकीपुरुषाई तस्करज्यौंमारैकपिराई हमरे। ३
कुसमहोइनिहसंका प्रगटहसोहेकंसकलंका जरासिं
धकीलमीअवज्ञा पाछेमारयोरामप्रतिज्ञा २१ पुरुषो०
दो० भलीप्रतज्ञाकुसमकीराषीभारतमाहि भीषमको
मारनचलेरहीप्रतज्ञाकाहि २२ चौ० कह्योविभीष।
नकोरघुराऊ मैंतुहिकीयोलंककोराऊ सोअनुसफ

लछतस्ताकीनी लंका जीतनाहिकोदीनी सीसनवा
वनकोफलदीनो प्रगटलंककोराजाकीनो २३ दो०
वालसखोईविभ्रतेलंडुलषाएकाः न तवपाछेसंप।
तिदईकहाकरोगुनगान २४ स्त्रीवाच चौ० रहेउपा
सीसागरतीरा रामहिपंथनदीयोगंभीरा कृष्णधके
लसिंधकोदीयो रचीद्वारकाइहवलकीयो रामकृ
ष्णमैअंतरभारो तुमकतिवरनतहोकरिगाःरो २५
पुरुषो० दो० कृष्णउधारीकरलईभूपतिपुरीवनाइ।
सोपुनदेषतकृष्णकेसागरलईडुवाइ २६ चौ० राम
हमारेसेतुवनायो सोअजहनहीमिटेमिटायो योई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

द्रो० मारेरामहमारे सोईगोकबजाइसंघारे कानरजरा।
५ सिंधकिदेशा गराहुतेवामनकेभेशा करीजाचनाछ
लकेभाइ जरासिंधतवलीयोमराइ २७ दो० रामचं
दनहिरणाषकेरावणमारोफोड जरासिंधतेभाग।
केनामधरोरणछोड २८ स्त्रीवाच चौ० संषचडते
गोपीराषी कृस्नहमारेस्मजगसाषी सीयानराष
सकेरघुवीरा लछमनसंगहुतेरणधीरा तांसेकहा
कृस्नकहाराम तुमकाहेहठकरोनिकाम २९ पुरुषो०
दो० रावनतवसीताहरी मृगपाछेगएराम सुनहुसा
जैननेहरीघरहोतेवलस्याम ३० स्त्रीवाच चौ० षोड

समहस्त्रविस्त्राहीनार मानदानदेराषीप्यार रामनु
मारेरावकहीष्याही वालमीकवनपठयोताही तांतेजे
श्रीरामनगावे जेश्रीकृस्नकहेसुषपावे ३१ पुरुषो०
दो० राममक्तिसुग्रीवकीवालसोतीलीय ताहिमार
रघुबंशमणिकुनिताहीकोदीय ३२ कृस्नभक्तिअक्रू
रकेवरीहुतीसतभाम ताकोनगरनिकारकेआपल
ईघनस्याम ३३ चौ० तांतेकृस्नकृस्नकतिमाषे राम
चंदचरननचितराषे रामदूतकपिलंकाजारी अज
हंडेरेरावसीनारी कृस्नदूतपांडवनपठाए जेसेके
तेसेफिरआए ३४ स्त्रीवाच दो० कृस्नहमारेकोस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रे० खोअर्ज्जुनकहेसुजान रामचंद्रकोपरमप्रियवंधुजाव
५ सोहनूमान ३५ पुरुषो० चौ० अर्ज्जुनकोवडभैया।
भीम दशसहस्रहस्तीवलसीम कपकीहूछनस
कयोउवाइ व्याकुलहोइपर्यो पगुजाइ ऐसेहेहम
रेरघुवीरापाइकहनूमानसेश्रीरा३६ खीवाच दो०
रावणमार्योरामतवचहेंइंद्रकेजान कृस्नगुवर्धन।
धारकेतोडिउंइंद्रगुमान ३७ चौ० कृस्नगुवर्धनले
करधार्यो वरषाकरतपुरिंदरहार्यो ततषिनहो।
ननपाईमोर वहुरवाहधर्यो तिहवोर गोपनकरी
कृस्नसंगप्रीती सभकेसंगनिवाहीरीती स्वपनपार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

घुवरपाहिन्न्राई प्रीतिरीतिनिजबरनसुनाई नाककाननतिन्हकाटपठायो रामतिहारेसुजसबठायो ३८ चुकको० दो० रामसुधारीमुनिवधूसापगईमतिलोग कुबजाकृस्नसुधारेकीयोताहिसंगभोग ३९ चौ० रामहमाकेरेराजाभए कृस्नग्रहीरनकेघरगए नाचगाइतिन्हकरेविलासा कृस्नचरनतेन्मावेहासा ४० दो० पीयतीयतवरहेमष्टकरिगईनिशात्रेयाम रामकृस्नछविछकरहेउपज्योरिदैनकाम ४१ दो० तिन्हञ्रवसरयेतस्करभीतरपहुचोन्माइ दोनोबबरेजानकेभूषनचल्योचुराइ ४२ दो० करुनाकरिप्रभुभक्तिहिततततछिन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रेम० प्रगटेउआइ वहकहेमेरोकृस्नहेवहकहेरघुवरराइ ४३

८ चौ० दंपतिएकस्वरूपदिषायो दूलहिदुलहीकोसम।

झायो कृस्नरूपरघुनंदनदेष्यो रघुवरकृस्नहीरूप।

विशेष्यो धनुषवानकरतरकसधारियो मुरलीमोरचं

द्रकान्धारियो मणिमोतीगुंजाकीदाम मंदमंदमुसक

नअभिराम भालतिलककुंकमकीरेषा देषतदंपति

त्यागनिमेषा पीतवसनसुंदरतनस्याम घुंगरारीअ

लकेछविधाम केकनकिंकननूपरबाजे चलतदेष

मातंगजलाजे ४४ दो० दूलोदुलहनिप्रेमवसबो।

लसकेनहीवेन उंगेरोमलोचनसजलषायोअनु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तचैन ४५ दो० तवआएहरिपारषदलेकरिदिव्यबि
वान दिव्यदेह चढदंपतीकरेअपसरगान ४६ दो०
तातेहरिकोजोभजेताकीयहिगतिहोत हरिकोप्रेम।
प्रवानहैनहिकुलजातिनगोत ४७ दो० प्रेमपचीसी
नामयानदीकृत्तीहिमरास वरषामेघनप्रेमकोवरष
वढाईदास ४८ दो० सुनैसुनावैप्रीतकरिजोइहवर
तउदार सफलहोहमनकामनामनकेमिटैविकार।
४९ दोहरा रघुवरयदुवरदोउप्रभुयद्यपिएकस्वरूप
तद्यपिसाहवदासकोअवधिपुरीकोभूप ५० इतिश्री
मेघदासकृतप्रेमपचीसीसंपूर्णम्॥ श्रीरामजी॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

द्रौ० १ ॐश्रीगणेशायनमः।। श्रीसतगुरुयेनमः। दोहरा। अ
बआगेउपदेसकोसुणीयेजी धरचीत सबसंतनिको
भाषहे रामदासकरप्रीत १ दुरलभइहनरदेहहैबां
छतहैसबदेव इसदेहीमेपाईयेअवगतअलखअभे
व २ चौपई सुणीयेसाचहमारेभाई अबइहमानस
देहीपाई इसदेहीकोवांछेदेव जांतेपाईयेअलखअ
भेव कोटजतनकरिहाथनआवे साधुकृपातेइहुध
नुपावै वडेपुणपनरदेहीपाई यातेपरेदातनहीकाई
३ दोहरा कृपाभईश्रीकृस्नकी पाईइहनरदेह राम।
भजनकरिदेहमलनहीषेहकीषेह ४ चौपई अब

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यामैसिमरनिकरलीजै एकपलकभरविलमनकी
जै वहुरएहुऊसरनहीपाईये तांतेनिसदिनहरिहि।
रिगाईये सिरपरकालखडेनितहेरे एकपलकमे।
मारनिवेडे वचीयकालहुतेनहीभाई रामभजोस।
धूसरनाई ५ दो० रामभजनअरुसाधुसंगनिसदि
नकीजोमीत कोटजतनकरनावचेइहीवचनकीरी
त ६ चोपई साधुसरणजिनजनहेलीनी तिनकों
निहचलपदवीदीनी जन्ममरणदोऊकटिडारे भ
यसागरतेपारउतारे इहपदवीसंतनिहेलीनी मुकत
सरूपमोजकरिदीनी जोभपेप्रभुकेनिकटनिवासी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दो० ८

कोटीजन्ममरणकीफासी ७ दोहरा साधसंगकोसे
वकरसवतरेहैसंसार भवसागरकेवोहथेपारलंघा।
वनहार ८ चौ० जिनकेपापवहुतअतिभारे तेभव
सागरपारउतारे जिनकेभयदुखजगतनषोई साधु
संगकरउधरेसोई निसदिनकरतपापकीरीता साधु
संगतेभयेपुनीता चारवरणतेजाकोऊचडिआ भय
सागरतेपारउतरिआ ९ दो० जोचडिआसोतरगिआ
निरभैभयानिसंक ब्राह्मणखत्रीवैश्यसूद्र इकारराजा
क्यारंक १० चौ० ऊचनीचकाभेदनकोई सरणपडे।
सोमुकताहोई नारीपुरुषसबनिकोतारे कृपादिष्ट

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करिपारउतारे पापपुन्यकछुकारमनदेषा मेटदईम
स्तककीरेषा मुकतकीयेऐसेअपराधी नहजपतय
सेजमनहिसाधी ११ दो० ऊचनीचनारीपुरुषसरण
पडेजोआइ रामदासजपतपविपारदीयेपहुचाइ १२
चौपई साधुसंग[illegible]करनामधायो बिरथास्वासनएकं
गवायो पुनहि[illegible]मूलनपायो ऐसोसाधको
नाहीजायो ऐसासासरथामलषोवो रसनारामना
मनितबोवो इसदेहीकोफिरपछुतावो तवइहदेही
बहुडनपावो १३ दो० घरवाहरवैठतउचसिमरोह
रिहरिनीत दुरलभइहनरदेहहैयाकोकरोपुनीत १४
चरमक:

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दृ० ९

चौ० यादेहीकोपावनकीजे। रसनारामनामजपलीजे।
ऊठतबैठतरामध्यावे। मारगचलतहरिहरिगावे।
सोवतजागतसुपनेमाही। श्रीहमपलभरविसरेनाही
सासमासहरिकेगुनगावे। हरिगुनगाइपरमपदपावे।
रामनामसमअवऊसरनाही निसदिनजपलेरामसनेही।
१५ दो० संतनिकेउपदेसकोसमझोबिसवेबीस आठ
पहरचौसठघडीसदाजपोजगदीस १६ चौ० संतनि
कोपरमेश्वरजानो। संतरामराकोकरमानो। आदअंत
तइहएकसरूपा। संतरामरामसतरूपा। संतनिमहि
माश्रीमुखगाई संतनिगतिप्रभुहीनहीपाई जोसं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तनिकीसेवालागा याजगमेसोऊवडभागा संतनिकी
महिमाजिनजानी वडभागीसोजगमेज्ञानी धंनभाग
जिनसेवापाई ताकीउतपतिकहीनजाई संतसेवकी
इहवडिआई सलोकसरूपमुकतितिनपाई १९ दो०
संतनिकीमहिमावडीकितमुखवरनीजाइ वेदेंजाणे न
रामदासअवरकहाकोपाइ २५ अथद्रोपदीचरित्र॥
लिखते॥सोरठा॥इंद्रप्रस्थकेमाहिपांडुवजगपरचा
यो राजसजगकीनाहिन्रपसबदेशबुलायो १॥ दो०
सबराजाआयेतहांरजाकरतबनाइ चौरढुलावे।
न्रपकोश्रीपतिजादोराइ २२ दीनकोप्यालहरी क

द्रो० करुणाकृपालप्रभूसंतनिरक्षपालहरी टेक दोहराशि
२७ वभसाअरुकडुजमआयेवरुणधेनेश रिषीमुनीत।
पसीगुणीजुडुआयेसबदेस २२ नारपुरुषजोगीज
तीसबगोहतहाआइ दरसदेषजयजयकरैधनापु
धिष्टरराइ २३ दुर्योधनआयोतहासबभाईलेसंग।
पांडवसोभानिरषकेविसमभयोसबअंग २४ छंद।
सहिनासकोपरतापधामदेषनिउठिधायो जलथ
लाकसमानताहिमंदरकोआयो जलडूब्योवस्त्र
भिगहसीद्रोपदीनारि अंधजन्योहेअंधनमुधन।
कहसंभारि २५ जरवरभयोअंगारउठततवघर

कोअ्न्रायो नगनिकरेंउसनारिजीयमैमंत्रुउपायो सभा
माहिगाठीकरेंसबदेषतसनबंध गाठीरहिदिनसा
तलैातबीचंधकोग्रंथ २६ जबअ्न्रायोग्रहिमाहिवेठ
केबातविचारी दुष्टदुसासनिकरणशकुनेदुमना।
मिलिचारी दुष्टचोकडीमिलिलियोदुरयोधनके
पास हसनिपुरमेपगुधरोहमकोकरोसनाथ २७
दो० तुरतपठायोदूतइकचीरीदीनीहाथ केरवपा।
शिकिरपाकरोचलोहमारेसाथ २८ वहुतकरीहैवन
तीदासभावकीरीत द्रुपदसुतासंगल्याईयोहमको
करोपुनीत २९।छंद विलमनकीजोवीरदरसतुम

द्रौ॰ दिषावो। हमको टरसनि प्यास चरणधरतापमिटावो दु
११ पदासुता भाई सेव लै आवो ततकाल कृपा करो इसनग
रपर सब पुर होइ निहाल ३० हरषत होइ तब बीर रथ पांड
को पीडावे जो किछु विधना लिखी सो ताका कोन मिटावे
हस्तनिपुर मै आइ के राजा पेख्या सार धरहारी धन हास्यो
संग द्रोपदी नार ३१ दो० दुरयोधन ने कोप के कह्यो पांड
वनि नास पकड लिआवो द्रोपदी चीर उतारो तास ३२
जगपस मैं हम को हसी कस्यो अंध को अंध दुरसासनि।
भज्यो तब तुरत लिआवो बंध ३२ छंद दुरसासनि
चल्यो क्रोध होइ बात सुनाई चल्यो सभा मैं वेग दुरलरा
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यबुलाई दुरयोधनकोतं उसीवारंवार उचार नगानि।
करेगेसभामेसुनपंचालीनार ३८ दुहूवचनजबसुने
द्रोपदीअतडरपानी कछुनहीपारवसाइ प रमैम कुच भई
निमाणी हाथजोडविनतीकरीहाहाकृष्णधनी
इहपाडवनुवदामहैइनकोकवनबनी ३५ कलोदुष
तवधामद्रोपदीकोसमझाइ अवराजागयोसोइताह
मैंकहालजाइ भोरभयेतवलेचलोपाइगलेमेफास।
नगानिकेरैगेसभामेदुरयोधनकेपास ३६ दुपतीकी
योविचारबातहोतेपातिजाई दुहू दुर्योधनरायताहिसो
कछुनवसाई भीषमकीसरणीपडोघरनगहोचितला।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

द्रो० ३ उहुसबनाकेवडेहेमोकोंलहुवचाइ ३७ अतहीहो
१२ इउदासउकीभीषमपहिआई मैंतुमरीहोंदासमोरतुम
केरामहाई तुमसमनाकेवडेहोहमकोतुमरीआस ए
कवारतुमजाइकेकहोदुर्योधनपास ३८ दोहरा सास
हमारेलीजीयपेंडेकरपरहार पाछेकिनेनकरीहेतग
निसभामेनार ३९ तुमतोज्ञानसरूपहोमैंक्याकहोंसु।
नाइ अबकेलज्जाराषीयोहमरपरीसरनाइ ४० भीष।
मकहेसुनद्रोपतीकोनकहोतिहजाइ कहर्नांतुसलज्ज
लाइयेअगनिकडाहेपाइ ४१ कृस्नकृस्नकहुद्रोपती
जोंतेसभकिछुहोइ एकाटेकहिरदेधरोपाहुनलागे १५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोइ ८२ छंद तातेहोइअधीनद्रोपदीमहलपधारी ज
हांकेरैंकीनारतहांवेकीगंधारी जाइधरनपरगिरपड़ी
हाहाकरतपुकार मैंनुमरीकुलवधूहांइहम्अपराधन
कार ८३ दो० सबआयोरनवासजुडनेनीठलवेनी
र कोनतुमारीद्रोपदीहरिविनजाणेपीर ८४ सबमि
लिकहेसुनद्रोपतीधरोकृष्णकोध्यान अवरनकोई
जगतमेदूजाकृष्णसमान ८५ छंद तातेहोइनिरा।
सवेगद्रोणपहिआई इहलोवड़ीअनीतबेनतीसुनो।
गुसाई सासहमारेल्लीजीयेंसकलसरीर दुरयोधवेधी
नकोतुमकहोसतगुरसाचेवीर ८६ दो० सुनद्रोणा।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

द्रौ०
१३

वक्रतभयोऊभेलीनेस्वास कौराकहेसुराद्रोपदीदुर
योधनकेपास ४७ असअनीतबिनुकोनमेदुरयोध
नकोराज पहिलेवाकीमतहरेपाछेहोइअकाज ४८।
कुस्लकुस्मकहुद्रोपदीताहिविरदकीलाज हरनाक
सकोमारकेकरेभगतकेकाज ४९ भगतवछलवांको
विरदभगतनिकरतसहाय जहांभीडभगतनिपडेत
हिहीप्रगटेआय ५० छंद समत्तेभईनिरासउवीनिज।
घरकोआई कांपेकरोंपुकारकाहदुखकहोंसुनाई।
अबसहायममकोकरेसरननिपडोंकिसजाय हाथप
छोडेसिरधुनेवारवारपछुताय ५१ दो० दुष्टदुसास

निफिरकस्योऽग्रजहुंपांडु बनिंग्रास नगनिकरैंगेद्रोप
दीहुरुयोधनकेपास ५२ ग्रवतंदासीरावकीजोचाहे।
करवाय वेगवलोउठसभामैकोकिनकरैउपाय ५३।
छंद तांतेहोइग्रधीनद्रोपदीसभामेंग्राई देषसभाके
लोकरहेसबसीसनिवाई सभामध्यद्रुपदीगईलोकर
हेसरमाइ सबगटदेषततबैकछुनपारवसाइ ५४
दो० भीमकहेराजासुनोग्रबकछुकोनविचार नगनि
होइगीद्रोपदीधृगुजीवनसंसार ५५ राजाकहिसुनभी
मजीएकुहर्वलोलेष भीडपडीहेद्रोपदीहमकोविपति
विशेष ५६ भीमकहेराजासुनोमोपेसहीनजाइ कहो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

द्रो० नाकैरोदलमलोंद्रोपदीलेउंझुडाइ ५७ राजाकहितु
१८ नभीमजीइहतोकछूनहोइ जोछूननिकेवचनेहूफे
रनसाकेकोइ ५८ छंद तवदुरयोधनकह्योबीर।
अबबेगउतारो नगनिकरोइसनारिबीरतुमबिलम।
नकारो तुमकोसंकाकोनकीइहसबहमरेदास जोको
ईबोलेतुमहितलोंकडाहीनास ५९ गह्योदुसासननि।
चीरकोथकरवचनउचारे कोतेरारछूपालनाहितले
ऊहकारे रह्योतेरीकोकरेमदेबोतिसजाय तीनलोक
रापेकबनिकह्योदुयोधनराय ६० अतहीहोइअबी
नद्रोपदीपाडवउरनिहारी अर्जुनभीमसहदेवनकु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लधायेवल्लकारी हायहायकरवचकसोगहीसिं
हनेगाइ नगनिकरतहेतु ६० इह मुजकोलेहुवचा
इ ६१ सुनपांडवइहवचनकोपमनमेंअतकीना
सबलयेसंभाररकलोचनकरलीना राजाआपा
नाकरेतासोकछुनवसाइ हाथपछोडेसिरधुनेवा
रवारपछुताइ ६२ भभकउठोतबभीमहायलेग
दासंभारी मारदुयोधनरायबहुरदुसासनिमारी
भीषमद्रोणमारकेकरोंकरणकानास सभास।
कलपरलेकरोंतबीकसकोदास ६३ हतोंदु
योधनसीसएककसाइककरडारों दुसासनिको।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

द्रो० करणाहस्योसुखमोडकेमनकापापीखोट दीना।
१६ नाथदयालबिनुअवरनकोईओट ७० द्रोप।
दीधरयोध्यानतबीमनआतुरहोई तुमबिन।
श्रीनंदलाल इहामेरानहीकोई रखतहोउ
लसिंधमेसरणद्वारकानाथ त्राहित्राहिसुख
लीजीयेअवमेभईअनाथ ७१ हायहायजदु
नाथहायगोवरधनधारी हायहायवलबी
रहायश्रीकुंजविहारी हायहायराधेरमण।
हाश्रीकृस्नमुरारि हायहायरक्षाकरहुश्रीव्रज
राजदुलारि ७२ सरणासरणसुखधामसरण।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दुखभंजनस्वामी सरणसरणारक्षपालसरणग्रं
तरजामी सरणपरीमैंहारकेसरणागतिप्रतिपाल
लज्जाराषोदासकीदीनानाथदयाल ७३ भीडपडी
प्रहलादरूपनरसिंहवणायो गजनेंकरीपुकारपाइ
प्यादाउठिधायो दुरवासाहिंग्रंबरीकहितनिजजन
करीसहाय कोनग्रवगणदासकीविलमकरीजदु
राय ७४ जुगजगुभगतउपाययेजउनकीतुमराषी
सवहीकहतपुरानवेदस्मिृतिमुनिसाषी मैंतोदा
सीचरणकीजानतसबसंसार विरदग्रापणाजाण
केलज्जाराषुमुरार ७५ ग्रंतरजामीस्यामबेरिइत

द्रो० नीकोंलाई कोंपहि करों पुकार ताहि तुम देहुवताई
९७ तुम माता तुम पिता तुम बांधव सुहृद सुवीर तुम बिन
मेरा कोन नहीं काहि सुनाऊं पीर ७६ नगर द्वारि का मा
हि सारपेलत गिरधारी जानी श्रीवल्लवीरदीनहोइ
दास पुकारी नैन रहे जल पूरके पां साडार अनंत प
चहारी सेना सकल चीर न आयो अंत ७७ उतरे चीर
अनंत रंग रंग रंग सारी अंवरके अंवार सकल सेना
पचहारी भये अतोल तहे र जों उतरे चीर अपार कुरु
नैन योधन विसमै भया कौंतक निहार ७८ जाकी राषे कृ
स्न ताहि पति को न गवावे गहे सिंह की ओट स्याल

तेकाडरपावे नगानिनाहोवेद्रोपतीरछ्याकरीमुरारि।
पुसपदेववरस्याकोरजयजयशबदउचार ७५ जोजोद
षजाइविसमसोईहोइजावे उतरे पार अनेकभार।
कौतकवरसावे रंगारंगअसंबरंगअंबरलगेअंबा
र चारवरणउपूतेकरैधंनसतवंतीनार ७७ सुनी।
अवराजबबातद्रोपतीसुधमेआई दिदावेममभरप्र
रनैनजलसेरहेछाई दरसपिआसीमीनजोंधरयो
कृस्नकोध्यान एकपलककेअंतरेआगाहेभगवा
न ७१ होo आनंदभयेअपारतबपेषेजादवरायता
सुखकोजानेसोईमानोनोनिधपाय ७२ कंठप्रेम

द्रो० करिसकरस्योवचनौनिकसेकोइ अंतरजामीसांवरे।
१८ सबविधजाणीसोइ ८४ छंद जहाडुयोधनरायरहा
आयेगिरधारी उठेसभाकेलोकलाजउपजीतिनभा
री ऊचेनेननकरसकेआगयोदुष्टसभाइ सिंहरूप
श्रीकृस्नजीतषतविराजेआइ ८५ कौतककीयोमु
रारबुद्धिताकीविसमाई भीषमद्रोणकरणसब
निसोंकह्योसुनाई न्याउनीतराजातजेघोरनरक
वहुजाय इहअनीतमतकोंकरीसोअवकहोसु
नाय ८८ रहेमोनधरसभीबचनमुखसेनहीआवे
सिंहनिरषजोंस्यालवालवावहुरनपावे कह्यो।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सवनिसोंद्रोपदीकरोधर्मकोन्याय पहिलेराजा
हारिस्राबयामुजजसरदाय ८५ दूयमेधनको
हारिबहुरिसबघरनीहारी तीजेदाउलगाइ।
वीरहारेबहुतारी चौथेस्रापहारिस्रापाछेबहु
डलगाय तबहीतुमकोहारिस्रासबहीकहीसु
नाय ८६ तबीद्रोपतीबहेससस्रतुमरीसाषी
यामेभेदनकोइवाततुमनीकीभाषीन्याउहै।
मारातुमकरोस्राजदुपतिकेपास तुमहारेपं
डोछुटैमेंहारोमेंदास ८७ दुरुयोधनकहिरा
यबाततेरीहममानी हमजीतेतुमपकडक

द्रौ० रीअपनेमनमानी तुमजीतेतेतुमछुटेपांड
११९ वकरीबिलास सत्यबचनहमनेकहेस्त्रीहूस
केपास ८८ द्रोपदीकह्योतुनायआपराजाज
बहारे मोपरकेसादाउदासउह्नभयातुहारा
पहिलेमोकोंहारतेराजातुमरेपास पाछे
आपहरावतेतवमेहोतीदास ८९ सबही
कहीपुकाररायतुमकरीअनीत जगत
सभामेनारिकोंनइहप्रभुतकीरीत राजाआ
पहरायकेतुमरामभयोगुलाम इसपरदा।
वाकितुनहीकरियनऐसोकाम ९० तुरी
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करीतुमरायखेदइसकोअतदीना कछुनही।
आयोहाथबांधसिरअपजसलीना नरनारी।
निंद्याकरहिंघरघरहोइधिधकार कोपभयेश्री
कृस्नजीसबजगकेआधार ६१ भइआविसम।
तवराउबोलमुखसेनहीआवे ऐसोसोचमैंदू
बध्याउनाकोईपावे छोडदईतबद्रोपदीपांडु
वकरेपलास दूरदईमुखदुषकेराषिविरद
कीलाज ६२ दोहरा गुणगावतद्रोपतिचली।
मनआनंदवढाइ भगतलाजराषीहरीहारे
केरोराइ ६३ मुहपदेववरषाकरीजयजयश

द्रो० वदकराय रछ्याकीनीदासकीसुखनिधजादव
२० राय ९४ उठेसभातेकृस्नजीमनमैकोपवढाइ
केरैंसबपरलोकरैंजुद्धउपायवनाइ ९५ बी।
जनासइनकाकरौंइनहिंदुखायेसंत भगतव
छलविरदजाणकेदिढोविचारअनंत ९६।
छंद इहीवातपरगटभईजलथलजगमाही।
कोपुभयेश्रीकृस्नकेरवनिछाडतनाही तीनलो
कपरगटभईसुनोइंद्रजमईस धंन्यविरदश्री।
कृस्नकासभीनिवाबेसीस ९७ दोहरा रुकमनी
चनारीस्वरूपसरनिपडेगोपाल तोकीविप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ताकाटहैद्रोपतीजेपेंनेदल्लाल ९८ सरणकुसमकी
त्याग। केकरहिग्रानकीग्रास सत्यबचनजीयमेध
रीतिनकानरकनिवास ९९ कछुग्रपणीकछुडोर
कीउकतधरीइसमाहि ग्रन्तरघटबधछेदकेसुद्द
सुरतिकछुनाहि १०० जोकछुलिविग्रामूलकरि
ग्रापनिवुद्दसमान सोधलीजीयेप्यालजीपडीयो
वुद्दसुजान १०१ ग्रेसेध्यायोद्रोपदीरहीसभामेलाज
लाज केरोसबसंहारकेदीयाभगतकोराज १०२।
ग्रादग्रंतराषतविरदसंतनिसदासहाय रामदास।
कोराषलेहुहारपरसोसरनाइ १०३ कवित नहीहै

द्रौ० विचित्रबातनंदलालस्यामगातसदादिनरातनि।
२१ जजनकेसहायका आपनेभगतकाजतनधारे।
महाराजकीनेहैअनेककाजसदाजसलायका।
करैहैअपारपारपुरुषाकलीवनारिलेतसबहू
कीसाररराधाजोकीनायका। सरनिपरेहजेईउध
रैजगततेईएकनाहिकईतजेनेहूतातमायका।
१०८ इतिश्रीद्रौपदीचरित्ररामदासकृतसंपूर्ण।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दोहरा॥ धातु जात ते निबल तन ताको कहों उपाइ॥ दूध सा थनु
के की करपला सकुमल्ली पाइ॥ गांठी बिना लसूडी आंगे रव पानु
मिलाइ॥ सिंमल जड की छाल ले गलमूसली याइ॥ मले मूल की
छाल ले पाउ पाउ सब डार॥ ओते ता मै दाइ नोंका मधु जरो बर धार॥३॥
तोला पाए दूध में दो साते परमान॥ हयर सद सनी गदा भष्ट बिरधबि
नासु खदान॥४॥ चौपई॥ सेरु पके केले का लेतू ता॥ तो घी से भरे त्रिफला २
ठेर॥ दो घी से भरु लेन व सादर॥ पाउ पक्का सिर का ले सादर॥ पाउ पक्का
ले मीठा तेल॥ लोह पात्र में सभ ही मेल॥ [illegible] बैं [illegible] घरै
पा[illegible] का कच्च कलजो कारै॥ ढाल कं एक सी सेपावै॥ रोम सो घनी पल
त मिटावै॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२२ अथ पारा मारनं ॥ दोहरा ॥ लेइ रस पथ्याम सोधिके दस गुन गंधक नीकुं ॥
घोट कुमार कर बीच दे कूजे धर गोहि दस सिर बीच ॥ १ ॥ नाल सोधी
यैर सम अध सिर तोला याम ॥ अंब वेल म स समान दिन कुकम गद अगठा
ना ॥ २ ॥ संघीया सोधे मघ दुध स्वरस सलिल एकड ॥ पाचाली दिनरा बोम
रै पाव लो दे दुग्ध धारा ॥ ३ ॥ अोमल त्रै मे सोधिके पैसा लेवे भस्म ॥ अरोक बनरी प.
बीज दल सम नार जामन पू धारा ॥ ४ ॥ अपुठ वे वे अाग पुनः च्चारो कूरी से रुप
कूजे धर अव सीत होइ सत्री दे वे फेर भपा ॥ सोधि पुलाद सिताई ये कूजे दे
वो पा ॥ ५ ॥ दोधे की कर फल स्वरस धूप धरे भस्म रजाइ ॥ ६ ॥ पारा की वटी ॥
दोहरा ॥ चुले धव हू घात वा अध सिकस घा पीसा ॥ अध अाधपा युग या इधर
पाउ फटकडी रीस ॥ १ ॥ ना पे थोथ्या पीस धर दे नो ते ले भरु जाना ॥ दोयां पामा तोलु दर
धारे दुहु मे माना ॥ २ ॥ दो तोले थोया बहुर दुहु या ऊपर पाइ ॥ फेर फटकडी लेन ॥ १६
फिर पहस म आगा तरयाइ ॥ ३ ॥ गोली मघ रंग सो करो उडे नहीइ कयाम ॥ सई फेर
मे एक को करो मा वे सिव किगठान ॥ ४ ॥

अग्र निबुद कमा नु फिरलेते अन्न बिजुलीभासिमीतललरू॥१॥
उपजैतप मिरू प बरलेते॥१ चौपई॥ एकुसीतहीतपतलरू॥५॥
अथ घनुषवाइकोउपाइ॥ घनुरखवाइजानरकोहोइ॥
ताकेलहुएसुनीयेजोइ॥ पीडमिलेदरसानमिटटगीवा॥
नीरलेहेनहिनुएकलगीवा॥ देषियमिरचचेबाइका
लीयां॥ मोठपुराएंजोंमसादलीया॥ हिंगुरखुलाइकटुक
नलागे॥ कछ्वीवडीउडदजिमचाबे॥ तौजानहुनिहचेइह
रोग॥ घीउपिलाइकराइअरोग॥ हिंगुमिरचभीनालच
बावे॥ घ्रितुपिलाइरुचिबिनाअघावे॥ पीतपीतउलटी
होइजाइ॥ मिरचहिंगुकोडीनहिभाइ॥ जेकरिउलटीघृति
नहिजाइ॥ रत्नीचारजेमालुपिलाइ॥ हुरदहोइकरिग्रीव
कुटाइ॥ जबलगिमिरचहिंगुकटुनाही॥ तबलगिरोगुना
हिकेमाही॥ अथघानीलायोयादेइ॥ पाणीसोंनत्नादुरवहेय

केहीं
पिबुप
डानरह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२३ तपत बोवको सीतल होइ ॥ पांच मगन तन सीयरी सुरलेइ ॥
औरकै लाइ रची नीलेस को ॥ जो लेहै सो सिके सबै सिर को ॥
धाडी बाजरे से कर पाइ ॥ सोठ कण कवादेइ षवाइ ॥ दोउहु
लाभै दैन बही सुख पाइ ॥ दोहरा ॥ जब लगि हिंगु मिरच दो कौडी नाहि
तब लगि भरती इनौं की घीउ सौं सौं एतन जाइ ॥ काल रूपु इह
रोगु है तौ षषको कून लागा ॥ पवन गण करि देइ इह काल ब
दन ते जागा ॥ [illegible] ॥ पाथ ॥ [illegible]
ਪਠਰ ਖਰੈ [illegible] ਪਾਵਾ ॥ ਮਧੁ ਮਿਲ [illegible] ਠਪਰ ਪਾਵਾ ॥
[illegible] ॥ ਸਿਰ ਦੇ [illegible]
[illegible] ॥ ਪਾਰ ਤੇ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ੩ ॥

ਬੁਰੀਨਕਾਢਿਕਰਣੀਤੈਤੇਲੇਪਸੋਰਕੂਛਾਮੀਤੇਲੇ੨੦ਸੁਕੇਦੇਦੈਧੋ
ਟਕੋ।ਅਭ੍ਰਕਤੇਲੇਪਪੜੇਹੇਠਭੂਪਕਰਛੀਦਬੂੰਅਭ੍ਰਗੋਮੀ
ਗਏਆਕਾਸੂਦੇਰਸਿ।ਜੰਗਾਸੀਤੇਰੋਇਲੀਏ।ਧੀਸਕਰਾਧੀਰ
ਸੈਪਾਇਸ਼ਕਿਤੀਏਲਾਤਪਟਵੇਲੂਜਾਤੇਤਪਨੂੰਜਾਨਕੁਣਭਾਸਰ
ਸੀਤਪਨੇਕਿਵੀਛਾਚੀਗਿਲਿਸਤਕਲਾਛਧੀਦਛੇਅਧਤੁਲ
ਸੀਸਾਲਾਗਿਰੂਏਗਾਂਕਤੀਅਨੂੰਪਾਸੇਤੀਰਿਤੀਏਲਂਸਾਮਲੂ
ਹੇਸੁਪਾਸਾ।ਅਗਨਿਵੂਛਬੁਰੀਧੋਟਨੁਗਟਾਕਰਤੁਪਾਸ਼ੀਰੁਦੇ
ਇ।ਬੁਰੀਏਤੇਲੇ।ਸਿਪੁਕੇਂਕਾਪੜੇਟਕਰਨੂੰਕਾਏਆਪਾਏਲੀ
ਦਸੇਸਗਏਦੁੰਗੋਹੇ।ਏਆਦਿਆਧਾਸਟੰਗਾਸੀਤਕਣਦਿਪਜਿ
ਧਰੇਤਾਂਬੂਕਾਪੇਸਾ॥੧॥ਦਾਲਚਿਕਣਾਂਆਸੇਦ੍ਹਬੋਤਰਪਧੇਸਾ
ਗਾਧਛੀ।ਹੇਲਉ।ਰਤਾਂਸੇਕੇਦੇਏਇਸੀਆਚਲੀਮੀਸੁਕਪਛੇਰੀ ਗ
ਕਰਸਕਾਏਗਾਲਪੁਠਏਣੀ।ਗਜਭੂਪਟਕੇਏਗੁਸੇਆਪਾਪੁਕੇ
ਦਿਕਸੇਪੁਟਪਕਆਗਾਦੇਇ।ਜੰਗਾਸੀਤੇਰੋਇਕਣਦਿਕੇਮੀਸਕਲਾ।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ਕਰਿਤ ਭਗਤੀ ਬਿਪਾਤੇ ਲਾਭੁ ਕੁਸਕਿਤਾਂ ਲਾ ॥ ਕਿਸ ਸ੍ਰੋਸਾਨਸਾ
ਅਬਆ ਸੋਸਟਕਢੀ ॥ ਸਤੇ ਅਠਕਦਗਾਪਖੁਕਬਕਰੋ ॥ ਨਸਾੜੀ
ਰ ਗੋਛੀਕਲਆਕਪਾਤੁ ਸੋਧਲਾ ॥ ਗਾਦਕਰੀ ਸੀਮਟੇ ਸੋਲਾਪੜੈ ਟੀਕਗ
ਸੂਲਾਂ ਟੋਆਕਕਾਧਸਮੋਸੌ ਨੇਕੀਆ ਕਭੁ ਜਾਂ ਟੋ ਇਪੂਕਤੇ ਠਕੋਮਕੀ
ਅਸ ਪ੍ਰਿੰਗੁ ਲਾ ਬਿਪਾ ਤੇਕਾ ਸਿੰਗਾਕਿਠੁ ਦਮਜਪਾਤੇ ਕਕੋਸੂਗਾ ॥
ਅਪਣਤੇ ਲਾਂ ਨੋਕੀ ਪਥਾਂ ਦਠੀ ॥ ਕੋਸਕਠੂਪ ਦਿਠ ਖਗਲੁਕਸਟੇ ਪੜੀ
ਟਿਕੀ ਕਗਕਪੋੜੀ ਟੀ ਕਸਜਕਾ ਇਕਲਆਸਗਟੇ ਸੀ ਗੋਸੈ ਦੀਜਸੋਕੀ
ਅਘਾਸੰਗਸੀਤ੍ਰ ਤੋਇਇ ਨਿਕਣ ਸੇਧ ਸਕੇ ਬ੍ਰਿਕ੍ਰਪਾਇ ਇਅਨੂ ਪਸੋ
ਅਬਤ੍ਰਿਪਾਂ ਤ ਪਾ ਤੋਂ ਬਾਪਤ੍ਰੇ ਟੁਕ ਕੇਕਰ ਤੋ ਲਭੁਗ੍ਰਾ ਅਪਾ ਤੋ ਲਾਂਪਕ
ਟੇਤੋ ਛੇਕਲੀ ਟਾਪੜ੍ਹਾ ਗੋਛਕਕਬਾ ਪੜੈ ਟੀਕਕਾਜਨੁ ਪਠਆਗਾ ॥
ਸੁਗੋਸਾ ਧੀਸਕੇ ਤੋਂ ਤੀ ਖੋਧਤੁ ਪਆ ਰਿਕਾਅਨੂ ਪਾਕਸੋਟੀ ਸੋਕੀ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

[illegible]

दो॥ पैमा पक्का सो धोये
न खादर रखै टे पाइ॥ हाथी कुंडी कंरका रि निगंध खावरी साइ॥२८
शाद शावा रखु फाई थे मग नी भा हित पाहु॥ सहदे वी सपुर ध
रेमन पुठ दे कुजरता इ॥२७॥ सांगा सीत है हो वे मवी सेवन वरए
ले का ट॥ के कुटा चूरम पानसों रवी खा मनो भा ८॥ ३॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ਅਗਕੰਲਪਸਿਖਤੋ

ਮਾਜੂਪੈਸੇਚਾਗ ਗੇਤਉ ਚਤੁਨਪੈਸੈ

ਸੀਗਾਮਕਤੋਲੇਰ ਕਿਸਾਦੂਤੋਲਾ ੧ ਮਗੀਨੂਸੀਸਨੇ ਅਠ
ਰੋਗਾਹੀਮ ਲਾਏਪੰਠੋਲੇ

ਹੋਗ। ਭਲਾਣੂੰ। ਸਿਕਾ। ਪਾਊਪਰੋ ਸੁਤੀਨਾਇਸਮੋਪਛ੍ਰ੧੪

ਸੰਗਠਾਸੰਰਤੋਲਾ ੧ ਪਾਗੋਤੋਲਾ ੧

ਜੰਗ ਠਗਨਾ ਪੋਸੇ ਦੂ ਕਿਸਾਦੂ ੧

ਸੰਖਪੇਸਾ ੧ ਨੀਲਾਥੋਥਾ ੧

ਕਾਹੀਜੰਗਦਤੋਲਾ ੧ ਤੇਲਾ ਲਦੂਨੇਡੇਏਆਪਕੋ

ਤੂਮੇਂ ਨਾਲੀ ਰਿਨਟਵਾਲਿਰੋ ਸੇਪੋਤ੍ਰਕੀ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ਇਕ ਦੋ ਜੋਦੇ ਨੀ ਮਪੜ੍ਹੀ ਜਿਹ ਰਸੀ ਰਾਪੀ ਆਇਓ। ਬਾਲਕੇ ਕੈ
ਕਿਆ ਮਨੀ [illegible] ਧਾਏਓ ॥੧॥ ਇਕ ਬ੍ਰਹਮੰਡ ਬਰਪੇ
ਸੁਪੀਕਰ ਤਤ ਨਸ ਪਰ ਗਵਾ। ਆਪ ਤਿਲੋ ਜੀ ਅਕਰ ਤ੍ਰਿਭਪੀ
ਏ ਪੀਏ ਅਪਾ ਸਿਵਦੁ ॥੨॥ ਸੁਮੇ ਜਨਬੀ ਦਿਕ [illegible] ਰਾਮੀ
ਯੁ ਪਾਜਾ। [illegible] ॥੩॥ ੫
[illegible] ਬਰਕ
ਮੁਏ ਦੀ [illegible] ਹਿ ਤੀ ਜਤਾ ਪਦਿ
ਜਾਣਾ ॥੪॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ਪੀਰੀ [illegible]
[illegible] ॥੬॥ [illegible]
[illegible] ॥੭
[illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दै

ओं

दो हा ॥ [illegible] नं गा कु पा न व स ष व लो पा म द पा ड़ ॥ दो
नैमि पा उ र स्व या म एक स व ल्का ड़ ॥ गो ली का र संग्रह
दे हो का या की [illegible] ॥ हो इ निद्र मां म न र हे [illegible] पा न [illegible] र व
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible] न भु ॥ [illegible] का मा री के स र्गा मि ल्लो ह ला का फि र
सेता हो वें व र ए सि है ने व ड़ो ब दी मे ल्या या ॥ ओ स्या दो ह य न
[illegible] पी या इ ट मि र ज़ु का [illegible] डि ओ मा हे रि ता ल हि ह त का क
[illegible] कर ट का र [illegible] री र ॥ ५ ॥ पिन्न पा प डे ग रू म र स गो ली पा र द
[illegible] [illegible] का [illegible] सं स मो जो इ ॥ ५ ॥

मिस्चं काली यां मासे २ मिसवां चिटी यां मासे ७
कुरासानी नवा उण मासे ७ अकार करा सा [illegible] चार मासे
कैसु रस तोले २ फरफारं ऊ ने नसा ठे चार मासे [illegible] मासे
अफीम मासे ९ दरचीनी व [illegible] वुराक [illegible] एं वा गोली
होरू वे तोले अं [illegible] हरडां तोले वे वडी हरड दी छिलु
ड ६ तोला आंवले दी छिलु ड ८ तोला बहेडे दी छिलु
ड [illegible] तोला कवी यां दे फुल [illegible] सकमूनी यां तोले २ तोला [illegible]
१ तोला कतीरा [illegible] ६ तोले [illegible] ६ तोले धनीयां
६ तोले विवी वंसलोचन तोला १ [illegible] ती उनाव [illegible]
[illegible] तोले वि [illegible] रोगनं [illegible] भुजके [illegible] तोला [illegible]
[illegible] के [illegible] दोनों ओषद लिषे हैं रामराम १२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वे दिन

दोहरा॥ ८ कृकृ दीउं उर्वी लै दौंड़ बान तिंद पातनी॥ खेवेन ला
लतिंह फल लहै हिंं मुख धेनु रव लै मंना॥ ८३ कृ जगरी यात्मे धु
वली पीत पुष्प किंहं जाननि॥ सो फुमार पेकल लल लोग न हांगे
धवृंहि मानना॥ २॥ दो॥ क्रक वृल री किहत ते केतनाथ ने लसेपा
ना॥ फोड़ को भीसुम आहि वांधे लैसानना॥ ३॥ कु बड़ी इटसि
ट कहै सिर डा कहैं बसानना॥ कि मुख पग भीकहत हैं बड
वाहि सुख दनना॥ ४॥ कु विसा बानाम हैं श्री बर बैल कही
सियामलकावी कोमन मदूस बाद स्नादहूं स्ना दि॥ पानको
वेरीसु आमा है नागा कहें रख काढ़॥ जाव दी पि को है
हलबके को सुखदाय॥ १॥ ना जाना सामासा मून वालि
कलेजगल को भूमा॥ तीनस ठ श्रौ कदसतीया कुं नाना जुगाकि
मा॥ जामहारि कनके मर भरहिं तादिं न ते मिन सुहाइ तनाली

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Series IV

ॐ श्रीगणेशायनमः॥अथभक्तमालटीकासहित
लिख्यते॥टीकाकरताकोमंगलाचरणआग्यानिरूप
णं॥कबित्त॥महाप्रभुकृष्णचैतन्यमनहरनजूके
चरननिकोध्यानमेरेनाममुखगाईयै॥ताहीसमै
नाभाजूनेआग्यादईलईधारटीकाबिसतार
भक्तमालकोसुनाईयै॥कीजियेकबित्तबंधछं
दअतिप्यारोलागैजगजामाहिकहिबानीबि
रमाईयै॥जानोंनिजमतिऐपैसुन्योंभागवतसु
कद्रुमनिप्रवेशाकीयोऐसेहीकहाईयै॥१॥टीका
कोनामस्वरूप॥कबित्त॥रचिकबिताईसुखदाई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri Vaidika Bharata Initiative

मू० टी०
१

लागेनिपरसुहाईऔसचाईपुनरुक्तलैमिटाई
है॥अद्भुतमधुरताईअनुप्रासजमकाईअतिछबि
छाईमोदझरीसीलगाईहै॥काव्यकीबडाई
निजमुखनभलाईहोतनाभाजूकहाईतातें
प्रौढिकेसुनाईहै॥ह्वदेसरसाईजोपैसुनीयैस
दाईहरुभक्तरसबोधनीसोनामटीकागाईहै
२॥भगतिस्वरूपश्रृंगारबरननं॥कबित्त॥श्रद्धाही
फुलेलऔउबटनोश्रवनकथामैलुअभिमा
नअंगअंगानछुडाईयै॥मननसुनीरअन्हवाइ
अंगोछादयानिवतिसुबसनमनमोधोलैन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गाइयै॥ आभरननाम हरि साधुसेवा करन फूल मानसी सु नेंच संग अंग जनबनाई यौ॥ भक्तिमहारानी को सिंगार चारु बीरी चारु रहे जो निहारलहै लाल प्यारी गाइ यौ॥३॥ भक्तपंचरसबरनन॥ कबितु॥ शांतिदाससख्यवात्सल्य औ सिंगार चारु पंचौरस सार बिसतारनी के गाये हैं॥ टीका को चमतकार जानोंगे विचारमन इनके सरूप में अनूप लेदिखाये हैं॥ जिनके न अश्रुपात पुलकन गात कबूं तिनहूं को भाव सिंधबोरे सो छकाये हैं॥ जो लौ रहे दूर रहे बेमुख ता पूर हीये होइ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चूर चूर नेकु म्लवन लगारा हे ॥४॥ कवित्त ॥
पंचरससोई पंचरंग फूलगुंथनी केसी
केपहिराइबेको रचकेबनाई हे ॥ बेज
यंतीदाम भाववती अलिना भानाम
लैआई अभराम रूपाम मति ललचाई
हे ॥ धारी उरप्यारी कुंजकुंज रतननि
ग्रारी अहो देषीगति न्यारी हरि पाइ
नकोआई हे ॥ भगतकबि भार तांते
निसतसंगार होत होत बसलब जोई
याते जानपाई हे ॥५॥ सतसंगप्रभाव ॥

भगति तरूपो घातहिबडोडरछेरीहुंके
बार देषैचारवारिसीच्योसतसंगसों ॥ ल
ग्योहिवढनगोद्राचढ्रोदिसकहिसाषाच
डतग्रकासजसपैल्यौवढूरंगसो ॥ सं
उरग्रालिबालिरोभितबिंलछीयाजे
जेजीवजालतापगराचौप्रसंगसो ॥
देषोष्मढवारजाहिग्रजाऊकीशंका
ऊतीनाहिपेडबांधेजूलेहाथीजीतेजं
गसों ॥ ६ ॥ श्रीनाभाजूकोबरननं ॥ जां
कोजोसरूपमोग्रनूपलैबिषाइदीवो

३ कीचोथोकवित्तपटमिहींमधत्लातल
है॥गुनपैअपारसाधुकहैआंकचारही
मैअरपविसतारकबिराजटकसालहै॥
भि मूनीसंतसभाजूंरहीअलिश्रेनीमानो
हूंमरहीकहैइदुकहाघीरसालहै॥सुनेहैअगर
अबजानेमैंअगरसहीचोवामयेनाभासोसुगंधम
कमालहै॥गामकमालसरूप॥कबितुअबडेमकि
माननिसदिनगुनगानकरैंहरैंजगपापजापही
योंपरसरहै॥जानसुखमानहरिसंतसनमानसबै
बचेहूंजगमरीतप्रीतजानीमूरहै॥तऊदुराराध
कोऊकैसेकैअराधसकैसमझ्योनजातमनकंप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भयो चूर है ॥ सो भत तिलक भाल माल उर राजै श्री
पै बिना भक्तमाल भक्त रूप अति दूर है ॥१॥ मूल मं
गलाचरन ॥ दोहरा ॥ भगति भगति
भगवंत गुरु चतुर नाम बपु ए
क ईन के पग बंदन कीए नास
ह्वि बिघन अनेक ॥ कवित ॥१
अथ टीका बिशेस लछन ॥ ई
भगत सुहाए एक टेक फिरकर
तेन टरी है ॥ भगति रस रूप को स

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

७

रूपय है छवि सार चारु हरि नामते
तश्रसुवरुरा है ॥ वही भगवंत प्रीत
कोविचार करे घरें दूरई सताहि पं
डवनि सांकरी है ॥ गुरु गुरुताई की
स चाई लै दिषाई जों हुआई प्रापे
हारी जुकी रीत रंग भरी है ॥ ९ ॥ श्र
थ मंगल चरन ॥ दोहरा ॥ मंगल श्र
द विचारि कें आव सतुन और रूप अनुप
हरिजन को गुनवरनते हरि जन मं
गलरूप ॥ १ ॥ सम संतन निरनेकीये

७.

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रुत पुराण इतहास भजवेकों दोऊ सु
घर है हरि के दास ॥११॥ अथ देव आज्ञा
दई भगतन कों ज सुगाई ॥ भव सारे के
मरन कों नाहन डो रुउ पाई ॥६॥ अथ
आग्या निरूपन कवित ॥ मान सौ सरू
प मैं लगे हैं अग्रदास जू वे करत विच्या
रना भाम हु संभार सों ॥ चल्यो हो तोज
हाज पै जो सिष एक आपदा मैं करो
घ्यांन षि वो मन हु रेपा रूप सार सें
कहत समर घरा याबो हत व हु तदर

ग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आवेछ विफुरफुरहुरेपाप्याही हारसें
लोचन उघार कै निहारक रही बोल्यो कों
नवहीजो ई ॥ पाल्यो सीत देकै सुकुमा
रसें ॥ १ ॥ अचरज दयो नयो ई हालै
प्रवेस भयो मन सुख कयो जान्यो संतन
प्रभाव को ॥ आज्ञा तब दई यहे भई तो
वैसा कृपा उनही को रूप गुन कहो ही ए
भाव को ॥ बोल्यो कर जोर यां को पावत
न ओर ठोर गाऊं राम कृस्न नहीं पाऊं
भगत दाव को ॥ कही समुझाई बेई हृदे
आई कहै सब जिन नै दिषाई दई सागर

५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मैं नाव षो ॥ ११ ॥ नाम्रा जू की आद अवघ्य
हनूं मा नवं सही मे जन्म प्रसिद्ध जांके
भयो द्रिग हीन सो रवी नवा तब्यारी
ये ॥ उमर बरष पांच मांन के अकाल
आंच माता बन छोड़ गई सो ही बिपता
बिचारीए ॥ कीतिडो अगगॅर नारी ॥
ग हुरॅ दर सदी योली डेयो अनाथ जा
निपु छी सो उ चारी ए ॥ बड़े सिंह उ
ल लै क मंड ल सों सी चैन यन चैन म
यो छुते चषि जोरी कीा निहारी ए ॥ १२ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पाईपरश्रीसुश्रीएकुपाकरिसंगति
श्रीएकीलिश्रीअपापाईमंत्रअगरसु
नायोहै॥गलतेप्रगटसाधुसेबा
सोकिराजमानजानुश्राःनमानि
ताहीरहितलगायोहै॥चरनप्रप
चसीनसंतसोअनंतप्रीतजानीर
सरीततांतेहूदेंरगुकायोहै॥यदु
वहुबारतांकेपावैकौंनपारावारजै
सोभगतिरूपसोअनुपगिरागायो
६ है॥१३॥मूलछपाजयजयमीन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बराहकमठनरहरिवलवावनपर
सुरामरघुबीरकृश्नुकीरतजगपा
वन।बोधकलकीव्यासरघुहरि
हंसमन्वतर॥जगपरि धमहयग्री
वध्रुवबरदेनधंवंतर।बद्रीपति
दतकपिलदेवसनकादिकंकरु
णाकारे॥चौबीससंरूपलीलारू
चिरश्रीग्रगुदासउरपदधरे॥प
टीकाकबित॥जितेअवतारसुखसा
गरनपारेवारकरेबिसतारलीला

जीवन उधार को॥ जाही रूप मांज म
न लागे जां को पा गे ना जा गे ही ए भाव
म ही पावे कौन पार को॥ सब ही है
नित्य ध्यान करत प्रकास चित जै
सें रंक पावे बित जोइ जाने सार को
केस नि कुटिलता ई ऊधे सेमी न सुब
ख्रगर सोई रीत माई बसो उरतार को
१७॥ मूल छंद कृपे॥ चरनै सेम
लीन कुटिलता केस नि की भ्रु मरु
पा ति से मस्त स्रपाव नी हरि च्छवनार

अनूप॥२॥ नचिहनरघुवीरकेसं
तनसदासहाईका॥ अंकुसअंब
रकुलिसकमलजववधुजाचिन्
संरवंचक्रसस्तकजंबुफलकल
सस॥धोअरध्वचंद्रव्रकोनमी
नविंदऊरधरेषा॥अष्टकोनइंद्र
धनुपुरषविसेषा॥सितापतिपद
नितवसततेमंगलदायका॥
चरनचिहनरघुवीरकेसंतनस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

८ दासहूयका ॥ ६ टीका ॥ संतनसहा
यकाजधारे नृपराजा रामचरनसरो
जनमैं थिकै सुखदाईये मनहीमतंग
मतवारो हाथ आवै नाहिं तांके लिये अं
कुस लैवारो हियधाईये ऐसे ही
कुलिस पापपर्वत के फोरवेकों मकिनि
धजोरबेकों कंज मन ल्याईये सठता
संतावे सीत ताते धारो अंबर सु हरेज
न सोक ध्यान कीनैं सुधदाईये जवहू
८ कोहेतु सुनोसदा दातासदा मोघ विचा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रु को सुमति सु संपति निवास है ॥ छिन ॥
छिन ॥ सभीति होत कलि की कुचालि देखि
छु जासो विशेष जनु ग्रमै को निवास है
गोपद सो हैहै भवसागर सु नत नाम जो
पैने नहिये के बैं लगावे मिटै त्रास है ॥
कपट कुचाल माया जाल सबै जीतवे को
घरयो दरदर स किये जावे ग्रना ग्रास है
कामहु निसाचर के मारबे को चक्र धरयो
मंगल कल्याण हेतु स्वस्ति कहु मानिये
मंगली क जंबु फल फल वारिहु को मन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

९

कामनाअनेकपूरेजौपैनित्यध्यानियै
फलसठौसुधारदभर्‍योरुरिभक्तिरस
नैंनपुटपांनकीजैजीजैसुनध्यानियै॥मे
क्रिकोबछावेडौछुटावैतीनतापनको
अर्धचंद्रधारनमैंकौरनहूजानियेइ
विषयाभुजंगवलमाकतन[illegible]माहिवसै
दासकोनडसैंतांतेजतनअनुसर्‍योहै॥
अहकोंनतीनकोंनजंत्रकियेजियेजोइ
जानिजानिजांकेध्यानडरभावभर्‍योहै
मीनविंदुरामचंद्रकीनोवसीकरनोपा
यतासीतेनिकायजनमनजानहस्यो

२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

है सागर संसार को ऊपारापार पावैनं।
ऊधीरे ब्रदासनि को सेतबंध्व करयो है॥०
ध्वनु पद ध्वरयो हृदयो सो कध्यां तिन को
मातिनि को मारयो मानु रावण दिसा र
षिये पुरुष विशेष पद कमल बसायो
राम रैतु अभिराम सुनो स्याम अभिल
षियै सुखे मन सुखे बैन सुषी करतु
ति सब श्रेसौ जन सोयमेरे॥सोरठा॥
हुतो पुरातन दास असुर जो न रावण प
रयो ता हि मान हरियो ना स पुनष्यापयो भगव

तद्युरम ॥यारुतीकी जैपुरा विषै॥ जैपि कुछ बंतर
सर्वतरूप सं पत्ति मैं करि लै विचार के सो
निस दिन था विषै॥५॥ जेती जन मादि कि
या विरुद्ध करतु ति हु रि परि कु पकार हेतु
जानों जीयला य कै॥ जोई एक ब्रह्म सदा
एकरस ब्रह्म है अजन्म की निरबान तां हि य
रैयात न आय कै॥ का हू हु को हेतु करि का
हू हु को घात करि का हि हु को देय वर दर
देऊ धारि ये॥ करुणा के सिंधु बिनु कार
ण कृपाल देव श्री से प्रभु छाडि कति औरु ड
र धारि ये॥ २५ मुलक्क पै॥ बिद्यो नारद संक १८

क

रसनकादिकपिलदेवमनुभूप॥नरहरि
दाससजनकभीष्मबलीशुकमुनिचरमस
रुप॥अंतरंगअनुचरहरिजुकेजोइन
कोजसुगावै आदअंतलैमंगलतिनकौ
आतावकतापावै अजामेलपरसंगयाहि
लिखेपरमेश्वरकोज्ञान इनकीकृपा
अउरपुनिसमुझे द्वादसभगतिप्रधान
॥१टीका॥द्वादसप्रसिद्धभगतिराजकथ
भागवतअतिसुखदाईनानाविधिकरि
गाईहै शिवजुकीवातएकबहुधानजा

नेकोऊसुनिरससानेहीथांभावडरआ
एहैं सीताकेवियोगरामबिकलबिपू
तदेखिसंकरनिपुनसतीबचनसुनाएहै
केसेएप्रबीनहैंसकौंतकनहीदेखामने
हीकरतश्रृंगबेसईबनाएहै ॥१६॥ सी
ताहीसारूपबेसलेसहुंनफेरफारराम
जुनाहारनेकमनमेनआईहै तबफिर
आईकेसुनाईदईसंकरकोआसिदुखपा
ईबहुबिधिसमुझाईहै ईहकोसरूप
धरयोतांतेतननपरहरयोपरयोबडोसो।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वमत अति भरमाई है ।। ऐसे प्रभु भाव
पगे यो यिन मैं जग मजेल गे भो को पि आरे
यह बात री झगाई है ।। १७ ।। च ले जात मेग
उ मै घेरशि व दी ठ परे करे परनाम ही ए
भगति लागी पि आरी है ।। पारवती पुछी
की ए कौन को जु क है भो सौ दी सब न ज न
को ऊ सब सो ऊ चारी है ।। बर घ ह जार
द सब बा ति त सौं भग ति भ ये न यो औ रु हु
ई है ह जा ठ कर बा ते धारी है ।। सुन के
प्रभाव हरिदासन सो भाव बढ्यार घे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२

कैसे जातच ढैपारं गअ तिमारी है। मुल
षी अजामेली को टिका॥ चस्यो मित मात ना
म अजामिलसां च भयो भयो अजामेल
कु रीती या प्रभु भजात की॥ की येमद पान
सो सि आनगहि दुरडा रयो गारयोत नवा ही
सो जु की नेलि के पात की कर पर हा सका
हुं दुष्ट ने अजामेल हुं कौ नु अचार की यो
मिस चा सर मानसु राप न का पडा ए सा
चु आए पु हिरे वि बु च आई गई संत की
सेवा कारसावधान संत नरी झाई ली

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

योनारायणनामधर्योयारमबालबा
तकौ॥१९॥आईगयोकालमोहजाल
मैंलपटरह्योमहाबिकरालजमदूतद
दिखाईयैबहीसुतनारायणनामजाक
पाकैरनारायणआवतुपुनहेतकहीदी
नसुनिपर्हिणहरिपारषदपासमेर
करिलीनदीयोलीयोसोप्रकारसुख्या
रतसुनाईयै॥सुनतहीपारषदआए
वालीडेरदौरतातोरडारेयोपासकहो
बरमसमझाईयै॥हारेकहाजपजाप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१३

ब्यवकियो सकृतोघ्वनजीवनिकोदनक्रा
तुलसी श्रवपर्वतकोटिजरेहक्रिरी
नामकृता साविकोकनिकालैविडारे
जाइपासिपैपुकारेकहीसुनोचतमा
रेमनिजावोहरिगाइयैा२मुलहपै
कोचितब्रूतनिनतहारहेोजतांनाराय
एपदपारषदा॥विघकसेनजयविजय
प्रवलवलमंगलकारी॥नंदसुनंदनसु
भद्रभद्रजगआमयहारी॥चंडप्रचं
डविनीतकुमदकुमदाषिकपालयसी

१२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लिसु सुसालि सु सेन भाव भागत न प्रतिपा
लयत्म छकमीपति प्रीन नप्र वीन मजना
नंद मग ति/निव द्यमो चित वृत/नतत हं
र होजहां नारायण पद पारषद ॥ टीका
पारषद मुख्य कहै सो रह सब भाव शि
हि सेवादि कीरि ध्यही एराधी बहु जो
रके ॥ श्रीपति नारायण के प्रीतम प्र
वीन महा ध्यान करे जन पाले भाव वि
गकोर कै सनकादि दियो श्रापप्रेर
के दिवा यो श्राप प्रकट है कै कश्यापी औ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२

सुधा जिम घोर कै ॥ गहि पति कुलता ई
औपै यह मन माहि यां तेरी तहि दगा ई
धरी रंग बोरकी ॥ २ मूल ॥ हरि वभ
सभ प्रारथ्यां जिन चरन रे ए आसा करी
कमला गरुड सुनंदन सवरी खगपती
ध्रुव उधव अंब्रीख विदुर अक्रुर सुदा
मा ॥ चंद्रहास चित्रकेत याहगज पांडव ना
मा ॥ कोपारव कुंती बध्यू पट औं चतलाजा
धरी हरि वल्लभ सब प्रारथ्यां जिन चर
ण रे ए आसा करी ॥ २१ ॥ टीका ॥ हरि

१४

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

केजेबल्लभ्रहै तुलसी भ्रमर भुवन मों ऊतिन
हीकीपदरेन आसा जीयकीरी है।जोगी
जनीतपसो मेरोकछुकाजनाहि प्रीतपरत
तरीत मेरी मतिहरी है।।कमभाग रुड
जामवंत सुग्रीवादि सबै स्वादरूपवा
चापोषनमे चरी है।।प्रभुसों सखा
जगकी रत चलाई ऐसि मेरे मन भ्रासा
दाई रस भरी है।।२२।टीका हनुमानजू
की।।रतनग्रपारदीप मागर ३ द्वारको
एलीए हीबाईकेम नाई मालाकरी

२५

है॥समासु रवसाज रघुनाथ महाराजु जु को
भगत सो बिभीषन जु आन मे दघारी है॥समा
नीकी थाह अवगाह हनु मान गरे डारदई सु
लसी थाँ अंबर बरी है रामबिनको मकौ
नफोरमनदी नेडार पोलेस चानामहरीदिवा
योबुधसरी है॥२३ टीका श्री बिभीषन जु की
भगतिबिभीषन की कहे श्रे सो कौ न जम श्र
पैक हैकही जात सुनो चित लाय के॥ चाल
त जहाज परी अटक बिचार क[illegible] ह्यां के के
अंगहीन नर दीजै लैबहाई के जाई लग्यो टा
पु ताराघसन गोद लीजे मोद भरराजापा
सगए कित्लकाई के॥ देषत[illegible] सिंहासनते कु

१५

दपरेनयनभरेयाहीकेअकाररामदेवेभाग
पाईकै॥२४॥रूचकैसिंहासनपैलैबैठाएताही
छिनराघसनरीऊदेतमानीस्नुभवरीहै॥ज्ञा
हतमुरवारबिंदअतिहीआनंदरहेना
यननीरटेकठाठेहोछरीहै॥तऊनाप्रसंनहोत
छिनछिनछीनजोत,हेजीताकेपालकह्योमे
रीमतडरीहै॥करोमोहसिंधुपारमैंमूरेयही
सुखसारदीयेरतनअपारल्याएवाहीठौरठ
फिरीहै॥२५॥रामनामलिखसीसमध्योब्रवर
दीयोयाकेयहीजलपारकरैभावसावोपायो
हैताहीठौरबैठोमानोनयोओररूपमयोग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

११

योजोजहांजसोहै फिरकरिल्यायो है॥ लीओ
पल्लवानपुछेपासवूसोछ्षानकीयोहीओंल
लसायोमुनि बिनैकरिचढायोहै। परयोनी
रकुरनेकैपोंईनपरस्सकरयोदूरपामनदेषर
घुनाथनामभायोहै॥२६॥ टिका श्रीसबरी॥
जुकी॥कवित॥बनमैरहतनामसबरीकु
हतसबवहतटहिलसाधुननुनताईहै
रजनीकेसेसरिवआस्रमप्रवेसकरिलक
रीनबोझधेरआवेमनमाईहै। झाईवेको
मगमारकांकरीनबीनडारबेगउठजाई

नेकजातनलघाईहै॥३ठतसवारकहैंकौं
नथोबुहारगयोमयोतीएसोचकोऊबडो
सुखदाईहै॥२१॥बडेईश्रसंगवेमतैंररसरं ग
गभरेघरेदेषवोऊकह्योकौंनचोरश्र
योहै करेनितचोरीश्रुहोगहोबाह
एकदिनापाएश्रीतवांकीमनभरमा
योहै बैठेनिसचौंकीदेत सिषस
मेसाबधानश्राईगईगहि लईकापे
तननायोहै देषतहीरिबजलद्या
रावलीनेननतेबैनसोंकह्योनजान

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१८

कहोकहुपायोहै ॥२८॥दीठहुनसैाेहीहोतमा
नतगोतकोनपरीजाईसोचसोतुकैनिकार
याःभगतिकीप्रभुतापरिखजानतनिपर
नीकेकेईकोटबिप्रताईयापैवारडारी
है दीअबासस्याम्रमभैम्रवननमैना
कहीअकीयोसुनरोससमैकीनीपांत
न्यारीये सबरीकोकहोत्तुमरामदरस
नकरेमैंतोपरलोकचल्योध्यानप्रभुपा
येहै २९ गुरकेबियोगहीएदाहनलेसो
जदीअजीयोनहीजातभैपैरामप्यासला
गीहै ॥नाईबेकोघाटनिसजाततीबुहारे

१८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

समै भयो जो अवार रिषदेव षिया जागी है ।। कु
योगयोग्निः भेकव हुषीऊत अनेक भांत कर
के बिबेक गयो नानयह भागी है ।। जलसे
रु घर भयो नाना क्रिम भरगयो नयो पायो
मोचत ऊ जाने ना अभागी है ।। तिश्या बेव
न बेर लागी राम की औसेर फल चाष घूररा
ष फेर मीठे ऊनी जोग है ।। मारग मैं वहैं जा
इलौ वन विकाइ कबथा बैंर षराई द्रिग
पावैं निज भोग है ।। ऐसे ही वहुत दिन बीते म
ग जो वत ही आई गए औं वकरी मेटे समे सोग
है ।। ऐपे तन नुनताई आइ सुध छिपी जाई पुहै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१८ आपसवरीकहां ठाढी औरलोगहै ॥३१॥पु
छपूछआएप्रभुतहांसवरीकोआश्रमजहां
कहांवहभागवतीदेखोंद्रिगप्यासेहैं।आई
गईआश्रममैजानकेपधारेआपदर
सीतेसभागकीरीववभासेहै॥रबकउ
ठाईलईबिथातनहूरगईनईनीरझरीनैय
नपरेप्रेमपासेहै बैठेसुषपाईफलषाइकेस
राहेबेईकह्योकहांकरूंमेरेमगदुखनासेहै
३२॥करतहैसोचसमबैठेरिषआश्रममैज
लकोबिगारसोसुधारकैसेकीजीयै॥दोह
रा। अतिहीबढावतिआपतेजनमहिमारघु

१८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कीरसवरीपदजलपरसतेसुषभयोसरीता
नार।आवतसुन्योहृबनपथरघुनाथकह्या
वैजवकहेयाकोभेदकहिदीजीये॥इतनेहीमें
ऊसुनीसवरीकेराजेआनगयोअमीमान
चतोपगगहिलीजीये आएघुनेसाईकही
नीरकोउपाइकहोगहोपगभीलनीकेकुए
स्वछभोजीये॥२३॥टीकाश्रीखगपतजटाउ
जुकी॥जानकीहरनकीउरावनमुरनका
जसुनीसीताबानीपगराजेउज्यो आयोहै
बडीएलराइलीनीदेहवारफेरदीनीरा
षप्रानराममुखदेषबोसुहायोहै॥आए

१९

आपगोदसीसधाईद्रिगधारसींवरईसु
चलईगतितनहुजरायोहै॥दसरथवन
मानकीउजलदानयूंरुअंतसमेंनमान
निजरूपधामपायोहै॥३४॥टीकाश्रीअंब
रीकजुकी॥अंबरीकभगतकीजोरीसको
ऊकरेअरुवडोमतमोरीकोहुजानतनहीभ
ीय॥दुरवासारिषसुनीहीकाहुसाध
सौधुमानअपराधुसिरजटाषैचेना।
दीये॥लईउपजाईकालकसाविकालरु
पभुपमहाधीररहोठाढोअभेलादीये॥
चक्रदुसेंषमानलैकसानतेजराषकरीप

१९

री भीरखब्राह्मण को भागवति साषी ये ॥३५॥
भो जे यादसो दिसा सभ लोक लोक पाल पास
गयान यो तेज चक्र चुरन कीए डारे है ॥ब्रह्म
शिव कहीयहु गही तुम टेव ब्री दासनको
भेव नही जान्यें बेद द्यारे है ॥ पहु चे वैकुंठ
जाई कह्यो दुख अकुलाई हाई हाई राषो प्र
भु परे रातनु जारे है ॥ भैतो हों अधीन तीन
न कोन मानु मेरे भगत सब तस लग भस ब
हीको टारे है ॥३६॥ मो को अतिप्यारे सा
धउन को अगाध मत करे अपराध तु मस
ह्यो कैसे जात है धाम धन बाम सुप्रान

तनसुगकरेहुरेमेरीउरनिसमोरमोसीं
वातहै।।मेरे हुंनसंत बिनऔरफक्कसाचुोक
होंजावोवाहोठौरजांतमिटेउतपातहै।।
बडेदिस्रातसाचदीनप्रतिपालकरेनुन
लानधरेंकाहुभगतगातगातहै।।३१।।
हाईकेनिरासारिष आयोन्रपपासवाग
रवसेंाउदासपगगहेदीनभाषेहै।राजाला
जमानमृदुकहिसनमानकीयाढस्योचक्र
उरकरजोरअभिलाषेहै।।भगतनिहका
मकछुकामनानाचाहतहैचाहतहोंविप्र
दुरकरोदुखचाषेहै।।देषकेविकलता १५

इसदासंतसुषदाई आई मन मांऊसबैते
जढांकराषहै॥२८॥एकन्रपसुतासुनओं
वरीकमगतिभावभयौ भावऐसोवबू
रकरलीजीयेपितासांनिसंकह्वैकेक
हीपतिकीयामैतोबिनेमेरीमानवेग॥
चीठीलिषदीजीयेकहौतुमजाईरानीवै
हीसतआईमोकोकेल्योन्रसुताईप्रभुसे
वामांऊमीजीये॥२९॥कह्यौन्रपसुतासोजु
कीजीयेजतनकौंनवाताजिमगयोआयोका
मुनहीबाआको॥फेरकेपाहयोसुषपायो
मैतोजानयहबडोघरमग्नवांकेलोमन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२

हीतीयाको ॥ बोली अकुलाई मन्नु भगतही
रीअयली योकीयो पांत मुष न हीं देषो औ
रपीयाको ॥ जायके मिसंक यह बात लु
मकहो मेरी जौन करोती याती पैले वो पा
पजीयाको ॥ ६ ॥ करी विप्र जाइ सुन चाह मे
हराय गयो दीउ लिषडगु यांसों केरे ली जीये
भयो जो विवाह उतसाह कहुं मातनाह आई पु
रअंवरीष देष ढव मी ॥ कह्यो नै वन मंदर मै जार
के वसे रो देवो देवो सभ भोग विभो नाना सुख की
जीये ॥ पुरव जन्म को ऊ मेरे भगति गंध रहती ता
ते सन वंध पायो यहे मान वीजीये ॥ ६१ ॥ रज

२१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नीकेसेसपतिभुवनमैप्रबेसकीयाँयोलीऊप्रे
मसाथद्विगमंदरकैथ्याईये वात्तरलीटद्विल
पात्रचौंकाकररीऊरह्रीगत्तीकौंनेजाईजामैंहोत
नालघाईये आवतहीराजादेपलगेनानिमे
षकह्योकोंनचोरआयोमेरीसेवालैचुराईये
देषीदिनतिनफिरचिन्हकेप्रवीनकहीऐसो
प्र मनजैपेंभूमायिपधराईये॥७२॥लईवातमा
नमानोमंत्रलैसुनायोकानहोतहीबिहानसे,
वानीकोपधराईहै॥करतसंगारफिरआ
पहीनिहाररहेलैंरहेनहींपारद्रिगऊरीसील
जाईहै॥भईबढवाररागभोगसोअपारयो

२२

वभगति बिसतारहीतपुरसबछाईहै नृपहूं
सुनतभवलागी चौंपदेषवेकी आईतानकाल
मनभूलतअकुलाईहै ।।६३।। हरें हरें पाऊध
रे पौरी आनमनेकरेषरेअरवरेकवदेषोमाग
मरीकों गए चलमंदरमैसुंदन सुघअंगर
गमरीं जरहीढिगलाईरहे करीकों ।।बीनले
वजावेगावेलालमिरीझवेसोत्यों आसिमनभो
वेकैंसेचंचनायहबरीकों ।।हारैपैरत्योनजाई
गघोलल चाईढिगभईउठठाढीदेषराजागु
रहरीको ।।६६।। वैसेहीबजावोवीनतानननबी
नलैकेजीनेसुरकांनपरेजातमतषोईदे ।।जै

२२

॥रंग भीज रही कही सोन जात मो पै औ पैम
न नेत चैन कै सेक रिगाई ये।करि के अलापचा
री फेर के संग भारी तान आय गयो ध्यान रू
प ताही मांझ मोइ ये॥ प्रात र सरू पप भरात स
ब बीत गई नई कछु रीत अहो जा मै न ही सो ई
ये॥ ७५॥ बात सुनी रानी और राजा गाये न ई है
र मई सिर मौर अब कौन वा की सर है।सम
झ लैसे वाक रै पति मति बस करै धूरे नित प्र
ध्यान बिबेकु घरा घा घर है॥ सुन के प्रसंन्य
भयो अत श्रावरी कई सलागी चौं पफे लग इ म
गति घर कर है।बढै दिन दिन चाव ऐसो ई प्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१२३

भावकोरूपलटेसु भावहोतआनंदकोमरहै
॥७५॥टीकाषाबिदुरजूकी॥ब्हातही बिदुर
नारीअंगनिपषारिकरिआयगएंडारसुस
बोलिसुनायोहै॥सुनतहीखबरसुधिडारी
लैनिदरमानौराखोमदमरिदैरिआनिके
षितायोहै॥डारदयापीतपटकटिलपटाय
लीडोहीयासकुचायोबेसबेगहीबनायोहै
बैहीहिगआयकेराकीलछिलकाषवायआ
योपतिषीग्योदुषकोरिगुनोपायोहै॥७६॥प्रे
मकोबिचारआपलगेफलसादैनपायोतिये
चैननारिबडीदुखदाईहै॥बोलेरीजूस्याम

२३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तुमकीनोबाःडोकाकेंमत्रैपैस्वादुअभिराम
वैसीवस्तुमेनपाईहै।।तीयासकुचापकरिका
टिडारोंहाय स एपारेकोपवापहीलछिलका
नभाईहै।।हितकीवातदोऊपारकोऊपावैना
हिनीकेकैलडावैसोईजानयहगाईहै।।६९।
टीकाघ्रीसुदामा जूकी।।बडोनिसकामसे
र चूंनहुंनधामढिग आईनिजबामप्रीतिरू
रिसांजनाईहै।।सुनीसोचपर्योहियाघरोंत्र
रवसेमनगाढोलेकेकस्योवोल्योहाजुसर
साईहै।।जावोएकवारिवहबदननिहारिआ
वोजोपैकरूपावोल्यावोमोकासुघदाईहै

२६

कहीभलीबातसालोकमेकलंकहै है जानीय
तयही लियेकीनीमित्रताई है ॥ ६८ ॥ तिया
सुनीकहैहूहमरूप कौंनवहै जा यदहै दष
पहीसोबचनसुनायेहै। आईस् धिप
रेकीबिचारेमतटारेससमधारेमपगरुमवा
रावतिआयेहै रेषिकेविमुतसुघडपज्योत्र
मुतकोऊवल्योमरूपमाधुरीकेलोचनतिसा
येहै॥उरपतिहियेज्योंटीलषिमनगाढीकी
योलियोकरिगहिचातततहांपरहुचाहै॥६९
देख्योस्यामग्रयोमित्रचित्रवतरहैनैकुहितको
चरिवदौरशेयगरेलागेहै॥मानौएकतनम

२४

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चोलयो ओ सेलाई छातीन यो यरू प्रेम कछु टैना ।हिं
गपागे हैं ।। आई दबराई सु दिधि मिल निछु टाई ता
नें ध्या में ज तमरानीपग धोय भागजागे है ।सेज
प छराय युत्त चर चा चलाय सुषसागर बुडा
प अत अनुरागे हैं ।।प० ।। चिर बाछ पायका प पुछ
कसाल्या ये भो को अ तिस कु चाये मु मित कै हग भ
जै है ।धें चिलइ गांठि मुठी एक मुख मां झ दई
दुसरी हुं लेत स्वाद पाय आपरीझे हैं ।।गद्यो कर रा
नी सुषसानी प्यारी वस्तु यरू पावो वां है मानो ।।
श्री सुदामा प्रेम घी जे है ।।स्पाम जु विचारू दीनी
संपति अपार बिदा भे ये पै न जानी सार विछु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रनहीजेहैं॥५॥आयेनिजग्रामबहुमेयोअ
भिरामनयोबारकासादेविपुलममतिगतिग
ईहैं॥तियारंगभीनीसंगसगसतनिसहित
लीलीनीकीनीमनुहारियोंप्रतीतिउरमई
हैवहहरिध्यानरूपमाधुरीकोपानतासों
रोपेनिजप्रानजाकेप्रीतरीतिनईहै॥भोगकी
नचाहमेसेतननिरबाहकरैडरेसोइचाल
सुघजालरसमईहै॥५॥टीकाश्रीचंद्रहास
जुकी॥हुतोनृपएकताकेसुतचंद्रहासभयो
परीजोविपतिधाईल्याईओरपुरहै॥राजाको
दिवानताकेरहीघरआनबालआपनेसंगपेले

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रसदुरहै भयो ब्रह्मभोजकोऊ ऐसोइ संयो
जवनेपा आयेवैकुमारजहा/विप्रनकोसुरहैं।।बो
ॐ श्रीगणेशाय नमः।। दिज बोलेसुनी
ये भगवान।। रुकमन पठायोवडीस
जान।।सीलवंतअरुमहाउदार।।ताके
वडाप्रभुसिंघारि यदुपतीयालीअ व
न रुषा मथुरनकरो त्री केकाम।। प्रेम
जीपतीकिपालीनीहथ।।जोग भोग
पतित्रि भवननाथ।। रुकमनजीबो
लीआप आदि पुरष त्रेबनासीनृप
संदरश्रीपप्रेमरस भरी।। चितसिंदे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सिं जी श्री नरहरी ॥ द्विज को बोले श्री भ
२६ गवान ॥ तुम हि पउपउ करु बिषान ॥ पती
श्राप्र भब ह्यन को दई ॥ प्रीत सहत
द्विज पतीग्या लेई ॥ पउश्रा द्विज करत
बिषान ॥ सुनो हि प्रीत पुरब पुरान ॥ है
सुंदर है दीन दयाल ॥ है अचुत है श्री
गुपाल ॥ है अबनासी श्री भगवा
न ॥ तुम्र सुंबचे हम रे प्रान ॥ तुम रे गु
न सरवन हम परे ति नो हमा रे तन म
तुमारी ग्रत दीन पधीन ॥ कृपासिंध
जी करणा करो हमरे तन मन का दुष हरो
मुझ को राषो चरनी संग ॥ है मम पुरन
सदा अभंग ॥ कवन कीट है तो तुम भगवान

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हमरी तुमरी कहा समान॥ दास तो पत
नी तो नाहि॥ पतित नीचा तै फिर दे माहि॥
कृपा करो तेजदेव राया॥ चरन कमल
सिंल तै मिल्या॥ माई देवत है ससपा
ला॥ तो तुमारी तो दीनदयाल॥ जो
मुझ कीना कोई दान॥ कुपबाप
तीरथ इसनान॥ जप तपु संजमसे
वा धमु जनम जनम कीने सत करम॥
स मे समरपि तौ मोहन प्रीतम प्रवर
नाबाछी मेरे चीता॥ दिषरावो प्र
भ पंकज चरन॥ मुझ दासी को रा
षो सरन॥ मति निरलज पवनो मै
है॥ बिनती प्रवरु सुनाउ तो गतुम रे ज
ग सुनल जागई सुनगुन कहो प्रतदा
सी भई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२९

लजा घी माया ग्रगिआन॥ आग गई सु
न गुन भगवान॥ ग्रुण तुम रेन जाषो
ई॥ सुनगुण होग्रत दासी होई॥ तीजे
दिन आवत ससपाल॥ होजानत होमेरा
ाल॥ हे तुमारी होलीजे आवा॥ सपे
ते राजा देऊ भगाये॥ सिंघ की बल ले
ति सिंगाल॥ ग्रेसे सुनो प्रभु कृपाल॥
जोन ति आवेगे भगवान॥ तौं तुम
उग्रतिपा गोप्राण॥ त्याग प्राण तुम
ति पेहि जाउ॥ सदा जपु गी तुमरा
नां॥ बोलते जन्मक ठन तपु करु॥ त
मरे पगन्हरदे मैधारु॥ बिनती सुनो
प्रभु जदो कौर॥ तुमबिन मेरी प्रव
रुना ठोर॥ जो तुम कऊ बिन होरो कौआ
त॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सखियालैकोदीनीभ्रांत॥बिनती
आवरसुनीयोभगवान॥कमलाब
लभकृपानिधान॥हमरेकुलमें
ऐसीरीतसोसुनीयेत्रयमहा
त्रजीत॥बाहरिदेवीपुजनजाउ
कुलकीरीतनमुजमनमाहि॥गिपु
जुनुमरेहिचरन॥तोकेबलयेकेहरि
सरन॥जावोगदिवीकेथान॥जहें
लेजावोमुझेभगवान॥आवोबेग
नालवोबार॥निपटदीनमुजक
रीपुकार॥त्राहित्राहिप्रभपंकजच
रन॥त्राहित्राहिअसरनसरन॥त्रा
हित्राहिपुरनभगवान॥कमलनेनप्रय
कृपानिधान॥त्राहित्राहिप्रभत्रादिनंदनंद॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२८

समसुषदायकसमदुषभंजन॥
दीनबंदुभगवंतगुंसानता॥दपुछिडो
रोधारनिसंत॥रुकमनकीपतीग्या
भगवान॥सुनीसमप्रभेपुरबपुरान॥
सुनपतीग्याप्रभयेकृपाल॥सम
दुषमोचनदीनदयाल॥यहलील
कोईसुनेसुनावैप्रेममभगतमाधव
कीपावे॥कमलनैनकरुणामंडा
र॥क्रिसनदासपजपरबलहार॥
साषासुनपतीग्यापुरनबुधबो
लेश्रीभगवान॥देषितमांशदवार
काव्रिचतिपाकेप्रान॥चोपई॥पती
ग्यासमसुनीभगवान॥द्विजकोबो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लेपुरबपुरान॥ हथ हम बूझन केतथ
ली पे कृपा करि यवन नाथ॥ बू
झन को बोले भगवान॥ सुनी ये
दिज पर परम महान॥ रूक्म न वि
च हम मरे प्रान॥ सत बचन मु रू क
रो बषान॥ दिन सुरे न चित व त हौ
र हो क बु ऐसी सुंदर को लेऊ॥ क
वन की टव ऊरा जा घने॥ वि ा स म
ने मरू स य कर गहि ने॥ स प मु प
न की से ना म थो॥ जो च ड्या ये उ
प र र यो॥ चलें बि लं ब ना ला ओ॥
संति उधारन में रोनं॥ बेग कृष्ण सा र थी बुला

प्रभात

ग्रा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२९

ताको यह कहि बचन सुनाए॥ बउी
प्रात रथु दरवर लै औ॥ बोहतु भल
तिनकं देवाउ॥ बाम्हन को बोले भग
वान॥ सैनक रु हैबिप महान॥ सुष
सेज प्रबिप सुवाया॥ हरि परसाद दि
जप्रीत सुष पाया॥ सुष सिंस मध
हानी हैनु॥ उठे प्रात है पंकज नैन॥
दारक लौ ताक रथ बनाय॥ रथ पर बैठे
त्रिभवन राय॥ वउ दिज रथपर ली
पाव उठे॥ करत मा सागर के सवरा
उ चले जल सिंध सगे सुजान॥ उम
सवन करत बरे॥ श्रीव पृथी
सिंभरे॥ श्रीत सुंदर गृतबल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथ हजरत इवा इ कलीम सफिरश्रीन नमरूद सिंदाद कारू नआ
दहामान अलीकामलीकाअं तालमाफीकल बेहि मअलीका
सातसौ हादरसौ हादरसौ इकु मंत्र लिखके वडी लगाइ वालेदाव
आरेदे विठ कालकुदमदारहे वांजुरमाओदरहाचौं कादे बैठा वा ॥
अगो मंत्र अअंतोअलें अअंनोअलेकंपयामासरल बिन्नेबलहमे
एलहला लातमअंतनफतुमिनअकलारिषामावानेबलअरदेफ
नफाजूला तन फेजनाइलाने सुलतान बिरके कोजिन हादरसो
हादरसौ हादरसौ इकीवार पड फूके वांको कादे षै गजपर आवै स
हमदरावान का हका मंत्र है ॥

अथ धरन का देखापुनर्वांजो आगमि गाडी
लीहमै आधारा मिलै धामादेहलैमा इतकै
रि बंधाइ हात्र्य लिफकांअं आदोर विचारि
कु पाराणी बधंवासलिखयंत्र ॥ ओरे नदी प्रवा
हमै धागे करि हैं तंत्र ॥ कपटालेवे मरवाग न पानी थोड नि वोपाम ...
कोका ... लेहा ... लेते लिफ जलेय ... ड ... गुल ... वि ...

ॐ

अथ बरखी का मंत्र ॥ सत्त नाम आदेस ॥ सुमेर पर्वत गगन ... आकु
रु पेके की छुरी सइ नेका मिश्रा नु आठ अ गुली का सुरकंडा कारी
डमामा रगुरु की शक्ति समारी भगत पुरो [illegible] ई शारम हादे
बो चापुर नापुरे ना न ... मश्रा की कुर मे गले ॥
मिठे तेल का कडाहु बरखी बनएं तिन का मे इक ठेकर जाडा करे

अथ घर नि यंत्र हनूमान का ॥ ॐ धार धार अ धार धा
र धार बांधो सप्तवार अणी बांधो तीन वार लो देखें सीर
बीर बांधे हनुमंत बीर पाके न फूटे कारे न पीड रक्षा करे हनुमंत बीर
पंजा हथ्यार यंत्र लिखणा नाले मंत्र करणा पेर लिख उ दन्यां कारिबंहे
दे ॥ ढरु आनी बेकाल ये अग्नि माहि तपता इ ॥ अर्क दुगध बुकवाइ येएक अ
धिक रात काया ॥ पानी तोला जिस्तु पघार के तोला पारा डार ॥ पीसदे उ अ घ
रहे घर संपुट दें गाधा ॥ ॥ २ ॥ पाउ [illegible] पलाट लेआ घ: उ दे धर खाक ॥ पा
रा दिकपी सिधरे मध्ये उ आपारा संपुट पै बसे नाम सवसे र खूले रेजा न
अ [illegible] वेसी न होइ से तवर एक ढवा इ ॥ अनूपान सोदी जियसवेरे जाने सताइ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐश्रीगणेशायेनमः॥ॐ॥सन्मुखंप्रीरघुबीरघी
रघुबंसविभुषन॥सरनकैंगहेसुषरासह
रतअवसागरदुषंन॥सुंदर

ॐवमोनमोनीमसकारगुसांइ॥घटघटव्या
पेजलथलसमाई॥ऐकब्रह्मदजा कनाही
तुमरीकलासकलजगमाही॥नारायणनू
रसीहूनटनागर॥पारब्रह्मपुरनपदागर
अलषपुरषअवगतअबनासी॥तुमारी
मानसकलपदासी॥सुरतेतीसेरषीश्र
ठासी॥नेजोगासुरसीदचौरासी॥तुकमी
बंदारहीसवठाडा॥करजोंकैरनाकरगाडा

पोथीदरबेसी

31

ब्रह्मा रुद्र ईद्र देव्रादाना ॥ देवी मंनाए
सवसुरी के सुर गाना ॥ वडे वडे द्रग पापकर्म
वे ॥ तुमारादीत्रासबकोईपावे ॥ वारं वारकहं
समझाई ॥ अबतोराम सिमर मनमेरे भी
ई ॥ श्रीरामी संकट होय साहाई ॥ श्रीरामी
स सिमरत नाम सदा सुखदाई ॥ श्रीरामी श्र ग
वदे ससु नेरे काना ॥ अबतोराम सिमरम
नमहदवाना ॥ श्रीरामी जीवन रामी धारा
श्रीरामीप्रीतम रामी ॰पारै ॥ श्रीरामी सव
दुष भंजन हारा ॥ श्रीरामीजी वकरे नीस
तारा ॥ श्रीरामी सींदऊ तारे पारा ॥ श्री

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

32

रामी नरकनि भ्रारनत्तारा। श्रीरामी बंधुरा
म भाई। श्रीराम पितारामी माई। श्रीरामी श्री
कुलकुटव प्रवारा। श्रीरामें बिना डुबा सं
सारा॥ श्रीरामी सजन रामी साषी॥ श्री
रामें गतम्रुकके दान रया॥ श्रीरामी मछु
कछ अवतरीया। ब्रंराहरूप अवतरीया॥ श्रीरामी
ब्रह्मा दोय बीस तरीया। जाय वलराजा
लीया॥ श्रीरामी ब्रराहरूप बनाये॥ श्रीरा
रामी भाग्रासुर मारे भेदिनी लै आये॥ श्रीरामी
प्रथमें नरसिंहरूप अवतरिआ॥ श्रीरामी हरना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

घुसनिजदलिया॥श्रीरामीतेजपुजग्रा॥वतरी
या।श्रीरामीब्रह्माहोयविसतरीया॥मंडमाड
विसतरीया॥श्रीरामीअरसपरसहोय
लिना॥श्रीरामीसंसमुजाक्षेकीना॥श्रीरामी
रगकुलवंसवधाये॥श्रीरामीछतरीधरमच
लाये॥श्रीरामीपुरनब्रह्मकहाये॥श्रीरामीको
कुसल्यागोदखलाये॥श्रीरामीरामरूपहो
यलिलाकीनी॥श्रीरामीपटककंसकोदिनी
श्रीरामीवसदेकमरघनैया॥श्रीरामीविरज
नागनीघलया॥श्रीरामीनागनाथकरली
याये॥श्रीरामीकुदरतख्यालबताये॥श्रीरामी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

33

अरोगावरधंधारी॥श्रीरामीडु्वनबिरज
ऊवारी॥श्रीरामीवनमधनवरखे॥श्रीरामी
मधारीवनवजावे॥श्रीरामीप्रथमेवोधोरू
श्रवतरीया॥श्रीरामीजायगयापिंडुमरी
या॥श्रीरामीजनीधर्मचलाये॥श्रीरामीव
रतनेमनिरवारे॥श्रीरामीवज्रषंककरधो
रे॥श्रीरामीमुंकेमारऊतारे॥श्रीरामीपर
सरूपऊतारिया॥श्रीरामीसवकापातकरू
रिया॥श्रीरामीदितांकेऊसनकादिकग्रव
तरिया॥श्रीरामीजगकेपरमऊनरिफर

ड

मै ५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

या

पमुपकाचारिया॥श्रीरामीवद्रीपतगतअव
तारा॥श्रीरामीसनकसनंदनसंतकुंरा॥श्री
रामीरूपधरयोचौविसा॥श्रींरामीजानरा
यजगदिसा॥श्रीरामीधर्मकुलकेपाड़े॥
श्रीरामीमाडफेरकरमाडे॥श्रीरामीसा
यरसुरामथाये॥श्रीरामीचौदारत्नकढा
ये॥श्रीरामीरूपमोहनीकीना॥श्रीरामदंत
रसातलकीना॥श्रीरामीमीरगलताऊर
धारे॥श्रीरामीकोसपकरेजोहारे॥श्रीरामी
सतजुगधर्मचलाये॥श्रीरामीकलजुगराज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करायाये॥श्रीरामीगोविंदागरुडगामी॥
श्रीरामीदंतासोतरखामी॥श्रीरामीनिरातं
मनरंकारा॥श्रीरामधरेंमकरूतऋतारा
श्रीरामीआदपुरषअवतारा॥श्रीरामीदस
रथसुतराजकोरा॥श्रीरामीतिरकमठसैने
या॥श्रीरामीकागमुंसुडमरमेया॥श्रीरामी
वचनपिताकेपाले॥श्रीरामीषिरनिरनिरवा
रे॥श्रीरामीरूपधरयोहकारी॥श्रीरामीजाय
ताडुकामारी॥श्रीरामीसपततताडसरबे
धे॥श्रीरामीअसुरमारसबधेदे॥श्रीरामी
सायरसवरजोरे॥श्रीरामीधनकतडकदेने

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामी

रे ॥ श्रीरामी मनसखाकी राखी ॥ श्रीजगकरेरख
वाली ॥ जलपाषाननतराये ॥ श्रीरामीसुतेतिस
कोडाये ॥ श्रीरामी मीरभक्तकीआये ॥ असुरम
रसबगरदमलाये ॥ श्रीरामीरीछकीसदल
जोरया ॥ श्रीरामीजागडलंकातोडा ॥ श्रीरामी
वालमारदूरकीना ॥ श्रीरामराजसुग्रीवको
दिना ॥ श्रीरामीसिंधपलकरेपारे ॥ श्रीरामीसि
रावलकोकारे ॥ श्रीरामीसागरसेतबंधाये श्रीरामी
कंचनमहलतछाताये ॥ श्रीरामीजनआपनाकर
लिना ॥ श्रीरामीराजभभीषनदिना ॥ श्रीरामी
संकरपुजपुजाये ॥ श्रीरामीकोटकलंमी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रीरामीसीरक्षतरघरतीना

टाये। श्रीरामीमेरपुरिकरथापी॥ श्रीरामीमें
आदजोगादथापी॥ श्रीरामीजनअपनाकरथी
नाराज॥ श्रीरामीराजयायुध्याकीना॥ श्रीरामी
कीसाचिरध्यानी॥ श्रीरामीकोध्यावेब्रह्म
ज्ञानी॥ श्रीरामीसवराजनकेराजा॥
श्रीरामीकीबांदिमरजादा॥ श्रीरामी
केरंगमहलमेरोपावाजे॥ श्रीरामीके
बाजेबहुवाजे॥ श्रीरामीकीत्र्यबवसहुक
राई॥ श्रीरामीकीतिनलोकमदोहाई॥
श्रीरामीकाहदभौनमैवासा॥ श्रीराम

35

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गंध सकल प्रकासा॥श्रीरामीनी
व रमैंल केवल दाई॥श्रीरामी संतन के
सुषदाई॥श्रीरामी गरुड कोड कर धाये
श्रीरामी गज ग्राह छोडाये॥श्रीरामी अ
हमनेक ऊधारी॥श्रीरामी कुटमकी र
कातारी॥श्रीरामी चरन यहल्यातारी
श्रीरामी कुबजा अदक ऊवारी॥श्रीरा
मी गनका पायन कीनी॥श्रीरामी संग
जानकी लीनी॥श्रीरामी हनुमान हत
करा॥श्रीरामी जामत राम न मारा॥श्री

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामीकेवाजंतिराजै॥श्रीरामीग्रवदपुरी
भैगाजै॥श्रीरामीवालद्रासरेदौडे॥श्री
रामीदांतदयंतकेतोडे॥श्रीरामीजनकीर
क्षाकीनी॥श्रीरामीसाकसरकोदिनी॥श्रीरा
मकोतांपिडपछाडे॥श्रीरामीजायदुर
सनमारे॥श्रीरामीरथपारथकोहांके
श्रीरामीजंदजाहूरमैराष्या॥श्रीराम
बालमहीका तोलव घाया॥श्रीरामी
संषपचानबजाया॥श्रीरामीचिचकर्मीका
या॥श्रीरामीबेरमीलनीकापाया॥श्री

36

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative.

रामीषमांमात्तकतारे॥श्रीरामश्रोदरश्रसा
रकेपाडे।श्रीरामीधुंअटलकरथापे।श्री
रामीराजअवचलकरथापे॥श्रीरामीरी
षनिमावनत्तारे॥श्रीरामीजनअवरकेउ
वारे॥श्रीरामीमेरतंदलकीनी।श्रीरा
मीसायरसथामाकीनी॥श्रीरामीअरज
नजमलापिसतारा॥श्रीरामीसरनआ
वेसोईवसतारा॥श्रीरामीकेवाजंतिराजै॥
श्रीरामीसंतमातबराजे॥श्रीरामीदासना
मदेवकेआंटे॥श्रीरामीदपियाकैपरा
कपाए॥श्रीरामीमतकजोऊजीगई॥श्री

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

37

रामीजनप्रतिकत्ताई॥श्रीरामीदसतलोचन
केआए॥श्रीरामीजनकीपैजनिवाये॥श्रीरा
मीदासकमीरकेआए॥श्रीरामीवैसढालकि
आए॥श्रीरामीदासरवदासकेआए॥श्रीरा
मीदनामककेपाटखुलाए॥श्रीरामीरंका
बंकातारी॥श्रीरामीजंयदेक्कमारी॥श्रीरा
मीजनकपनपिपाकीराषी॥श्रीरामीम
यासंकासाषी॥श्रीरामीजहरमीरांका
पिया॥श्रीरामीकोसिवसंकरधावे॥श्रीरामी
कोवेदासवगावे॥श्रीरामीकोसाधुसव
जाने॥श्रीरामीकोभगवतपहचाने॥श्रीरा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मीकी।गिताठहूराई।।श्रीरामीलछमणते
नोमाई।।श्रीरामीअगम आगमअसांपाडा
श्रीराम चत्तीन कहातलगबरना।।श्रीरामी
कोलेरमायरणकानिरन्ना।।रामायणमध्य
माषनकाठे।।श्रीरामजसजुगाजुगवाघो
श्रीरामीतप सिताकेसागे।।श्रीरामीकोजो
गिस्घर जागे।।श्रीरामीकरन्नाकरमतकासो
श्रीरामीकोमनफिरेऊदासी।।श्रीरामीचित
बिवेकअनतार।।श्रीरामकहुंमीटजायदु
खद्वंदा।।श्रीरामचलितपठेसुवारा।।जमेमरे
निलेहऊतारा।।श्रीरामीचलितश्रबनसुनेता

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative